डोवर की डाक

डोवर की डाक

सन् १७७५ के नवम्बर महीने का अंत था। शुक्रवार की रात को डोवर की सड़क पर डाक-गाड़ी चली जा रही थी। वह शूटर की पहाड़ी के चढ़ाव पर जा पहुंची थी। चाल धीमी हो गई थी। डोवर की सड़क सामने दूर तक फैली थी। चढाव के कारण यात्री उतर पड़े थे। वे भी गाड़ी के साथ साथ चल रहे थे। उनके मार्ग में कभी ऊबड़-खाबड़ चट्टान आ जाती थी, कभी दलदल। तो भी लोग चल रहे थे खुशी से नहीं मजबूरी से। इतने पर भी रास्ते की कठिनाई कम न हुई। गाड़ी और डाक का ही इतना भार था तिस पर चढ़ाई और मार्ग की दुर्गमता। घोड़े रुक रुक जाते थे। यह तो था ही, इसके अलावा घना कुहरा छा रहा था। हवा के झोंकों से कुहरे के समुद्र में लहरें लहराती हुई जान पड़ती थीं। सर्दी का क्या पूछो। ऐसा अन्धकार घुमड़ रहा था कि गाड़ी के लैंपों का प्रकाश कुछ हाथ से अधिक नहीं जा पाता था। आसपास की कोई चीज नहीं दिखती थी। थके हुए घोड़े हिचक हिचक कर चले जा रहे थे।

डाक-गाड़ी के साथ साथ जो तीन यात्री चल रहे थे। वे कान और मुंह तक ढके हुए थे। पैरों में बूट कसे थे। वे इस तरह सरदी से अपने को बचाने की कोशिश में थे कि यदि एक से दूसरे की हुलिया पूछी जाती तो वह कुछ भी न बता सकता। उन दिनों कुछ ऐसा रिवाज भी था कि यात्री थोड़ी देर ही में हिलमिल नहीं जाते थे। कोई किसी को अपना परिचय सहज में नहीं दे देता था। लोग परस्पर सशंकित रहते थे। यही ख्याल होता था कि न जाने कौन हम में से डाकू या डाकुओं का भेदिया हो। यही क्यों, गार्ड को यात्रियों पर भरोसा नहीं होता था। यात्री गार्ड को संदेह की दृष्टि से देखते थे। न मालूम कौन किस वक्त किस रूप में प्रकट हो जाय? वह जमाना ही ऐसा था। कोई भी मार्ग, कोई भी रास्ता, कोई भी सड़क लूट-मार से सुरक्षित न थी।

इस आधीरात के समय, इस पहाड़ी रास्ते में, इस कुहरे के घने अन्धकार में, डोवर डाक के यात्री और गार्ड भीतर ही भीतर भय से कांप रहे थे। एक दूसरे की ओर से शंकाशील था। इसी दशा में डाक-गाड़ी चरर-मरर चली जा रही थी।

कोचवान की आवाज ही बीच-बीच में निस्तब्धता भंग करती थी। वह कह रहा था—हाँ बहादुरो, एक जोर और।

बस मैदान मार लिया।–अब पहुँचे पहाड़ी पर।

घोड़े जोर लगा रहे थे। गाड़ी के पहिये लुढ़कते चले जा रहे थे। यात्री भी साथ साथ चल रहे थे। घोड़ों ने आखिरी जोर लगाया और गाड़ी पहाड़ी की चोटी पर थी।

गार्ड ने दरवाजा खोल दिया कि सब चढ़ जांय। एक मुसाफिर ने भीतर बढ़ने को पैर उठाया ही था कि कोचवान की आवाज सुन पड़ी—अब यह क्या बला है?

गार्ड ने सतर्क होकर पूछा—टाम, क्या है?

टाम–घोड़े की टापों जैसी आवाज है?

दोनों ने कान लगा कर सुना। गार्ड ने कहा—हां टाम, सरपट चाल से आ रहा है। निस्संदेह।

टाम–यही तो।

गार्ड ने मुसाफिरों को संबोधन कर कहा–महाशयो, सावधान। इतना कहकर वह डटकर अपनी जगह बैठ गया। अपनी बन्दूक अपने हाथ में लेली।

तीनों मुसाफिर हक्के बक्के हो कभी गार्ड और कभी कोचवान के मुंह की ओर ताकने लगे। गाड़ी रुक गई थी। उस सुनसान रात में अब चारों ओर निस्तब्धता का ही राज्य था। केवल पहाड़ी के नीचे चढ़ाव की ओर से घोड़े की टापों

की आवाज स्पष्ट सुन पड़ती थी।

गार्ड गाड़ी पर खड़ा होकर हाथ में बन्दूक उठाए हुए चिल्लाया—खबरदार, आगे बढ़े और मैंने गोली दागी।

घोड़े की लगाम खिंची। एक झटके के साथ घोड़ा रुकता जान पड़ा। साथ ही एक आवाज सुनाई दी—क्या यह डोवर की डाक है ?

गार्ड—तुम्हें इससे मतलब ?

"मुझे एक मुसाफिर से काम है।"

"किस मुसाफिर से ?"

"महाशय जार्विस लॉरी से"

तीन में से एक मुसाफिर ने कहा—मैं हूँ जार्विस लॉरी।

गार्ड, कोचवान व अन्य दो मुसाफिरो ने उसकी ओर देखा। तीनों को इस मुसाफिर की ओर से ही संदेह हो चला। गार्ड ने गरज कर कहा—लॉरी महाशय, आप ही आगन्तुक से बात करिये। ऐसा न हो कि मेरी बंदूक से गोली छूट जाय। फिर कोई उपाय न हो सकेगा।

जार्विस लॉरी ने आगे कदम बढ़ाकर ऊंचे गले से कहा—कौन है जी ? बोलो, क्या जेरी है ?

"तो क्या बात है?"

"आपके लिए एक संदेश, महाशय।"

लॉरी महाशय ने गार्ड से कहा—मैं इस आदमी को जानता हूँ। इससे हम लोगों को किसी तरह का खतरा नहीं है।

गार्ड—मुझे तो कुछ पता नहीं। आप जानें।

लॉरी —मैं जो कहता हूँ।

गार्ड—अच्छा आगन्तुक, तो तुम आगे आ सकते हो, पर देखो अपने हथियारों को हाथ न लगाना। मेरा निशाना सधा हुआ है।

इसके बाद घोड़ा आगे बढ़ा। कुहरे को चीरकर वह गाड़ी के करीब आया। सवार ने एक लिफाफा लॉरी महाशय के हाथ में दे दिया।

लॉरी महाशय ने लिफाफा लेकर गार्ड को लक्ष्य कर कहा—आप डरें नहीं। मैं टेलसन्स बैंक का आदमी हूँ। लन्दन का टेलसन्स बैंक आप जानते हैं न? बैंक के काम से मैं पेरिस जा रहा हूं।—अच्छा, तो जरा इसे पढ़ लूँ?

गाड़ी के लैम्प की रोशनी मे उन्होने जोर जोर से पढ़ा—कुमारी ...... को डोवर मे प्रतीक्षा करियेगा।

लारी ने 'पुनर्जीवन प्राप्ति' यह संकेत-पूर्ण मौखिक उत्तर

देकर सवार को वापिस कर दिया और डाक-गाड़ी आगे बढ़ी।

रायल होटल

सबेरे डाक जब डोवर पहुँची तो रायल होटल के आदमी ने बड़े तकल्लुफ से दरवाजा खोला। गाड़ी में अब केवल एक ही मुसाफिर रह गया था। उसे बड़े अदब से उसने सलाम किया और सकुशल यात्रा पूरी करने के लिए बधाई दी। यात्री ने भिड़ते ही पूछा—क्या कल फ्रांस के लिए जहाज छूटेगा ? उत्तर मिला—हां, अगर मौसम ठीक रहा और हवा अनुकूल हुई तो।

दो चार और बातें करने के बाद उसने पूछा—जनाब, आपके लिये बिस्तर ?

"अभी नहीं। मैं रात से पहले आराम नहीं करूंगा, पर एक कमरा तो चाहिए ही और नाई भी।"

"बहुत अच्छा जनाब, और कलेवा ?"

"वह भी।"

आगन्तुक जिससे होटल के आदमी ने इस तरह अदब से

वाले की लगभग साठ वर्ष का वयस्क था। पोशाक-पहनाव में दुरुस्त। शरीर से भरा-पूरा, प्रभावशाली। थोड़ी देर में वह कलेवे के लिए आ उपस्थित हुआ। उस समय वहां और कोई व्यक्ति न था। उसकी मेज आग के समीप लगाई गई थी। आग के प्रकाश में उसकी आकृति और चमक उठी थी। वह अपनी टेबिल के सहारे इस तरह बैठा था जैसे कि उसका फोटो लिया जानेवाला हो।

वह सब तरह से बना-ठना था पर सजावट में कोई कृत्रिमता न थी। उसके गाल सहज स्वास्थ्य से रंगे थे, फिर भी उसके माथे पर चिन्ता की रेखा स्पष्ट थी।

आदमी जब खाना लेकर आया तो उसने सिर उठाकर कहा—देखो जी, एक कुमारी के लिए भी एक कमरा रखना। वह यहाँ किसी समय आ सकती है। वह आकर जार्विस लॉरी को पूछेगी। उसे यहाँ ले आना।

"बहुत अच्छा।"

"शायद वह इतना ही पूछे कि टेल्सन्स बैंक के महाशय; तब भी समझे।"

"हाँ जी लन्दन का टेलसन्स बैंक। मुझे आपके बैंक के आदमियों से अक्सर वास्ता पड़ता है। वे लन्दन से

"इस कृपा के लिए मैं कृतज्ञ हूं महाशय। मैं नही जानती कि मैं आपके उपकार का बदला किस तरह चुका सकूंगी।"

"अरे, नही नही। ऐसी कोई बात नहीं है।"

"बैंक में मुझे कहा गया था कि जो कुछ काम है वह भी आप ही बतायेंगे और यह कि मैं कुछ अनहोनी सुनने के लिए भी तैयार रहूं। सो सच जानिये, मैं तैयार हूं। मेरी उत्सुकता बढ़ रही है।"

"यह स्वाभाविक है।"

"तो मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि आप मुझे सुना दीजिये।"

"यही तो सोच रहा हूँ कि कैसे शुरू करूं ?"

सचमुच ही लॉरी महाशय कुछ निश्चय नही कर पा रहे थे। लगता था कि वे सोचविचार में पड़े हैं।

"क्या आप मेरे लिए बिल्कुल ही अपरिचित हैं ?" अकस्मात् कुमारी मेनेट पूछ बैठीं।

"तो क्या नही हूं ?" मुस्कराते हुए वृद्ध लॉरी महाशय ने पूछा। इस पर कुमारी मेनेट मौन हो गईं और लगा कि वे विचारो में खो गई हैं। इसी दशा मे वे उस कुर्सी पर बैठ गईं जिसे पकड़े अब तक खड़ी थीं। लारी महाशय इस परिवर्तन

को देख रहे थे। वे बोले—देखिये कुमारी मेनेट, मैं एक कामकाजी आदमी हूँ। मेरे ऊपर जो काम करने का फर्ज है उसे मैं अदा करूंगा। इसलिये मैं जो कुछ कहूँ उसे आप यही समझें कि एक मशीन बोल रही है और आप सुन रही हैं। अच्छा तो मैं अपने एक ग्राहक की कहानी कह रहा हूं।"

"कहानी !"

कुमारी मेनेट ने कहानी शब्द को दोहराकर याद दिलाना चाहा कि कहीं वे भूल से वह शब्द तो नहीं कह गये है। लॉरी महाशय ने जानबूझकर अनसुनी कर दी और अपना कहना जारी रक्खा—हां, बैंक में जिन लोगों का कामकाज होता है उन्हें हम ग्राहक कहते हैं। मैं अपने जिस ग्राहक की कहानी कह रहा हूँ वे एक फ्रान्सीसी सज्जन थे। वे पढ़े लिखे थे। औषधि-विज्ञान के पंडित, एक डाक्टर।

कुमारी मेनेट बीच ही में बोल पड़ीं—बोवाय के तो नहीं ?

हां बोवाय के ही। आपके पिता महाशय मेनेट की ही भांति वे भी बोवाय के ही रहनेवाले थे। उन्हीं की भांति वे बहुत प्रसिद्ध आदमी थे। पेरिस तक में उनकी ख्याति थी। उस बात को बीस साल हो गये हैं। उस समय मैं अपने पेरिस के दफ्तर में ही काम करता था। मेरा उनसे परिचय था। यह

परिचय घरू नहीं था। बैंक के कामकाज के सिलसिले में ही था।

"कितने दिन हुए होंगे ?"

"मैंने बताया न कि बीस बरस पहले की बात मैं कह रहा हूँ। उन्होंने एक अंग्रेज महिला से विवाह किया था। मैं उनका एक ट्रस्टी था। उनका सारा कामकाज हमारे टेल्सन्स बैंक में होता था और भी अनेक फ्रांसीसी नागरिकों का सारा कामकाज हमारे ही बैंक में होता है। उन सबका ट्रस्टी किसी न किसी रूप में हमें होना पड़ता है। इसमें कोई घरेलू सम्बन्ध नहीं होता। केवल कामकाजू सम्बन्ध होता है।"

"लेकिन क्या यह मेरे पिता की कहानी नहीं है ?" चिंतित सी कुमारी मेनेट ने पूछा।

"हां।"

"और मेरे पिता के दो साल बाद जब मेरी मां नहीं रही तो क्या आप ही मुझे इंगलैंड नहीं लाये थे ? मुझे पूरा विश्वास है कि आप ही लाये थे।"

"हां, कुमारी मेनेट। तुम्हारा अनुमान सही है। उसी समय से तुम टेल्सन्स बैंक की अभिभावकता में हो।" लॉरी महाशय ने कहा।

कुमारी मेनेट कृतज्ञतापूर्वक इस वृद्ध सज्जन की ओर देखती

रहीं। लॉरी महाशय पुनः कहने लगे—"कुमारीजी, तुम्हारे दुखिया पिता की यही कहानी है। मान लो वे उस समय नहीं मरे, मान लो वे चुपचाप और अकस्मात ही अन्तर्धान हो गये, मान लो उन्हें उड़ा ले जाया गया, एक भयानक जगह पर जिसके स्मरण मात्र से रोंगटे खड़े हो जाते हैं। वह ऐसी जगह हो जहां किसी की गति न हो। मान लो अपने देशवासियों में ही कोई उनका शत्रु हो जिसने उनके विरुद्ध कार्य किया हो। और मान लो वह इतना दबंग और शक्तिशाली हो कि उसके सम्बन्ध में साहसी से साहसी आदमी मुंह खोलने को तैयार न हो। समुद्र के उस पार जहां एकांत रूप से उसकी ही धाक का धौंसा बजता हो। वह एक खाली फार्म भरवाकर किसी को कितने ही समय के लिये कारागृह की अज्ञात तारीकी में जीवन बिताने के लिये भेज सकता हो। और मान लो अभागे अपहृत की स्त्री ने सम्राट्, सम्राज्ञी, दरबार और धर्माध्यक्ष किसी का भी द्वार खट-खटाये बिना न छोड़ा हो। सबसे प्रार्थना की हो कि उसके पति का कुछ समाचार मिले परन्तु बेकार, बिल्कुल बेकार।—तो तुम्हारे पिता की कहानी इस अभागे आदमी की कहानी होती।"

इतना कह कर लॉरी महाशय चुप हो गये और कुमारी मेनेट के मुंह की ओर ताकने लगे। कुमारी मेनेट अधीर हो उठीं। वे चिल्लाईं, "मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि कहते जायें। चुप न हों। मैं सारी बातें सुनना चाहती हूं।"

"कहता हूं, कहता हूँ पर तुम सह तो सकोगी ?"

"हां, हां, सह सकूंगी। मैं सब कुछ सह सकूंगी। इस संशय के अलावा जिसमें आप मुझे छोड़ देते हैं।"

"तो सुनो। उस अभागे डाक्टर की स्त्री बड़ी साहसवाली थी। उसने अपना प्रयत्न नहीं छोड़ा। इस कार्य में उसे कितना कष्ट उठाना पड़ा, कितनी परेशानी हुई इसकी छाया तक उसने अपनी छोटी बच्ची पर नहीं पड़ने दी। उसे इस तरह पाला कि जैसे उसका पिता रहा ही न हो! वह मरते दम तक तुम्हारे पिता की तलाश में लगी रही। उसने शक्ति भर कुछ उठा नहीं रक्खा। आखिर निराश हताश होकर जब वह मरी तो तुम सिर्फ दो साल की थीं। आज तुम सुन्दर, स्वस्थ और युवा हो। तुम्हारे मन पर कभी किसी तरह के संशय की घटा नहीं छा पाई। तुम्हारी पूज्य माता की सावधानी ने तुम्हें नहीं मालूम होने दिया कि तुम्हारे अभागे पिता बन्दीगृह में शीघ्र कष्टों के शिकार हो गये या

बहुत बरसों तक उसकी ज्वाला से दग्ध होते रहे।

"यह तो तुम्हे मालूम ही होगा कि तुम्हारे मां बाप के पास कोई विशेष जायदाद नहीं थी। थोड़ी बहुत जो भी थी वह तुम्हारी मां को, फिर बाद मे तुम्हें मिली। इस सम्बन्ध में अब कुछ नई बात नहीं है। न तो कोई रुपया पैसा मिलना है, न ज़ायदाद। लेकिन, लेकिन एक बड़ी चीज़ यह है कि तुम्हारे पिता का पता लग गया है। वे जीवित है। पर बहुत बदले हुए, यह स्वाभाविक भी है। इतनी लम्बी जिंदगी कारागार की एकांत कोठरी में बिताकर और अमानुषिक कष्टों को लगातार सहकर वे पहले जैसे कैसे रह सकते हैं? एक विक्षिप्त के रूप में उन्हें पाया गया हैं। वे इस समय पेरिस में अपने एक पुराने सेवक के मकान में हैं। हम दोनों को वहीं चलना है। मुझे इसलिए कि मैं यदि हो सके तो उनकी शनाख्त कर सकूं। तुम्हें इसलिए कि उनकी विक्षिप्तता को दूर करके नया जीवन दे सको, समझीं?"

इस संवाद ने कुमारी मेनेट की अजीब दशा कर दी। वह सिर से पैर तक कांप उठी। उसके कुछ कहने से पहले ही लॉरी महाशय फिर बोल उठे, "एक बात और है, वह यह कि तुम्हारे पिता का पता तो लग गया है पर अब उनका

वह नाम नहीं है। एक दूसरे ही नाम से उन्हें जाना जाता है। पहले वाला नाम तो कभी का उनसे छीन लिया गया है या भुला दिया गया है। अब इस बात की चर्चा करना कि यह सब किस तरह हुआ है व्यर्थ है। व्यर्थ ही नही, यह खतरनाक भी है। हम फ्रांस चल रहे हैं। वहां से जब तक हम बाहर न हो जायं हमें अपना मुंह सीकर रखना होगा और जैसे भी हो तुम्हारे पिता को भी फ्रांस से बाहर ले आना होगा। तब तक हम लोग पूरी तरह सावधान और मौन रहेंगे। यद्यपि हमारे बैंक की वहां प्रतिष्ठा है और मैं फ्रांस का नागरिक न होने से सुरक्षित भी हूँ तो भी मैं अपने साथ इस सम्बन्धी किसी तरह का कोई कागज-पत्र नहीं ले चल रहा हूँ। यह बिल्कुल गुप्त काम है।—लेकिन यह क्या, तुम तो सुन ही नहीं रही हो! कुमारी मेनेट! कुमारी मेनेट!" सचमुच ही कुमारी मेनेट कुछ सुन नहीं रही थी। वह विचारों में डूबकर अचेत हो चुकी थी।

अरे दौड़ो, दौड़ो—लॉरी महाशय चिल्लाये।

उनकी आवाज के साथ ही एक दबंग दासी झपट कर भीतर आई। होटल के नौकर चाकर भी दौड़ आये थे। उन्हें डांटते हुए वह बोली—यहां खड़े क्या ताक रहे हो।

जाओ थोड़ा गुलाबजल भागकर ले आओ। जाओ, दौड़ो।

इसके बाद उसने कुमारी मेनेट को धीरे से उठाकर सोफा पर लिटा दिया और उसकी सुश्रूषा करने लगी। उसने लॉरी महाशय को भी फटकार लगाई, बोली—तुम कैसे आदमी हो जी ? क्या तुम उसे जो कुछ कहना था वह बिना इस प्रकार डराये हुए नही कह सकते थे ? तुमने तो उसे मार ही लिया होता, मेरी प्यारी बच्ची। इस पर बनते हो बड़े साहूकार।

लॉरी महाशय के मुंह से उत्तर नही निकला। वे टुकुर टुकुर शून्य में ताकते रह गये।

पेरिस की एक कलवरिया

श्री लॉरी और कुमारी मेनेट पेरिस पहुँच गये।

पेरिस के संत अन्टोने के पास एक संकरी गली की मोड़ पर एक कलवरिया थी। उसका मालिक डिफार्जे नामक एक प्रौढ़ और तगड़ा आदमी था। उसके चेहरे से कठोरता टपकती थी। वह गर्म मिजाज का आदमी मालूम पड़ता था। उसकी

स्त्री भी उसी की अवस्था की थी और दृढ़ निश्चय की मूर्ति सी प्रतीत होती थी । अपनी दूकान की गद्दी पर बैठी हुई वह मफलर बुन रही थी । सर्दी से बचने के लिए उसने ऊनी शाल अपने चारों ओर लपेट रक्खा था ।

अभी अभी उनके यहां आई लाल शराब में से एक पीपा गिर कर टूट गया था और बहती हुई शराब को पीने के लिए एक अच्छी खासी भीड़ दौड़ पड़ी थी । उसे देखने के लिए डिफार्जे दुकान से नीचे उतर आया था । पीली वास्कट और हरा पैजामा पहने हुए वह लफंगो की भीड़ को देख रहा था कि वे किस तरह धक्का-मुक्की करते और शराब को चुल्लुओ में भर भर कर अपने गले को सींचते हैं । थोड़ी देर में पीपा खाली हो गया और भीड़ हट गई तो वह भीतर गया । श्रीमती डिफार्जे ने खांसकर संकेत किया और वह यह देखने के लिए घूमा कि कौन कौन ग्राहक आये हैं । उसी समय कलारी में मिस मेनेट को लिए हुए वृद्ध लॉरी महाशय ने प्रवेश किया और जाकर चुपचाप एक कोने मे बैठ गये ।

डिफार्जे ने उन्हें देख लिया परन्तु न देखने जैसा आचरण करते हुए वह दूसरे ग्राहकों से निपटने लगा । थोड़ी देर गपशप करने के बाद उनसे खाली हुआ तो वृद्ध लॉरी महाशय

ने उठकर कहा—मैं आपसे एक मिनट बात करना चाहता हूँ।

डिफार्जे ने विनम्रता से कहा—जरूर महाशय। —और वह उठकर उनके साथ हो लिया।

एक ओर जाकर उन्होंने थोड़ी देर बात की। बहुत शीघ्र उनकी गोष्ठी खत्म होगई। डिफार्जे यह कहकर कि चलिये चलता हूं उठकर बाहर निकल आया। वृद्ध लॉरी महाशय और कुमारी मेनेट भी उसके पीछे चल पड़े। डिफार्जे की पत्नी इस ओर ध्यान दिये विना अपनी बुनाई करती रही।

कलारी से निकलकर श्री लॉरी और कुमारी मेनेट शीघ्र डिफार्जे से जा मिले। वह उन्हे लेकर एक कूचे में घुसा। कुछ मकान पार करके एक जीने के पास आने पर वह रुक गया और बोला—देखिये, बहुत ऊंची जगह है। सावधानी से और चुपचाप ही चलना होगा।

उसके कहने में ऐसा लहजा था जैसे वह एक महान रहस्य की बात कह रहा हो। श्री लॉरी ने फुसफुसाहट के स्वर में पूछा—क्या बिल्कुल अकेले हैं?

अकेले! और नहीं तो कौन उनके साथ होगा?—उसी तरह धीमी आवाज में डिफार्जे ने उत्तर दिया।

"क्या हमेशा ही अकेले रहते हैं?"

"हां "

"अपनी इच्छा से ?"

"ऐसी ही आदत पड़ गई है। मैंने तो ऐसा ही पाया था। उससे अब तक थोड़ा भी अन्तर नही आया है।"

"तब तो बहुत बदल गये हैं।"

"बदल गये ! इसे बदलना कहते हैं ? नहीं, वह तो एक नया ही प्राणी है। आप कल्पना नही कर सकते, महाशय !"

इसके बाद कुछ और अस्पष्ट शब्द उसके मुंह से निकले जिनसे मालूम हुआ कि मामला बहुत गंभीर है। श्री लॉरी और कुमारी मेनेट दीवार का सहारा ले लेकर डिफार्जे के साथ जीने पर चढते जा रहे थे। आखिर जीना खत्म हुआ। वे एक खुली छत पर आये। अभी एक जीना और चढ़ना था। उस पर चढते चढ़ते डिफार्जे ने अपने कोट की जेब में हाथ डालकर एक चाबी निकाल ली।

लॉरी ने कुछ अचम्भा सा करते हुए पूछा—तो क्या ताले में बंद है ?

"हां जी।" डिफार्जे ने एक संतुलित उत्तर दिया।

"तुम इसकी जरूरत समझते हो ? इतना एकाकी रखना आवश्यक है ?"

"हां मेरे ख्याल में। और अब आप भी देख लेगें।" डिफार्ज ने कुछ बिदकते हुए कहा।

"ऐसा क्यों है ?"

"इसलिए कि एक लंबी अवधि तक उन्हें ताले में बंद रक्खा गया है। अगर आज उनका दरवाजा खुला रख दिया जाय तो वे भयाकुल हो जायंगे। उस समय न जाने क्या कर डालेंगे। शायद गुस्से में अपने आपको ही चीर-फाड़ डालें और आत्महत्या करलें।"

"क्या यह संभव है ?"

"संभव क्या नहीं है। इस दुनिया में सब कुछ संभव है। एक आदमी की जिन्दगी को बरबाद कर देना, एक परिवार को उजाड़ देना, एक सुख-शांतिमय गृहस्थी में आग लगा देना इस आकाश के नीचे सब कुछ चलता है। भला क्या नही चलता ? खैर चले चलिये और देख लीजिये।"

यह सब बातें बहुत हो धीरे धीरे डिफार्ज ने कहीं। कुमारी मेनेट के कान तक उस फुसफुसाहट को न सुन सके। फिर भी वह इतनी भयभीत और सशंक हो उठी कि उसकी कोमल देह-लता कांपने लगी।

श्री लॉरी ने यह देख कर धीरज बंधाते हुए कहा—यह

क्या ? तुम अगर इस तरह साहस खो दोगी तो इतना बड़ा काम कैसे बनेगा ? तुम्ही को तो सब कुछ करना है। अपने कर्तव्य का ख्याल करो और हमारे साथ आओ।

वे बहुत धीरे धीरे ऊपर गये। दरवाजे मे घुसते ही तीन आदमी उन्हें मिले जिससे ये तीनो ही अकचका गये। डिफार्जे ने अपने को संभाल कर कहा—अरे, मैं तो तुम्हें भूल ही गया था। अच्छा जाओ। हम लोगों को यहां थोड़ा काम है।

जब वे चले गये तो डिफार्जे ने लॉरी महाशय को संबोधन करके बताया—अभी अभी ये लोग नीचे कलारी मे थे। आपने देखा था न ?

लॉरी ने जरा असंतुष्ट होकर कहा—तो क्या आपने महाशय मेनेट की नुमायश बना रक्खी है।

"नहीं जी। आप लोगों जैसे कुछ खास आदमी ही आने पाते है।"

"पर यह ठीक है क्या ?"

"मेरे ख्याल मे ठीक ही है।"

"पर वे कौन लोग होते है ? उनका चुनाव तुम कैसे करते हो ?"

"मैं कर लेता हूं। मैं जानता हूं। मैं सच्चे आदमियों

को पहचानता हूँ। ऐसे लोगों पर असर पड़ता है। खैर, आप क्या जानें। आप अंग्रेज रह गये न! अच्छा, अब आप यहां ठहरिये तो सही।"

उन्हें ठहरा कर वह कमरे की दीवार के पास गया। एक छेद मे झांककर देखा। फिर दीवार में दो तीन खटके किये। कमरे के ताले में चाबी डालकर दो चार बार घुमाई। इसलिए कि थोड़ी आवाज हो जाय। इसके बाद उसने ताला खोला। कुंडी खोली और दरवाजे को धक्का देकर अन्दर झांका और कुछ कहा—एक क्षीण आवाज मे किसी का प्रत्युत्तर मिला।

डिफार्जे ने अपने साथियों को इशारा किया और वे भीतर घुसे। श्री लॉरी ने द्वार में घुसते समय अपनी बांह कुमारी मेनेट की कमर मे डालकर उसे सहारा दे रक्खा था। क्योंकि उन्हे लग रहा था कि वह अशक्त हुई जा रही है।

ऐसा करते हुए भी वे बराबर मुंह से उसे धैर्य बंधा रहे थे। भीतर पहुँच कर डिफार्जे ने द्वार भिड़ा दिया। इसके बाद वह कमरे में चल कर खिड़की के पास जा खड़ा हुआ। उसके सामने दूसरी ओर एक बुड्ढा आदमी बेंच पर बैठा जूते सिल रहा था। वह अपने काम में इस तरह

नमूना हमारे पास था।

"और इसके बनानेवाले का नाम ?"

मेरा नाम पूछते है आप।"

"हां।"

"एक सौ पांच उत्तरी बुर्जी।"

"बस।"

" हां जी, एक सौ पांच उत्तरी बुर्जी।"

इसके बाद वह फिर काम में लग गया। इस पर लॉरी महाशय ने जोर से कहा—जूते बनाना तो तुम्हारा जन्म का पेशा नही है ?

"नहीं। जूते बनाना मेरा पेशा नहीं था। यह तो मैंने यहीं सीखा। अपने आप ही सीखा। बड़ी मुश्किल से मैं यह सीख पाया। तब से मैं बराबर जूते बनाता हूं।"

उसने जूता लेने के लिए लॉरी महाशय की ओर हाथ बढ़ाया। उन्होंने उसकी आंखो में ताकते हुए पूछा—महाशय मेनेट, क्या आप मुझे भूल गये ?

जूता उसके हाथ से छूट पड़ा और वह एकटक लॉरी की ओर ताकने लगा।

डिफार्ज की ओर इशारा करके उन्होंने पूछा—महाशय

मेनेट, इस आदमी के विषय में आपको कुछ याद है ? क्या आपकी स्मृति में कोई पुरानी बातें आती हैं ? कोई बैंकर, कोई नौकर, कोई काम-काज ?

सारा जीवन काल-कोठरी मे बिताकर उसकी स्मृति जाती रही थी। कुछ धुंधली याद की छाया सी उसके चेहरे पर आई और चली गई। वह दोनो की ओर देखता रहा पर जैसे कुछ याद नही आ रहा था। आखिर उसने अपना जूता उठाया और उसकी तैयारी मे लग गया।

डिफार्जे ने लॉरी महाशय से धीरे से पूछा—आपने तो पहचान लिया ?

"हां ! पहले तो मै हताश हो गया था। पर चुप, चलो हट चलें।"

कुमारी मेनेट दरवाजे के पास से बेंच के पास आ गई थी। वह खड़ी रही, खड़ी रही और वह भी अपने काम में लगा रहा। आखिर उसकी आंखों में कुमारी के घाघरे का किनारा झलक गया। उसने सिर ऊपर उठाया। उसके मुंह की ओर देखा। उसकी दृष्टि उसके चेहरे पर जमकर रह गई। वह उसे ताकता रहा, ताकता रहा। कुछ भाव उसके मन में उठते रहे। कुछ विचार उसके चेहरे पर आते-जाते

रहे। उसकी सांस जोर जोर से चलने लगी। धीरे धी
उसके मुंह से ये शब्द निकल पड़े—कौन हो ? तुम जेल
की लड़की तो नही हो ?

नही—कुमारी मेनेट ने सिसकते हुए कहा।

"तब तुम कौन हो ?"

उसने कोई उत्तर नही दिया। वह खड़ी न रह सकी।
उसके पास ही बेंच पर बैठ गई। उसने अपनी बांह उसकी
पीठ पर रख ली। वृद्ध मेनेट के शरीर में एक लहर सी दौड़
गई। उसने अपने हाथ की छुरी डाल दी और उसके चेहरे
की ओर ताकने लगा। कुमारी मेनेट की शिथिल वेणी
खिसक पड़ी और उसके सुनहरे केश उसकी पीठ पर लहरा
उठे। केशों की इन सुनहरी लटो को बूढ़े मेनेट ने बड़े ध्यान
से देखा और धीरे धीरे हाथ बढ़ाकर उन्हे छुआ। अच्छी
तरह उन्हे परखा फिर वह विचारो में डूब गया और अपने
काम में लगने की चेष्टा करने लगा।

लेकिन अधिक देर तक वह ऐसा न कर सका। उसने
काम छोड़ दिया। कभी कुमारी मेनेट को, कभी उसके
सुनहरे केशों को देखने और कुछ सोचने लगा। कोई या
उसे सताने लगी। उसने अपने गले में लिपटे एक चिथड़े को

वह उसके पास ही बेंच पर बैठ गयी।

लेकर खोला। उसमें दो चार सुनहरे केश बड़ी हिफाजत से रक्खे थे। उन्हें लेकर वह देखने लगा। बीस साल पहले ये केश उसने बांध रक्खे थे। वह बड़बड़ाने लगा—उस रात को जब वे मुझे बुलाने गये थे उसने अपना सिर मेरे कन्धे पर रखकर मुझे रोका था। इन्ही सुनहरे केशों से भरा हुआ वह सिर हटाकर मैं उनके साथ चला आया था। उन्होंने मुझे बुर्जों में बन्द किया, उस समय ये मेरी बांह पर लिपटे हुए थे। मैंने उनसे अनुनय की थी कि उन्हें मेरे से अलग न करें। ये मुझे कालकोठरी से बाहर तो लेजा न सकेंगे पर मेरी आत्मा को थोड़ी देर के लिए शांति की दुनियां में अवश्य ले जायेंगे।

यही मैंने उनसे कहा था। मुझे पूरी तरह याद है। मैं बिलकुल भूला नही हूँ। वही सुनहरे केश हैं! ओह, वही सुनहरे केश हैं ये!—वह फिर एक हाथ से उन केशों को लेकर देखने लगा।

एकाएक वह कुमारी मेनेट की ओर ताक कर पूछ बैठा—यह कैसी बात है? तो क्या तुम वही हो?

डिफार्ज और महाशय लॉरी उसकी भयंकर आकृति देख कर डर गये किन्तु कुमारी मेनेट निश्चल-निडर भाव से बैठी

रही। उसने कुछ भी नहीं कहा। बल्कि वह उन्हें ही मना करने लगी—आप लोग डरें नही। न इधर आयें। मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ। हमें यों ही रहने दें।

कुमारी मेनेट की बोली कानों में पड़ी तो वह और भी चौंक उठा और चिल्लाया—अरे, यह कौन बोल रहा है ? मै इतने दिन बाद फिर वही कण्ठस्वर सुन रहा हूं।

फिर अपना सिर हिलाकर बोला—नही नही, तुम तो बहुत छोटी हो। निरी बच्ची हो। तुम वह नहीं हो सकतीं। भला, बताओ तो तुम्हारा नाम क्या है ? तुम मुझे पहचानती हो ? नहीं नहीं, तुम क्या जानोगी। मैं तो एक कैदी हूँ। ये वे हाथ नहीं है जिनको उसने देखा था। यह वह सूरत भी नहीं है जिसको वह जानती थी। ओह, वह सब कहां है ? कहां है ? कहाँ है ?

कुमारी मेनेट अपने पर काबू न रख सकी। वह वृद्ध और खोये हुए पिता की छाती से चिपक गई। उसका सुनहरे केशो से भरा हुआ सिर बूढे के कन्धे पर जा पड़ा। दुखिया और वंचित पिता का सिर भी झुक कर उसके सिर से आ लगा और ऐसा लगा कि मूर्तिमान स्वतन्त्रता ने नये प्रकाश से उसे आलोकित कर दिया है।

पिता अपनी बेटी की गोद में डूब गया। यह करुणाजनक दृश्य देख कर डिफार्जे और लॉरी अपनी आंखों के आंसुओं को न रोक सके। एक युग के विछोह और दुखों की दुखदायक स्मृति ने इस मिलन को और अधिक दयार्द्र बना दिया।

बूढ़ा इस अप्रत्याशित सुख को सह न सका। उसके शरीर और उसकी चेतना में कोई मेल न रहा। वह धीरे धीरे वहीं पृथ्वी पर गिर गया और अचेत हो गया। कुमारी मेनेट उसकी परिचर्या करने लगी। उसने उसका सिर उठा कर जांघ पर रख लिया और उसके झुर्रियों से भरे हुए चेहरे पर अपने केशों की छाया करके उसके दीर्घकाल व्यापी कष्टों को अनुभव करने की चेष्टा करने लगी।

उसके होश में आने से पहले ही वह महाशय लॉरी से बोली—क्या ही अच्छा हो यदि हम इन्हें इसी हालत में पेरिस से दूर ले चलें।

"परन्तु क्या इस दशा में ये यात्रा कर सकेंगे?"

"क्यों न कर सकेंगे। मेरा तो विचार है कि इस भयानक शहर से जहां इन्होंने इतना दुख भोगा है, इन्हें जितनी जल्दी निकाला जाय उतना ही इनके लिये लाभदायक होगा।"

"यह ठीक है"—डिफार्जे ने उसका समर्थन किया। फिर बोला—"इन्हे तो फ्रांस से बाहर ले जाओ। तुरन्त, देर मत करो। बोलो, क्या गाड़ी बुला ली जाय?"

"यही ठीक है। यही होगा। हम यही करेंगे।"

कुमारी मेनेट—"तो देखिये आप लोग हम दोनों को यहां छोड़ जाइये और तुरन्त चलने की व्यवस्था करिये। मेरे लिये यहां किसी तरह का खतरा नहीं है। आप देखते ही हैं वे किस तरह शांत हो गये हैं। आप तो केवल जल्दी करिये।"

यह बात उन दोनों में से किसी को ठीक नही जंची। वे चाहते थे कि उनमें से एक वहां अवश्य रहे। लेकिन गाड़ी और घोड़ों का ही तो प्रवन्ध नही करना था। यात्रा-संबंधी परिचय-पत्र भी तो ठीक कराने थे। दिन अस्त होने में देर न थी। इतनी जल्दी सब काम कैसे हों। अतः दोनों ने काम को बांट लेना ही उचित समझा। वे आखिर अपना अपना काम करने का निश्चय करके चल पड़े। पिता-पुत्री को उन्हें उसी हालत में छोड़ जाना पड़ा।

उन्होंने जाकर यात्रा का सामान, कपड़े, खाना-पीना, घोड़ा-गाड़ी सभी कुछ जुटाया। पूरी पूरी तैयारी करके लौटे। आकर वृद्ध मेनेट को उठाया। वह आंखे मलते हुए उठा और

उनके चेहरों की ओर अचरज भरी दृष्टि से ताकने लगा। उस के मन में उस समय क्या क्या भाव उठ रहे थे, यह कोई नहीं कह सकता परन्तु इतना तो अनुमान लगाया जा सकता है कि वह कुछ निर्णय नही कर पा रहा था, न उनकी बातों का उत्तर देने की स्थिति में था। उन्होने भी वृद्ध कैदी की यह मनोदशा देखकर चुप रहना ही उचित समझा। बेंच पर रक्खे हुए लंप के धीमे प्रकाश में उसने अपना खाना समाप्त किया। जो कपड़े सामने लाकर रक्खे गये थे उन्हें पहना। कुमारी मेनेट के बढ़े हुए हाथ को उसने अपने हाथ में ले लिया और उसके साथ साथ चलकर सीढ़ियां उतरने लगा। आगे आगे डिफार्जे और सबसे पीछे लॉरी, बीच में पिता-पुत्री। इस प्रकार वे एक एक करके नीचे उतर आये। जब वे उतर कर सहन में आये और बाहर निकलने लगे तो वहाँ श्रीमती डिफार्जे के अलावा और कोई न था। वह चुपचाप द्वार के पास खड़ी अपनी बुनाई में तन्मय हो रही थी।

वृद्ध मेनेट सामने खड़ी गाड़ी में चढ़ गये और साथ ही उनकी पुत्री भी। लॉरी महाशय भी चढ़ रहे थे पर रुक गये क्योंकि कैदी ने धीमे स्वर में अपना जूता बनाने का सामान और अधबना जूता लाने को कहा। श्रीमती डिफार्जे ने

तत्परता से कहा—मैं ला देती हूँ, और जल्दी से जाकर ले आई।

डिफार्जे ऊपर चढ़कर कोचवान के पास जा बैठा और कहा—चलो। गाड़ी चल पड़ी। गाड़ी पर लगे हुए लैंपों का प्रकाश हिलने लगा और पहियों की खड़खड़ाहट सुनाई पड़ने लगी। सड़कों, गलियों, बाजारों में से होती हुई गाड़ी शहर के दरवाजे पर जा पहुँची। वहां पहुंची तो फौजी पहरेदार ने आवाज दी—अपने परिचय-पत्र दिखाइये।

डिफार्जे गाड़ी से उत्तर पड़ा और हाथ बढ़ाकर कागज दे दिये—यह लीजिये श्रीमन्। ये कागज गाड़ी में बैठे वृद्ध महाशय के हैं। वे और उनके कागज मुझे ही सौंपे गये थे।

फौजी अधिकारी ने कागज ले लिये। जो वर्दीधारी अधिकारी गाड़ी पर चढ़ गया था उसने लैंप के प्रकाश में परिचय-पत्र देखा। गाड़ी में बैठे हुए वृद्ध पुरुष को देखा और कहा—ठीक है। चलो, बढ़ो।

गाड़ी चरमराकर चल पड़ी। डिफार्जे ने हाथ बढ़ा कर विदाई ली। गाड़ी और उसके यात्री तारों की छांह में अपने गन्तव्य की ओर चल पड़े।

लंदन के न्यायालय में

टेलसन्स बैंक की जैसी पुराने रंगढंग की इमारत थी उसी तरह उसका पहरेदार क्रंचन जेरी था। वह सदा वहीं रहता था। कभी गैरहाजिर नहीं होता था जब तक कि कहीं काम से न भेजा जाय। उस समय उसका बारह साल का लड़का उसके स्थान पर मौजूद होता था। जेरी इस बैंक का चपरासी भी था और डाकिया भी। बैंक को उसे निभाना पड़ता था क्योंकि हर काम में उसे जोता जा सकता था।

सन् १७८० ई० के मार्च महीने के एक प्रातःकाल एक बाबू ने कहा—जेरी, तुम पुरानी कचहरी जानते हो ?

जी, जानता हूं—हकलाते हुए जेरी ने उत्तर दिया।

"और मिस्टर लॉरी को भी जानते हो ?"

"लॉरी को तो कचहरी से भी अधिक जानता हूं।"

"तो देखो, गवाह जहां से घुसते हैं वहाँ खड़े चपरासी को यह कागज दिखा देना। वह तुम्हें लॉरी महाशय के पास जाने देगा।"

"न्यायालय में ?"

"हां।"

"तो क्या मैं वहाँ ठहरूं ?"

"सुनो, चपरासी पत्र लॉरी महाशय को दे देगा। तुम इस तरह खड़े रहना कि लॉरी तुम्हे देख सकें। वे फिर जब तक तुम्हे न बुलायें तब तक वही खड़े रहना। समझ गये ?"

"जी हां।"

जेरी ने पत्र लिया और चल पड़ा। पत्र उसने द्वारपाल को दे दिया। थोड़ी देर में द्वार थोड़ा सा खुला और जेरी क्रंचन भीतर प्रविष्ट हुआ।

पास खड़े हुए व्यक्ति से उसने धीरे से पूछा—क्या हो रहा है ?

"अभी थोड़ी देर है।"

"क्या मामला है ?"

"देशद्रोह का मामला है।"

अब तक पत्र लॉरी के हाथ में पहुँच चुका था। वे एक टेबिल के सहारे बैठे थे। पास ही अभियुक्त का वकील बैठा था। उसके सामने मामले सम्बन्धी कागज-पत्रों का ढेर था। दूसरी ओर जेब मे हाथ डाले एक और वकील बैठा छत की ओर ताक रहा था। जेरी ने मुंह दबाकर इस तरह खांसा कि

लॉरी उसको देख ले। लॉरी उसी की तलाश मे इधर उधर देख रहे थे। जेरी को देखकर उन्होने इशारा किया कि उन्होंने उसे देख लिया है।

इसी समय मंच पर खड़े दो जेल अधिकारी बाहर गये और अभियुक्त को भीतर ले आये। वह न्यायाधीश के सामने खड़ा कर दिया गया। सब लोगो की दृष्टि अभियुक्त की ओर चली गई। वह एक पच्चीस साल का युवक था। सुन्दर, सुदर्शन और सुगठित। काली आंखें, धूप से झुलसे कपोल, सादी पोशाक। पीठ की ओर फैले लबे केश। वह सीधी सादी तरह से आकर न्यायाधीश के सामने विनम्रता से झुका और चुपचाप खड़ा हो गया।

अदालत मे सन्नाटा छा गया। सरकारी वकील ने खड़े होकर न्यायाधीश को संबोधन करके कहना आरंभ किया—श्रीमान् जी, कल हमने अभियुक्त चार्ल्स डार्ने की कहानी सुनी थी। उस पर हमारे सम्राट के विरुद्ध कार्रवाई का आरोप लगाया गया था। उसने अपने देशद्रोहात्मक कामो से हमारे सम्राट के शत्रु फ्रांस के अधिपति को मदद दी। उसने इस बात की सूचना शत्रु को पहुंचाई कि हमारे सम्राट कनाडा और उत्तरी अमरीका मे कितनी सेना भेज रहे हैं और क्या

कार्रवाई कर रहे हैं। यह कितना बड़ा अपराध है। किन्तु अभियुक्त का कहना है कि वह देशद्रोह का अपराधी नहीं है। वह बिल्कुल निरपराध है। अतः मैं कुछ ऐसी साक्षियां प्रस्तुत करूंगा जिससे उसका कथन अप्रमाणित हो जायगा। मैं सबसे पहले श्री जार्विस लॉरी को उपस्थित करूंगा।

लॉरी—मैं मौजूद हूँ। जनाब।

वकील—श्री लॉरी महाशय, आप टेल्सन्स बैंक में काम करते हैं न?

लॉरी—करता हूँ जनाब।

वकील—पांच साल पहले किसी शुक्र की रात को आपने डोवर की डाकगाड़ी में लंदन से डोवर तक की यात्रा की थी?

लॉरी—की थी।

वकील—क्या डाकगाड़ी मे और भी मुसाफिर थे?

लॉरी—दो यात्री और थे।

वकील—क्या उन्होंने गाड़ी रुकवाई थी और रात में ही उतर गये थे?

लॉरी—जी, ऐसा ही हुआ था।

वकील—लॉरी महाशय, अभियुक्त की ओर देखिये।

क्या उन यात्रियों में एक यह भी था ?

लॉरी—मैं नही कह सकता ।

वकील—क्या वह दो मे से किसी एक की तरह दिखता है।

लॉरी—वे दोनों लंबे लबे लबादो मे अपने आपको ढके थे और रात ऐसी अंधेरी और कुहरे से छाई थी कि मैं यह भी नही कह सकता ।

वकील—तो महाशय, आप शपथपूर्वक यह नहीं कह सकते कि यह उनमें से एक था।

लॉरी—नहीं ।

वकील—लॉरी महाशय, आप एक बार अभियुक्त को और अच्छी तरह देखिये । क्या आपने उसे पहले कभी देखा है ?

अभियुक्त की ओर गौर से देखकर जाविस लॉरी ने उत्तर दिया—जी हां, देखा है ।

वकील—कब ?

लॉरी—मैं कुछ अर्से बाद फ्रांस से लौट रहा था। केले में अभियुक्त आकर उसी जहाज में सवार हुआ था जिससे मैं यात्रा कर रहा था ।

वकील—वह जहाज में कब आया था ?

लॉरी—अर्धरात्रि के कुछ ही बाद ।

वकील—क्या आप अकेले थे ?

लॉरी—नहीं । मेरे साथ एक और महाशय थे और एक महिला थी । वे यहां मौजूद हैं ।

वकील—बस जी, धन्यवाद । अब मैं अपने दूसरे गवाह को बुलाता हूं । कुमारी मेनेट उपस्थित है ?

कुमारी मेनेट—जी हां । मैं उपस्थित हू ।

वकील—कुमारी जी, आप जरा अभियुक्त को देखिये । क्या आपने इससे पहले उसे कभी देखा था ?

कुमारी मेनेट—जी ।

वकील—किस जगह ?

कुमारी मेनेट—जहाज पर । उसी समय जबकि लॉरी महाशय ने देखा था ।

वकील—क्या आपने उससे बातचीत की थी ?

कुमारी मेनेटे—जी । मेरे पिताजी उस समय बहुत अस्वस्थ थे अतः जब अभियुक्त जहाज पर आया तो उसने मुझे उनकी परिचर्या में बहुत सहायता दी । उसने मेरे पिता के प्रति पर्याप्त सद्भावना प्रदर्शित की थी ।

वकील—क्या वह जहाज मे अकेला आया था ?

कुमारी मेनेट—नही, उसके साथ दो फ्रांसीसी भी थे।

वकील—उन्होने क्या किया था ?

कुमारी मेनेट—वे बातें करते रहे जब तक कि उनके जाने का समय नही हो गया।

वकील—क्या उन्होने अभियुक्त को इस प्रकार के कोई कागज दिये थे ?

कुमारी मेनेट—कुछ कागज दिये तो जा रहे थे पर वे क्या कागज थे यह मैं नही कह सकती।

वकील—अच्छा कुमारी जी, अभियुक्त ने आपसे भी कुछ कहा था ?

कुमारी मेनेट—अभियुक्त का मेरे प्रति बहुत सौजन्यता-पूर्ण व्यवहार था। मैं आज उसे हानि पहुँचाकर किसी तरह उससे उऋण नहीं हो सकूंगी।

वकील—आप क्यो परेशान होती हैं कुमारी जी। हम लोगो को पता है कि आप खुशी से यह सब थोड़े ही कह रही हैं। अभियुक्त भी इतना समझता है।

कुमारी मेनेट—उसने मुझसे कहा था कि वह विशेष कार्यवश यात्रा कर रहा है जिससे संभव है कुछ लोग संकट

में पड़ जायं। उसने यह भी कहा था कि संभव है उसे इसी सिलसिले में कुछ दिनों तक कई बार इंगलैंड से फ्रांस और फ्रांस से इंगलैंड आना जाना पड़े।

वकील—क्या उसने अमरीका के संबध में भी कुछ चर्चा की थी ?

कुमारी मेनेट—हां उसने कहा था कि इंगलैंड का इस युद्ध मे पड़ना एक मूर्खतापूर्ण कार्य है। उसने यह भी कहा था कि लिखे जानेवाले इतिहास मे जार्ज तीसरे से जार्ज वाशिंगटन की प्रसिद्धि अधिक होगी। यद्यपि यह बात हंसी में कही गई थी।

वकील—अच्छा कुमारी जी, इतना काफी है। अब मामला हमारे सामने है। इन दोनो गवाहो के आधार पर यदि मैं यह नतीजा निकालूं कि इस चार्ल्स डार्ने नामक व्यक्ति ने देश को धोखा देने का गर्हित कार्य किया है। दोनो गवाह इसमें भूल नही कर सकते।

अभियुक्त पक्ष का वकील—श्रीमान् न्यायाधीश महोदय, मैं अभियुक्त से कुछ प्रश्नो के उत्तर चाहता हूं।—कुमारी मेनेट, आपको पूरा विश्वास है कि वह अभियुक्त ही था ?

कुमारी मेनेट—हां पूरा विश्वास है।

इसी समय सिडनी कार्टन नामक युवक वकील ने जो वहीं बैठा हुआ था एक पुर्जा अभियुक्त पक्ष के वकील के पास भेजा। उसने पुर्जा पढ़ा और गौर से सिडनी कार्टन के चेहरे को देखा, कुछ मुस्कराया मानों अपनी सहमति जताई हो, फिर गवाह की ओर मुड़कर पूछा—तो कुमारी जी, क्या आपने कभी किसी ऐसे दूसरे व्यक्ति को भी देखा है जो अभियुक्त की आकृति से मिलता जुलता हो।

कुमारी मेनेट—नही। इतना मिलता जुलता तो कोई नही देखा कि मैं भ्रम में पड़ जाऊं।

वकील—तो कृपया श्री कार्टन की ओर देखिये। वे वहां बैठे हैं। फिर अभियुक्त की ओर देखिये। क्या वे दोनो एक जैसे नहीं हैं ?

कुमारी मेनेट ने दोनों को देखा। वह हैरत में पड़कर बोली—आप ठीक कहते हैं। ये दोनों तो इतने मिलते जुलते हैं कि अगर एक सी पोशाक पहन लें तो कौन कौन है यह निश्चय करना कठिन हो जाय।

वकील ने इस पर न्यायाधीश को संबोधन करके कहा तो श्रीमान् मुझे आज्ञा दीजिए कि मै अभियुक्त को निर्दोष कहूं। यहां उपस्थित हर कोई यह देख सकता है कि श्री

सिडनी कार्टन जो सामने बैठे हैं और अभियुक्त संभवतः एक ही व्यक्ति हो सकते हैं यदि उन्हें एकसी पोशाक पहना दी जाय। न्यायालय के सामने अब तक कोई प्रमाण ऐसा नही लाया गया है जिससे यह सिद्ध हो सके कि देशद्रोह अभियुक्त ने ही किया, सिडनी कार्टन ने नही। यह साफ भ्रम है। गवाह और दूसरे लोग गलती से अभियुक्त को दोषी समझ बैठे हैं। ऐसी सूरत में क्या उसे प्राणदंड दिया जा सकता है? उसे जानबूझ कर बारसद जैसे देशद्रोही जासूसों ने अपनी सहज दुष्टता का लक्ष्य बनाया है। इसका अपराध इतना ही है कि वह फ्रांसीसी परिवार में जन्मा है और उसे अपने पारिवारिक मामलों को निबटाने के लिए जबतब फ्रांस आना जाना पड़ा है। उन सब बातों को अभियुक्त विशेष कारणों से बताना नहीं चाहता। परन्तु इससे उसके निर्दोष होने में कोई अन्तर नही आता।

न्यायाधीश—मेरा भी यही विचार है कि अभियुक्त दोषी नही है। अभियुक्त और श्री कार्टन दोनों को देखने से यह विश्वास नहीं होता कि दो आदमी इस कदर एकसे हो सकते हैं। यह तो ऐसा मामला बन गया है कि एक निर्दोष व्यक्ति को दोषी मानकर दंड दिया जा रहा है। मैं इस

संशय का लाभ अभियुक्त को देता हूँ और उसे निर्दोष घोषित करता हूँ। डार्ने महाशय, आप मुक्त किये जाते हैं। आप जा सकते हैं।

लॉरी महाशय ने तुरन्त ही इशारे से जेरी को बुलाया और कहा—जाओ और बैंक में खबर करो कि अभियुक्त बरी हो गया है।

जेरी—बहुत अच्छा श्रीमान्। आपने पांच साल पहले 'पुनर्जीवन प्राप्ति' इस प्रकार का संकेतपूर्ण संदेश दिया था उस समय मैं उसे निरर्थक समझ रहा था। आज यदि आप उन्ही शब्दों को दोहरा देते तो मैं पूरी तरह समझ जाता।

लॉरी—हां-हां, अच्छा जाओ।—और कुमारी मेनेटे आओ चलें। तुम तो अस्वस्थ सी हो रही हो। क्या बात है?

सिडनी कार्टन

अदालत से बरी होकर अभियुक्त डार्ने बाहर आया। उसके दोस्त एक एक कर तितर बितर हो गये! कुमारी लूसी मेनेट अपने पिता के साथ गाड़ी पर सवार होकर चली

गई। इन सबके पीछे एक और व्यक्ति भी धीरे धीरे टहलता हुआ आया और बाप-बेटी को बग्घी पर बैठकर जाते हुए देखता रहा, जब तक वे अदृश्य नहीं हो गये। फिर वह लॉरी और डार्ने के समीप सड़क के किनारे आ खड़ा हुआ। थोड़ी देर में वृद्ध लॉरी भी एक गाड़ी में चढ़कर अपने बैंक को चलते बने। अब सिडनी कार्टन डार्ने के पास बढ़ आया और बोला—चलो अच्छा ही हुआ जो भाग्य ने मुझे और तुम्हें अचानक मिला दिया। आज तुम्हें तो बड़ा अद्भुत लग रहा होगा कि तुम यहां एकांत में अपने प्रतिरूप के साथ खडे हो।

डार्ने—मैं तो अब भी विश्वास नहीं कर पा रहा हूँ कि मैं इस दुनियां में मौजूद हूँ।

कार्टन—यह तो सही है। अभी कितनी तो देर हुई है जब तुम परलोक के बिल्कुल करीब जा खड़े हुए थे। तुम तो खोये खोये से हो रहे हो।

डार्ने—हां कुछ ऐसा ही लग रहा है।

कार्टन—तो तुम कुछ खाते क्यों नहीं। चलो कुछ पेट में डालो, कमजोरी दूर हो जायगी। मैं तुम्हारा साथ दूंगा बड़ी खुशी से।

डार्ने—धन्यवाद। चलो, मुझे तुम्हारे साथ खाकर खुशी

होगी। यह बड़े संतोष की घड़ी है कि मैं अपने आपको मुक्त समझ रहा हूं। अब मेरे प्राणों के लिए संकट नहीं है। मैं उस अपराध के लिए नहीं मारा जाऊंगा जिसे किसी दूसरे ने किया है।

कार्टन—मेरी आंतरिक इच्छा है मैं यह भूल जाऊं कि इस दुनियां से मेरा कोई वास्ता है। मेरे लिए इसमें कोई लाभ नही है। शराब को छोड़कर इस दुनियां में मेरा कोई साथी नहीं है। हम दोनों देखने में एकसे हैं लेकिन हमारा जीवन और हमारे विचार कतई एकसे नही हैं।

डार्ने—भाई कार्टन, मेरे प्राण बचाने के लिए मेरी कृतज्ञता स्वीकार करो। मै तो मौत के मुंह में जा चुका था कि आपने एक पुर्जा वकील के पास भेज कर हम दोनों की समान आकृति की ओर ध्यान आकर्षित किया।

कार्टन—न तो मुझे आपकी कृतज्ञता चाहिए, न मैं उसका अधिकारी हूं। वह कोई ऐसी बात भी न थी और न मुझे पता है कि मैंने वैसा क्यों किया। आओ, चलो, आपकी गवाह कुमारी लूसी मेनेट के नाम पर कुछ पीयें-खायें।

डार्ने—लूसी मेनेट !

कार्टन—हां एक सुन्दर सुशील लड़की। कितनी भोली,

कितनी दयालु । ऐसी सुशीला की करुणा का पात्र बनने के लिए फांसी के तख्ते पर भी चढ़ा जा सकता है।

डार्ने—जाने दीजिये, मिस्टर कार्टन। मै उस लड़की के बारे में ज्यादा बातचीत नहीं करना चाहता।

कार्टन—कुछ पूंछूं तो बताओगे ?

डार्ने—पूछिये।

कार्टन—तुम्हारा क्या ख्याल है कि मैं तुम्हें पसंद करता हूं ?

डार्ने—अरे, यह तो ऐसा सवाल है जिस पर मैंने अब तक कुछ सोचा ही नहीं।

कार्टन—अब सोच देखो।

डार्ने—आपने काम तो ऐसा ही किया है परंतु मैं नहीं समझता कि आप मुझे पसंद करते हैं।

कार्टन—यही बात है हां, आखिरी बात। आप जानते ही हैं कि मैं पीता हूं ?

डार्ने—हां क्यों नहीं।

कार्टन—तो सुनिये क्यो पीता हूं। मैं हूँ एक अभागा आदमी। एकांत दुखी एक एकाकी। मै इस दुनियां में किसी की परवाह नही करता और न यहां कोई मेरी चिंता करता है।

डार्ने—प्रिय कार्टन, मुझे यह सुनकर बड़ा दुख हुआ है। आप अपने जीवन की बिलकुल चिंता नहीं करते। यदि कर सकते तो कितना सुन्दर होता।

कार्टन—हो सकता है पर ऐसा होगा नहीं। कौन जानता है आदमी के भाग्य में क्या है? अपनी इस सुदर्शन आकृति पर तुम भी अधिक प्रसन्न मत होना।—आप जा रहे हैं, अच्छा नमस्ते।

डार्ने कार्टन के कमरे से निकलकर चला गया। एकाकी रह जाने पर कार्टन ने एक जलती हुई मोमबत्ती उठाई और आइने के सामने खड़ा होकर अपना चेहरा देखने लगा।

अपनी सूरत शीशे में देखकर वह वड़बड़ाने लगा—मुझे वह नौजवान क्यों पसन्द है? क्या वह मेरी ही शक्ल सूरत का है इसलिए? पसन्द आने की उसमें वात ही क्या है? तुम क्या जानते नहीं? जानते हो, अच्छी तरह। वह यही तो वताने के लिए है कि तुम कहां से गिर कर कहां पहुँच गये? तुम्हें क्या होना चाहिये था और क्या वन गये। पतन—मेरे पतन की कहानी साफ शब्दों में मेरे कानो में उंडेलनेवाला डार्ने, मैं उसे क्यों पसन्द करूंगा? मैं तो

उससे घृणा करता हूँ।

इतना कहकर उसने अपनी बोतल उठाई और गटगट करके सब पी गया। कुछ क्षण में नशे में झूमकर वह गिर पड़ा और उसी दशा में सो गया।

मारक्विस की हत्या

मारक्विस की अवस्था साठ साल की होगी। नखशिख से सुन्दर। सुरुचिपूर्ण वस्त्रविन्यास। गर्वीला और रोबदाब वाला चेहरा गौर वर्ण। सहज ही प्रभावित करनेवाला व्यक्तित्व। वह अपने पेरिस के निवास-स्थान की ऊपरी मंजिल से उतरकर नीचे सहन में आया। द्वार के सामने खड़ी हुई बग्घी पर बैठा और गाड़ी चल पड़ी।

उसका कोचवान कितना लापरवाह और बदमिजाज था कि वह किसी को कुछ समझता ही न था। गाड़ी को इस तरह हवा में उड़ाये लिये जा रहा था कि कोई टकरा जाओ, कोई मर जाओ, कोई दब जाओ, कोई कुचल जाओ परवाह नहीं। लगता था कि जैसे वह बग्घी न हांक रहा हो बल्कि

शत्रु के ऊपर अंधाधुंध प्रहार कर रहा हो। फिर भी तमाशा यह कि उसका मालिक इस ओर ध्यान ही न दे रहा था। वह तो उड़ी जा रही बग्घी में मजे से बैठा था। न माथे पर कोई बल था, न मुंह से रोकता था।

वह ऐसा ही जमाना था। बहरा नगर और गूंगा युग। उस युग की तंग गलियों मे फुटपाथ नहीं थे। कुलीन और बड़े लोग घोड़ागाड़ियों को अंधाधुंध दौड़ाने में ही शान समझते थे। गरीब और निम्नस्तर के लोगो के कुचल जाने की कोई परवाह नहीं करता था। फिर भी कभी कभी दुर्घटनाएं अपने आपको व्यक्त कर देती थीं। उस समय अमीरों और कुलीनो के प्रति लोगो में घृणा और प्रतिहिंसा की भावना प्रबल हो जाती थी। किन्तु ऐसा कभी कभी ही होता था। वह भी क्षण भर के लिए। उसके बाद लोग भूल जाते थे। जो मर गया वह मर गया। जो घायल हो गया वह घायल हो गया। वह सड़ता मरता पड़ा रहता था।

जब यह गाड़ी वेग से दौड़ती जा रही थी; उसकी खड़खड़ाहट और घोड़ों की टापो की आवाज से स्त्री-पुरुषों मे हड़बड़ी मच जाती थी। कही कोई स्त्री चीखकर दौड़ती और अपने बच्चे को घोड़ों के आगे से खींच लाती। कहीं

कोई बूढ़ा जल्दी जल्दी डग भरता एक किनारे जा गिरता। कहीं कोई पुरुष अपने दूसरे अल्हड़ साथी को खीचकर एक ओर कर देता। आखिर एक मोड़ पर उसके मुड़ते ही चारो ओर से लोग चीख पड़े। गाडी झटके से रुकी। घोड़े बिदके, कुछ पीछे हटे और ठहर गये।

कोचवान उछलकर नीचे कूद पड़ा। दस पन्द्रह आदमियों ने दौड़कर घोड़ो की रासें पकड़ ली।

गाडी में आराम से बैठे मारक्विस ने सिर बाहर निकाल कर बड़े इतमीनान से पूछा--क्या माजरा है?

एक लबतड़ंग पुरुष ने झुककर घोड़ों की टापो में से एक गठरी सी निकाली और पास के ऊंचे चबूतरे पर रख दी तथा उसके ऊपर झुककर बुरी तरह हाय हाय करने लगा।

एक चिथड़ो में लिपटे पुरुष ने साहस करके मारक्विस से कहा—श्रीमन्, बच्चा कुचल गया है।

वह आदमी क्यो जानवरों की तरह हाय हाय करता है? क्या यह उसी का बच्चा है? मारक्विस ने भौंहें टेढ़ी करके पूछा।

हाँ सरकार, बड़े दुख की बात है।

मार्चिवस की गाडी के नीचे

इतने में लोगों की भीड़ गाड़ी के चारों ओर घिर आई, पर कोई बोलता न था। न किसी में उबाल था, न क्रोध। वे चुपचाप चित्र-लिखे से खड़े तमाशा देख रहे थे। किसी तरह का असंतोष उनके चेहरों पर न था। जो आदमी मारक्विस से बातचीत कर रहा था वह भी बड़ी शिष्टता के साथ। मारक्विस ने चारों ओर दृष्टि डालकर उन लोगो को इस प्रकार ताका कि जैसे वे बिलों से निकलकर आ खड़े हुए चूहे हों। उनकी दुर्दशा पर पसीजकर उसने अपनी थैली निकाली और भीड़ की ओर ताककर बोला—यह एक अजीब बात है कि तुम लोग अपने बच्चों की भी फिक्र नही रख पाते हो। तुम मे से कोई न कोई हमेशा रास्ते में आ जाते हो। न मालूम तुमने हमारे घोडों के कितनी चोट लगाई। खैर, लो यह उसे दे दो।—कहकर उसने एक सोने का सिक्का सड़क पर फेंक दिया।

लोग उस सिक्के को देखने के लिए झुक पड़े। इसी समय आहत बालक के पिता ने अपना सिर पीट लिया और जोर से चिल्लाया—चल बसा, चल बसा ! हा राम !

एक दूसरा आदमी उधर से भागता हुआ आया। लोगों ने हटकर उसे रास्ता दे दिया। मृत बालक के पिता ने उसे

देखकर और जोर जोर से विलाप करना शुरू कर दिया। कुछ स्त्रियां मृत बालक के चारो ओर घिर आई थीं और विलाप कर रही थीं। उस ओर संकेत करके मृत शिशु के पिता ने अपने साथी से कहा—गरीब का धन। हाय-हाय !

आगन्तुक ने उसे सांत्वना दिलाते हुए कहा—समझ गया, समझ गया। शांत हो। धीरज धरो। धीर वीर बनो। उसकी जिंदगी से उसकी मौत लाख बार अच्छी है। देखो एक क्षण में मर गया। जैसे कहीं था ही नहीं। न कोई दर्द, न बीमारी, कितनी अच्छी मौत ! और इतनी अच्छी जिन्दगी क्या एक घंटा भी उसे मिल सकती थी ?

मारक्विस—अरे तुम तो दार्शनिक हो। तुम्हारा नाम ?

"डिफार्ज।"

"क्या काम करते हो ?"

"शराब बेचता हूं।"

"कलाल और दार्शनिक, लो तुम भी लो।"

मारक्विस ने एक और स्वर्णमुद्रा उसकी ओर फेंकी। कोचवान से पूछा—"घोड़े ठीक हुए ?"

इतना कहकर वह सीधा होकर गाड़ी में बैठ गया और गाड़ी चल पड़ी। ऐसा लगा जैसे उसकी यात्रा में एक छोटा

सा विघ्न खड़ा हो गया हो। अकस्मात् दुर्घटना में कोई क्षुद्र सी चीज क्षतिग्रस्त हो गई हो और उसका हर्जाना देकर मामला रफे दफे कर दिया हो। जब वह इस तरह शांति से जा रहा था तो पीछे से किसी ने वह स्वर्ण मुद्रा फेंकी। वह आकर गाड़ी पर लगी और खनखनाती हुई उसी में जा गिरी।

मारक्विस गाड़ी मे से गरज उठा,—"ठहरो, किसने फेंका है !" उसने उस ओर देखा जहां अभी अभी शराब विक्रेता खड़ा था। वह चिल्लाया—हरामजादो ! मैं तुम्हारे ऊपर से गाड़ी दौड़ा ले जाऊंगा। धरती पर से तुम्हारा नामो-निशान मिटा दूंगा। तुम क्या समझते हो। अगर मुझे पता चल जाय कि किस बदमाश ने फेका तो इसी क्षण उसे पहिये के नीचे कुचल कर भुर्ता बना दूं।

लोग चुपचाप सुन रहे थे। वे जानते थे कि जो कुछ कहा जा रहा है उसमें रत्ती भर अत्युक्ति नहीं है। इस आदमी में ऐसी ही शक्ति है। वह सब कुछ कर सकता है। उसके लिए कायदा-कानून कुछ नहीं है। उसकी इच्छा सर्वप्रभुत्व सम्पन्न है। इसलिए न तो कोई उत्तर मिला, न हाथ हिला। यहां तक कि किसी ने ऊपर आंख उठाकर भी देखने की हिम्मत नही की। चुपचाप उसकी भर्त्सना को पीते

रहे ।

मारविवस अपने स्थान पर आराम से बैठ गया और कहा—चलो । गाड़ी चल पड़ी ।

चार घोड़ों की वह गाड़ी मैदान से चलकर एक ढलवां पहाड़ी पर चढ़ गई । जहां से उजड़ा और वीरान देश दिखाई पड़ रहा था ।

पहाड़ी के नीचे दूसरी ओर एक छोटा गॉव था । दूर पर गिर्जे की एक मीनार, एक हवाचक्की, एक शिकारगाह और एक ऊंची चट्टान पर बना किला जो जेल की जगह काम आता था । एक सराय और पड़ाव था । वहां जाकर मारविवस की गाड़ी रुक गई ।

गांव लुटा और उजड़ा हुआ सा था । न कोई अच्छी सड़क थी, न मकान । न बासा, न दुकान । न चहल पहल, न रौनक । गरीब लोग, गरीब गांव, गरीबी का सामान । लोग अपने अपने दरवाजों पर बैठे थे । कोई खाने के लिए प्याज छील रहा था, कोई मैले कुचैले कपड़ों में पेबंद लगा रहा था, कोई घास-पात भोजन के लिए साफ कर रहा था । यही उनके गांव की पैदावार थी । राज्य-कर, गिर्जे का कर, जमीन्दार का कर, यहां का कर, वहा का कर न जाने क्या

क्या उन्हें देना पड़ता था। इस देने के बाद उनके पास क्या बचता था। फिर भी वे अपने पौरुष से जी रहे थे और गांव किसी तरह अपना अस्तित्व बनाये हुए था। धर्मशास्त्र, पुरोहित, राजा और रईसों के पेट से उबरकर गरीबी ही उनके लिए बच गई थी। गांव में बहुत थोड़े से दुबले कमजोर और अधपेट खाना पानेवाले बच्चे थे। कुत्ता बिल्ली कोई दिखाई नहीं पड़ता था। मारक्विस की शानशौकत वाली बग्घी ने गांव के लोगों में एक कौतूहल पैदा कर दिया। वे उसे देखने के लिए दौड़ पड़े। उनमें गांव के पोस्टमास्टर एवं मुखिया महाशय गैबिले तथा एक सड़क बनाने वाला भी था।

मारक्विस ने अपने कोचवान से कहा—जरा उस आदमी को तो बुलाओ।

जो आज्ञा सरकार— कहकर कोचवान मारक्विस के इशारे पर जाकर सड़क बनानेवाले को पकड़ लाया।

मारक्विस—मैं तुम्हारे पास से गुजरा था ?

सड़क बनानेवाला —हां, सरकार।

मारक्विस—तुम काम छोड़कर मेरी गाड़ी की ओर क्यो घूर रहे थे ?

सड़क बनानेवाला—श्रीमान्‌जी, मैं उस आदमी को

देख रहा था।

मारक्विस गरजकर बोला—कैसा आदमी? कौनसा आदमी? मूर्ख तुम मेरी गाडी के नीचे क्यों झांक रहे थे?

सड़क बनानेवाला—अपराध क्षमा हो सरकार। एक आदमी श्रीमान् की गाड़ी के नीचे लटक रहा था।

मारक्विस—यह कैसे हो सकता है? उस आदमी का क्या नाम था? वह कौन था?

सड़क बनानेवाला—सरकार, क्षमा करे। वह इस प्रदेश का रहनेवाला न था। मैंने पहले कभी उसे न देखा था।

मारक्विस—वह मेरी गाड़ी के नीचे लटक रहा था। अब तक तो वह मर चुका होगा।

सड़क बनानेवाला—यही तो मैं भी समझ रहा था। वह इस तरह सिर नीचा किये लटक रहा था।

मारक्विस—तो भी वह कैसा था?

सड़क बनानेवाला—श्रीमन्, वह एक लंबा तगड़ा आदमी था। वह सिर से पैर तक धूल से ढक गया था।

मारक्विस—तुम वज्र मूर्ख हो जो मेरी गाड़ी में लटकते हुए एक चोर को देखते रहे और इतना बड़ा मुंह न खोला। कोचवान, इसे मेरे सामने से हटा दो, इसी क्षण!

कोचवान कड़ककर बोला—सुना कि नहीं, हमारे मालिक की आंखों से ओझल हो जा।

मारक्विस ने गांव के मुखिया श्री गैबिले को बुलाया और कहा—देखिये महाशय गैबिले, अगर वह आदमी रात को गाँव में आ जाय तो उसे गिफ्तार कर लेना। यह भी मालूम करना कि इधर आने का उसका प्रयोजन बुरा न था।

गैबिले अभिवादन करके बोले—यही करूंगा सरकार!

मारक्विस सड़क बनानेवाले को लक्ष्य करके बोला—ऐ मूर्ख, तब यह तो बता कि मेरी गाड़ी रुकने से पहले ही वह कूद गया क्या?

सड़क बनानेवाला—कूद गया सरकार। इस तरह जैसे कोई पानी में फलांग मार जाता हो।

मारक्विस—गैबिले सुन लिया। ध्यान रखना। इस तरह का कोई आदमी आया हो तो।—कोचवान चलाओ। जल्दी करो।

गाड़ी रवाना हुई। वायुवेग से वह चलती चली गई जब तक कि चट्टानी चढ़ाई न आई। एक डेढ़ मील के बाद एक बड़े मकान और उसके आस-पास के छायादार वृक्षों के पार्श्व में वह जा पहुँची। मुख्य द्वार के भीतर से एक मशाल की

रोशनी गाड़ी पर पडी और फाटक उसके लिए खुल गया। मारक्विस ने गाड़ी से नीचे पैर रखते ही कर्मचारी से पूछा—मेरा भतीजा इंगलैंड से आनेवाला था वह अभी नहीं पहुंचा क्या ?

नौकर ने आगे बढ़कर अभिवादन किया और शिष्टाचार पूर्वक कहा—नही, सरकार। हम लोग उनकी प्रतीक्षा कर रहे है।

मारक्विस गाड़ी से उतरकर पत्थर के बने हुए उस भीमकाय महल में प्रविष्ट हुआ। दो सौ साल पहले का बना हुआ भारी भारी पत्थरों की मोटी प्राचीरों और ऊंची छतों वाला वह मकान चांदनी रात में भी डरावना दिखता था। उसकी बाहरी सजावट में भी पूरी तरह पत्थर का ही उपयोग हुआ था। पत्थर की फूल-पत्ती, पत्थर के बेल-बूटे, पत्थर की मूर्तियां, पत्थर के फुहारे, पत्थर की सीढ़ियां, पत्थर की परियां, पत्थर के संतरी, पत्थर के बड़े बड़े शेर, कठोर दृष्टि, कठोर हृदयवाले मालिकों के हृदयहीन शासन की याद दिला रहे थे। ऐसा लगता था कि कोई महादानव अपनी वक्र दृष्टि और भीषण दाढ़ो की छाया निर्माण के समय ही उस पर छोड़ गया था।

ऐसे प्रस्तर-प्रासाद में मारक्विस पीछे पीछे और मशाल लिए उसका भृत्य आगे आगे चल रहे थे। एक के बाद एक कमरा, वराण्डा, आंगन और चौबारा पार करके वे मारक्विस के खास निवासवाले भाग में घुसे । इस ओर बड़े बड़े तीन कमरे थे। एक शयनकक्ष तथा दो कमरे और। इन कमरों में शाही ढंग की सजावट और सुविधा थी। एक कमरे में बड़ी सी मेज पर दो आदमियों के लिए खाना सजाया हुआ था।

उस मेज की ओर दृष्टि फेंककर मारक्विस ने कहा—मेरा भतीजा अभी तक नहीं पहुँचा है। शायद रात को भी न पहुंचे। फिर भी भोजन लगा रहने दो। मैं एक घड़ी में तैयार होकर आता हूँ।

भृत्य ने झुककर आदेश ग्रहण किया। मारक्विस दूसरे कक्ष में जाते जाते रुक गया और बाहर इशारा करके बोला—वह क्या है ?

भृत्य—कहां, सरकार ?

मारक्विस—खिड़की के बाहर। खिड़की खोलो और बाहर भली प्रकार देखो।

भृत्य ने खिड़की खोली। इधर उधर देखा पर कुछ दिखाई

न दिया। आकर अपने स्वामी से बोला—कुछ नहीं सरकार वृक्षों की छाया और सुनसान रात्रि के सिवा बाहर कुछ नहीं है।

मारक्विस—अच्छा, तो खिड़की बंद कर दो।

भृत्य—अभी करता हूँ।

मारक्विस भोजन करने बैठा कि कुछ देर में उसके कानों में गाड़ी के पहियो की खड़खड़ाहट सुनाई दी। वह जब आकर महल के द्वार पर ठहर गई तो उसने कहा—देखो तो कौन आया ?

इसी समय उसके भतीजे के पहुँचने की सूचना दी गई। मारक्विस ने कहा, "उससे कहो कि खाना उसकी प्रतीक्षा कर रहा है।"

दूसरे ही क्षण भृत्य श्री चार्ल्स डार्ने को साथ लेकर आ पहुँचा और कहा—श्रीमन्, चार्ल्स डार्ने महोदय।

मारक्विस—आओ चार्ल्स, अभी तुमने खाना तो खाया न होगा।

चार्ल्स—खा चुका हूँ। धन्यवाद। आप तो कल पेरिस से चले थे ?

मारक्विस—हां, और तुम ?
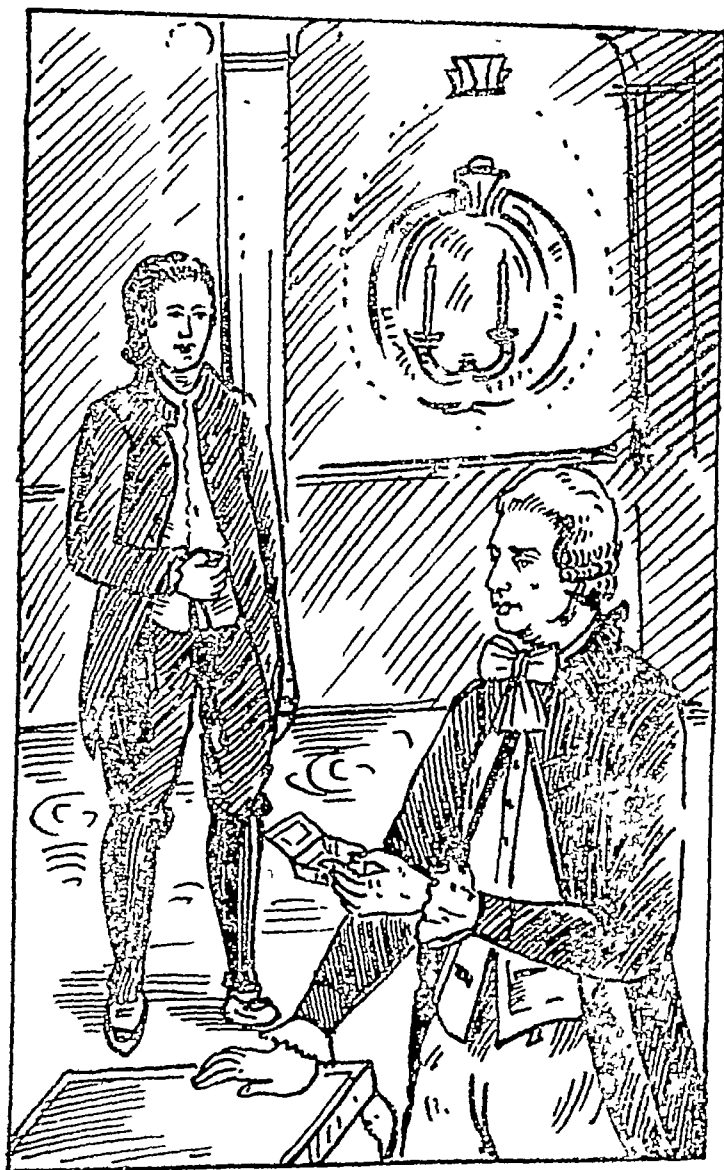
चचा भतीजे

चार्ल्स—मैं सीधा आ रहा हूँ।

मारक्विस—लंदन से ?

चार्ल्स—जी हां।

मारक्विस—तुम तो कभी से आ रहे थे।

चार्ल्स—मैं तो सीधा यहीं आया हूँ।

मारक्विस—खैर। मेरा आशय यह नहीं था कि रास्ते में बहुत समय लगाया बल्कि तुम यहां आने के लिए बहुत दिनों से सोच रहे थे।

चार्ल्स—लंदन में अनेक तरह की झंझटों के कारण आना नहीं हो सका था।

मारक्विस—हां, सच ही तो है।—फिर भृत्य की ओर मुंह करके कहा—तुम अब जा सकते हो।

वह अभिवादन करके कक्ष से बाहर हो गया। चचा भतीजे अकेले कमरे में रह गये तब चार्ल्स ने कहना शुरू किया—मेरे वापस आने का कारण तो शायद आप जानते ही होंगे ? मैं क्यों चला गया था यह भी आपको पता है। उसने तो मुझे बड़ी आफत में डाल दिया था। लेकिन चूंकि वह एक पवित्र उद्देश्य था, इसलिए अगर वह मुझे मृत्यु के मुंह में भी ले जाता तो भी कोई बात न होती।

मारक्विस—नहीं, ऐसा मत कहो।

चार्ल्स—खैर, लेकिन मुझे तो संदेह ही है कि अगर वह मुझे कब्र के किनारे ले जाकर खड़ा कर देता तो आप रोकने की कुछ चेष्टा करते। जहां तक मैं जानता हूँ आप तो यही प्रयत्न करते कि मैं अपने उद्देश्य को प्राप्त न कर सकूं।

मारक्विस ठठाकर हंस पड़ा और बोला—नहीं नही, भतीजे ऐसी बात नहीं है।

चार्ल्स—जो भी हो। मैं जानता हूं आप अब भी हर तरह से मुझे रोकेंगे। आप इस बात की रंच भी परवाह न करेंगे कि वे तरीके उचित हैं या अनुचित।

मारक्विस—चार्ल्स, मैंने तुमसे उस समय भी कह दिया था। तुम्हें वह सब याद होना चाहिए।

चार्ल्स—याद है।

मारक्विस—अच्छी बात है। धन्यवाद।

चार्ल्स—मेरा विश्वास है कि आज सम्राट् से आपके अच्छे रसूक होते तो आप उनसे एक पत्र अवश्य प्राप्त कर लेते जिससे मै जीवन भर के लिए कारागार में भेज दिया जाता।

मारक्विस—हां, यह बहुत संभव है। अपने परिवार

की सम्मान-रक्षा के लिए मुझे तुम्हें इस तरह का कष्ट देना पड़ता।

चार्ल्स—तो मेरा सौभाग्य है कि परसों सम्राट् ने आपसे बहुत रूखा व्यवहार किया।

मारक्विस—सौभाग्य तो नहीं कहना चाहिए भतीजे। कुछ दिन अगर तुम एकांत में रह जाओ तो तुम सुधर जाओगे। लेकिन दुख तो यह है कि पत्र सरलता से नहीं मिला करते। पत्र तो सभी चाहते हैं पर मिलते किन्ही एक दो को ही हैं। यह बहुत बुरा है। आज हर मामले में फ्रांस बदल गया है। बहुत ही बुरा समय आ गया है। हम लोगों की सब सुविधाएं खत्म हो रही हैं। अपने आपको कायम रखना कठिन हो गया है। एक नया दर्शन, एक नई विचारधारा सब कुछ चौपट किये दे रही है।

चार्ल्स—आप दुखी क्यों होते हैं। हम लोगों ने अपने स्वार्थों को इतना गहरा गाड़ लिया है कि पुराने जमाने में और आजकल भी मेरा विश्वास है कि सारे फ्रांस में हमी सबसे अधिक घृणास्पद माने जाते हैं। अपने चारों ओर के देश में एक भी आदमी ऐसा नहीं जिससे हम आंखें मिला सकें। कोई हमें प्रेम और सौहार्द्र की दृष्टि से नहीं देखता। सबकी दृष्टि में हमारी ओर से भय और शंका का प्रवेश हो

चुका है।

मारक्विस—मूर्ख भतीजे, तुम यह नही जानते कि हमारे ख्यातिलब्ध कुल की मान-प्रतिष्ठा के लिए तो यह प्रशंसा की बात है। दमन और आतंक ही तो टिकाऊ चीजें हैं। जब तक इस महल की छतें सही-सलामत हैं और जब तक भय और आशंका विद्रोही दिलो पर छाई हैं तभी तक ये कुत्ते हमारे आगे पूंछ हिलाते हैं। तुम्हारी मैं नहीं जानता पर जबतक मेरे दम में दम है तबतक मै अपने कुल के गौरव की रक्षा करूंगा।

चार्ल्स—चाचाजी, आप नहीं समझते। हम लोगो ने कांटे बोये थे वे अब उग आये हैं। उनकी फसल ही अब हम काट रहे हैं।

मारक्विस—हम लोगों ने कांटे बोये थे ! शाबाश, बेटे।

चार्ल्स—हमारे प्रतिष्ठित परिवार का सम्मान हम दोनों के लिए बहुत महत्व रखता है परन्तु अपने अपने तरीके से। मेरे पिताजी के समय भी हम लोगों ने भूल पर भूल की। हमने हर व्यक्ति को, जो हमारे या हमारे आनन्द के रास्ते मे आया, कष्ट पहुँचाया। उसे कुचल दिया। इस बात की

परवाह नहीं की कि इससे हम अपने चारों ओर नफरत की एक दुनियां पैदा कर रहे हैं। मेरे पिता के जुड़वां भाई और परिवार के उत्तराधिकारी, आप भी तो उनसे अलग नही हैं।

मारविवस—किन्तु उनकी मृत्यु ने हम दोनो को अलग कर दिया है।

चार्ल्स—और मुझे ऐसी व्यवस्था के साथ बांध कर छोड़ दिया है जो मेरे लिए अत्यन्त भयावनी है। हम उसके लिए उत्तरदायी हैं किन्तु विवश हैं। मुझे याद है मेरी स्वर्गस्थ माता ने अंतिम समय मुझे कहा था कि मै दया का विस्तार करूं। उसकी वे आंखें, उसके वे बोल मुझे कभी नही भूल सकते जिनका स्पष्ट आशय था कि मैं लोगों को वह सब कुछ लौटा दूं जो हमारे महिमाशाली कुल ने कभी उनसे छीन लिया था। इस सम्बन्ध मे जब भी मैंने आपसे सहायता की आशा चाही मुझे निराश होना पड़ा। चार्ल्स कह कर दूसरी ओर देखने लगा।

मारविवस—मेरे प्यारे भतीजे, मुझ से इस तरह की आशा करके तुम्हें सदा निराश होना पड़ेगा। मै उस व्यवस्था को कब्र तक अपने साथ ले जाकर अमर कर जाऊंगा जिसमे मैंने जीवन गुजारा है। लेकिन भतीजे, तुम कहीं के नही

रहोगे ।

चार्ल्स—यह जागीर और फ्रांस दोनों मेरे लिए मुझ से दूर है । मैं दोनों को अंतिम नमस्कार करता हूं ।

मारक्विस—क्या वे तुम्हारे हैं जो तुम उन्हें छोड़ रहे हो ? फ्रांस हो भी सकता है, पर जागीर भी तुम्हारी है क्या ?

चार्ल्स—मैं ऐसी जागीर के लिए कभी दावा न जताऊंगा। आप कल मर जायं और मैं इसका उत्तराधिकारी हो जाऊं तो भी मै इसे त्याग दूंगा । मैं जानता हूं कि यह जागीर एक अरराकर गिरनेवाली सड़ी-गली मीनार है। इसका निर्माण गरीबो की आहो, अन्याय, अत्याचार, ऋण, भूख, आंसू, बलात्कार, नग्नता, बंधन और न जाने किन किन उपकरणों से हुआ है। मैं तो ऐसी हस्ती के हाथों में इसे दे देना पसन्द करूंगा जो मानव-अधिकारो को मानती हो और धीरे धीरे इसे उन अभागे लोगो के लिए मुक्त कर दे जिनका इस पर वास्तविक अधिकार है। यह उन्ही लोगों की है और उन्हीं के लिए है । इस जागीर और इस समस्त संपत्ति के ऊपर एक भारी अभिशाप है ।

मारक्विस—लेकिन क्या मैं पूंछूं भतीजे कि तुम

आखिर किस तरह रहोगे ?

चार्ल्स—मैं रहूगा वैसे ही जैसे देश के लाखों लोग रहते हैं। जिनके पीछे कुलीनता का गर्व हैं उन्हें भी आगे उसी तरह रहना होगा। श्रम, पवित्र श्रम किये बिना भविष्य मे किसी का गुजारा नही है।

मारक्विस—जैसे कि इंगलैंड में ?

चार्ल्स—हा जी, वश की मर्यादा को मेरे हाथो से न इस देश मे धब्बा लगेगा, न कही दूसरी जगह।

मारक्विस—तुम्हे इंगलैंड बहुत अच्छा लगता है यद्यपि वहां तुम कोई उन्नति नहीं कर पाये।

चार्ल्स—कैसे कर सकूं जबकि आपने वहाँ भी मेरा जीवन दूभर बना दिया है। फिर भी वह मेरे लिए आराम और सुरक्षा का स्थान हैं।

मारक्विस—हां अंग्रेजो को इसका गर्व है कि उनके देश ने बहुतो को शरण दी है। तुम शायद जानते होगे वहां एक और आदमी गया है—एक डाक्टर।

चार्ल्स—हां।

मारक्विस—अपनी बेटी के साथ।

चार्ल्स—जी हां।

मारक्विस—व्यंग्यात्मक हंसी की मुद्रा में बोला—लेकिन तुम थक गये होगे बेटे। अच्छा जाओ आराम करो । कल सबेरे हम लोगों की बातें होंगी।

फिर जोर से आवाज देकर नौकर को बुलाया और कहा—देखो, चार्ल्स के सोने का जहां प्रबन्ध किया गया है, वहां रोशनी दिखाकर इन्हे पहुँचाओ।

चार्ल्स डार्ने भृत्य के साथ उठकर चला गया। उसके चले जाने पर मारक्विस बड़बड़ाया—और हो सके तो ऐसे भतीजे को बिस्तर के साथ ही जलाकर राख कर देना।

दूसरे दिन सबेरा हुआ। ठंढा कँपाता हुआ सबेरा।

भृत्य ने मारक्विस के कमरे में प्रवेश किया तो वह भय से चीख पड़ा। मारक्विस खून से लथपथ अपने बिस्तर में पड़ा था। एक छुरा उसकी छाती में आरपार हो गया था।

भृत्य की चीख ने उस पत्थर के प्रासाद मे हड़कंप मचा दी। समस्त नौकर-चाकर पहरेदार दौड पड़े। एक नौकर ने भागकर चार्ल्स डार्ने को खबर दी।

मुखिया गेविले उस आदमी की पूछताछ करके लौटे जो पिछली शाम को मारक्विस की गाड़ी के नीचे लटका

हुआ देखा गया था। वे और चार्ल्स डार्ने सब इस दुर्घटना से बुरी तरह भयभीत हो उठे।

गैंविले तो पागलों की तरह चिल्ला पड़ा—हत्या, हत्या, मेरे स्वामी मारविवस की हत्या ! अरे किस दुष्ट ने ऐसा दुष्कृत्य किया !

भृत्य ने सामने आकर बताया—रात मे किसी को पता नहीं चला। अभी मैं खिड़की खोलने आया तो खून की नदी बहती हुई देखी।

गैंविले—और किसी को देखा ?

भृत्य—नही और कोई नही था। एक चिड़िया भी नहीं। वे इसी तरह प्राणहीन पड़े थे। छुरा उनकी छाती में घोंपा हुआ था।

चार्ल्स—मारविवस की लाश पर झुककर और छुरे के नीचे यह क्या है ?

गैंविले—कागज दिखता है। उस पर कुछ लिखा हुआ है।

चार्ल्स—लाओ देखें क्या लिखा है ?

चार्ल्स पुर्जा लेकर पढ़ने लगा। उस पर लिखा था—'इसे जल्दी से कब्र मे दफना दो।' लिखनेवाले के हस्ताक्षर की जगह 'जैंपस' अंकित था।

के स्नेह तरल व्यवहार ने उन्हें बहुत कुछ स्वस्थ बना दिय
था। फिर भी कभी कभी उन्हें अपने बंदी जीवन की या
आ जाती थी। तब वे एक प्रकार की मानसिक विस्मृति
खो जाते थे।

महाशय जार्विस लॉरी इस परिवार के एक निकटत
व्यक्ति बन गये थे। वे कभी कभी इनके घर चक्कर लग
जाते थे। उनके लिए डा० मेनेट और उनकी पुत्री दोनों
हृदय में एक सम्मानपूर्ण स्थान था।

इधर चार्ल्स डार्ने और सिडनी कार्टन दोनो ही युव
कभी कभी आने जाने लगे थे। पूर्व अध्याय में मारक्विस क
हत्या का उल्लेख हो चुका है। उस घटना को भी एक साल
होने आया है। अब चार्ल्स डार्ने इंगलैंड मे जम गये हैं
वे एक स्कूल में फ्रेंच के अध्यापक है। वे कभी कभी कैम्ब्रि
में चले जाते हैं पर शेष समय लंदन में ही व्यतीत करते हैं।
उनका कुमारी लूसी मैनेट से लगाव इस कदर बढ़ गया है
कि डा० मेनेट ने लूसी का विवाह उनके साथ कर देने का
वचन दे दिया है।

सिडनी कार्टन जब कभी इस घर मे आता है तो ए
विचारमग्न की दशा में। कभी बोलने लगता है तो बोलता

ही रह जाता है। चुप रहता है तो चुप ही रह जाता है। एक लापरवाही की मनोदशा में निरंतर मग्न रहनेवाला यह सुसंस्कृत युवक कुछ अजीब सा लगता है। कभी गहन छाया से उसका मानस ढका होता है तो कभी मुक्त प्रकाश से वह जगमगाता दिखाई देता है। उसके लिए वहां आने का कोई समय नियत नहीं है। कभी वह अंधेरी रात में ही उधर चला आता है कभी जगमगाते हुए प्रभात मे। जब शराब उसके उद्भ्रांत मानस को शान्ति नहीं दे पाती तब उसके पैर उसे डा० मेनेट के निवासस्थान की ओर ले चलते हैं। वह क्या करे। वह विवश हो जाता है और बिना विघ्न-बाधाओं की चिन्ता किये वहां आ पहुंचता है।

अगस्त का महीना था। सिडनी कार्टन उद्देश्यहीन पथ पर चला जा रहा था। अकस्मात् उसे कुछ याद आया और उसके पैरों में स्फूर्ति दिखाई देने लगी। वह मुड़कर उन पथ के पत्थरो को पार करने लगा जो डा०मेनेट के निवासस्थान की ओर जा रहे थे। आखिर वह उनके घर के द्वार पर आ खड़ा हुआ।

घर में लूसी अकेली थी। वह इस युवक के साथ कभी भी आराम से बात नहीं कर पाती थी। आज भी जब वह

आया तो उसे कुछ अजीब सा लगा। वह टेबिल के पस एक कुर्सी पर बैठी थी। वहीं से आगन्तुक के चेहरे पर एक दृष्टि डालकर वह अपने काम में लग गई पर आज उसे उसका चेहरा कुछ और तरह का लगा। उसने कहा—कार्टन महाशय, आज क्या कुछ तबियत खराब है ?

"नहीं तो। लेकिन मेरा जीवन ही इस तरह का है कि वह स्वास्थ्य की परवाह नहीं करता, कुमारी जी।"

लूसी—क्षमा कीजिये। मैं एक बात पूछती हूं कि ऐसा क्यों है ? क्या इससे अच्छा जीवन नहीं बिताया जा सकता ? यह बड़े दुख की बात है कि आप—

कार्टन—अवश्य दुख की बात है।

लूसी—तो कुछ अच्छा जीवन बिताने का प्रयत्न करो।

उसने नम्रता से उपरोक्त आग्रह करने के बाद अपनी आँखें उठाकर कार्टन की ओर देखा। उसके अचरज की सीमा न रही जब उसने देखा कि कार्टन की आंखो में आंसू भर आये हैं। साथ ही उसका कंठ-स्वर भी अश्रुसिक्त था जब वह उत्तर में बोला—अब कुछ नहीं हो सकता। अब तो बहुत आगे बढ़ आया हूँ। मैं अब किसी तरह सुधर नहीं सकता। मैं तो पतन के गर्त मे गिरता ही जाऊंगा। गिरता ही

जाऊंगा।

कार्टन टेविल पर झुक गया। उसने अपनी आंखों को दवा लिया और बोला—कुमारी मेनेट, आप मुझे क्षमा करेंगी। मैं नही जानता मैं क्या कहना चाहता हूं। लेकिन मैं जो कुछ कहूंगा उसे क्या आप सुन सकेंगी?

लूसी—महाशय कार्टन, अगर उससे आपका भला हो सकता हो, अगर आप उससे सुखी हो सकते हो, तो वह मेरे लिए भी सुख का कारण होगा।

कार्टन—आपकी मधुर कृपा के लिए आभारी हू।

लूसी—नही महाशय कार्टन, मुझे विश्वास है आपका भावी जीवन बहुत उज्ज्वल है। आप योग्यतम जीवन का आदर्श प्रस्तुत कर सकते हैं।

कार्टन ने चेहरे पर से हाथ हटा लिये और बोला—यह तो आपकी शालीनता है। अपने सम्बन्ध मे तो मैं ही ठीक जानता हूं। मैं आपकी इस कृपापूर्ण अभिव्यक्ति को भी नहीं भूलूंगा। अगर यह संभव होता कि तुम बदले में उस आदमी को प्यार कर सकती जो यहां मौजूद है, जिसका जीवन वेकार और निकम्मा है जो शराबी है जिसने अपने आपको बरबाद कर लिया है और जो यह जानता है

कि अपने साथ वह तुम्हें भी बरबाद कर देगा । तुम्हारे ऊपर रंज और दुर्भाग्य की घड़ियां लादेगा । तुम्हें दुखी, दुर्दशाग्रस्त और लांछित बना डालेगा तुम्हें गिरा देगा और अपमानित कर डालेगा । मैं जानता हूं ऐसे अभागे के लिए आप कोई मृदु-कोमल भावना नही रख सकतीं। मैं उसकी मांग भी नही करता । यह हो भी नहीं सकता । मैं इतने पर भी आपका कृतज्ञ हूँ ।

लूसी—इसके सिवा क्या दूसरा चारा नही ? क्या मैं और तरह से आपकी सहायता नहीं कर सकती ? क्या मैं आपको नई दिशा की ओर नहीं ले जा सकती ? आपके विश्वास का क्या कोई बदला नहीं हो सकता ? आपने मेरे पर विश्वास करके ही अपने हृदय को मेरे सामने खोला है। ऐसा आप और किसी के सामने नही करेंगे। यही क्या आपके जीवन को नई मोड़ देने के लिए पर्याप्त नहीं है ?

कार्टन—नहीं, कुमारी मेनेट, नहीं। अगर तुम और थोड़ा सुनोगी तो इतना भी नहीं कर सकोगी। मैं तुम्हे केवल यह बताना चाहता हूं तुम मेरी आत्मा का अन्तिम स्वप्न थीं । पिता के साथ तुम्हें देखकर मेरे मन में पुरानी इच्छाएं एक बार फिर जग गई थी । मैं बिल्कुल बेखबर था, और

यही समझता था कि जिस तरह की जिन्दगी में मैं उतर आया हूँ उसमें वे सुन्दर स्वप्न और सुनहरी कामनाएं कभी की मर चुकी हैं। अपने जीवन के उस अतीत प्रभात के रंगीन दृश्य मेरे मानस में फिर उदय होने लगे और मेरे भीतर नये और पुराने में संघर्ष होने लगा। लेकिन यह सब सपना था, कोरा सपना। सत्य से दूर, तथ्य से दूर। आंखों से वह नशा शीघ्र ही दूर हो गया। सपना टूट गया और मैं भिखारी जहां सोया था, वही आँखे मलकर उठ बैठा।

लूसी--क्या उसका एक अंश भी शेष नहीं रह सकता? कार्टन महाशय, सोचो तो जरा।

कार्टन— नहीं।

लूसी—तो क्या मैं तुम्हारा कुछ भी हित नहीं कर सकती? क्या तुम से कोई आशा नही हो सकती?

कार्टन—कुमारी मेनेट, मुझसे कुछ हो सकता है तो यही कि मैं इस मधुर स्मृति को अपने हृदय में जीवन भर पोसता रहूँ। मैंने अपने हृदय की बात तुम्हें बता दी जो आज तक किसी को नहीं मालूम है और न कभी मालूम होगी। यही एक चीज है जो मुझ में शेष है और जो तुम्हारी दया की अधिकारिणी है। क्या तुम मुझे यह

आश्वासन दे सकोगी कि अपनी जिस विश्वास-निधि को आज मैंने तुम्हें सौंपा है उसको तुम सुरक्षित रखोगी ? कोई दूसरा उसे बँटा न सकेगा ?

लूसी—अगर उससे आपको कोई सहारा मिल सके तो मैं वैसा ही करूंगी।

कार्टन—सच ?

लूसी—निश्चय जानो।

कार्टन—अपने प्रियतम से भी सुरक्षित ?

लूसी—अवश्य। चीज तो आपकी है और आपने मुझ पर विश्वास करके मुझे दी है। मेरा कर्त्तव्य है कि मैं उसकी रक्षा करूं, उसका मान रखूं।

कार्टन—धन्यवाद। परमात्मा तुम्हें सुखी रक्खे। कुमारी मेनेट, याद रखना इस दुनियाँ में एक आदमी है जो तुम्हारी प्रियतम वस्तु की रक्षा के लिए सहर्ष अपने प्राण दे सकेगा। अच्छा, विदा !

कुमारी मेनेट कुछ उत्तर न दे पाई और कार्टन उसके घर से निकल गया।

चार्ल्स डार्ने और डा० मेनेट

उस दिन लूसी कहीं बाहर गई थी। डाक्टर मेनेट अकेले बैठे थे। पिछले जीवन की एक स्मृति उनके दिल और दिमाग में छा रही थी। उसी समय चार्ल्स डार्ने ने घर मे प्रवेश किया'।

डा० मेनेट—आओ चार्ल्स, आज तो कई दिनो में आये।

चार्ल्स—हां जी, आप अच्छे तो हैं ? लूसी मेनेट कहाँ है ? दिखाई नहीं दे रही।

डा० मेनेट—वह बाहर गई है, पर शीघ्र ही आ जायगी। आओ, बैठो तो सही।

चार्ल्स डार्ने उनके सामने पड़ी कुर्सी पर बैठ गये और बोले—यह तो अच्छा ही हुआ कि आप अकेले मिल गये।

डा० मेनेट—क्यो ?

चार्ल्स—मैं आपसे एकांत मे ही कुछ बात करना चाहता था। आप आज्ञा दें तो···

डा० मेनेट—हा हां, मेरे पास आ जाओ और कहो।

चार्ल्स—मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि जबसे हमारा परिचय हुआ है हमारे सम्बन्ध मधुरतर होते रहे हैं। उन्हें और दृढ़ देखने के विचार से मैं ··

डा० मेनेट—तो लूसी के बारे में कुछ कहना चाहते हो ?

चार्ल्स—जी हां। मैं आपकी पुत्री को प्रेम करने लगा हूं। उसके गुणों ने मुझे विमोहित कर लिया है।

डाक्टर मेनेट—लूसी से तुम्हारी बातचीत हो चुकी है।

चार्ल्स—नही।

डा० मेनेट—पत्र व्यवहार ?

चार्ल्स—नही।

डा० मेनेट—मेरे कारण तुम ऐसा नहीं कर सके। यही मैं समझ सकता हूँ।

चार्ल्स—आपको और लूसी को देखकर कोई भी यह नही चाहेगा कि वह उसको आपसे छीन ले जाय। मैं भी अपने प्रेम को आपके और लूसी के बीच में बाधक बनाकर नहीं लाना चाहता। फिर भी मैं आपको यह विश्वास दिलाने का साहस करके आया हूं कि मैं उसे हृदय से प्यार करता हूं।

डा० मेनेट—मैं तुम्हारे कथन पर विश्वास करता हूँ।

चार्ल्स—किन्तु मैंने जो कुछ आपसे कहा है अगर उसके कारण आपको लूसी से अलग होना पड़े तो मैं अपने कथन को वापस ले लूंगा। लूसी आपकी बच्ची है और वैसी ही बनी रहेगी। बल्कि एक और बच्चा उसके कारण आपको मिल जायगा। वे दोनो आपके जीवन के साथ आकर घनिष्ठता से जुड़ जायंगे। काश, यह सम्बन्ध संभव हो सके।

डा० मेनेट—मैं तुम्हारी भावना और तुम्हारे हृदयावेग को समझ रहा हूं। तुम्हारे प्रेम की गहराई की थाह पाना संभव नही है। मैं उस पर पूरी तरह भरोसा रखता हूँ।—अच्छा यह तो बताओ कि लूसी भी तुम्हे प्रेम करती है ?

चार्ल्स—कह नहीं सकता। उसके हृदय की बात वही जान सकती है।

डा० मेनेट—तो तुम इस सम्बन्ध मे मेरी सहायता चाहते हो ?

चार्ल्स—नही। पर यह तो मैं चाहता ही हूँ कि यदि आप मेरे प्रस्ताव को उचित और सच्चा समझते हं तो मेरे लिए कुछ करेंगे, यदि कोई दूसरा···

घनघोर घटाएँ

चार्ल्स डार्ने और लूसी मेनेट के विवाह में कोई अड़चन न आई। विवाह के बाद उनके एक सुन्दर कन्या भी हो गई। इससे डा० मेनेट का जी और प्रसन्न रहने लगा। पूर्व जीवन के कष्ट उनके लिए आज अतीत की वस्तु हो गये। स्वतन्त्र नागरिक की तरह गर्व से वे जहां चाहें आ जा सकते थे।

इधर फ्रांस के आकाश मे जनक्रांति की घटाएं घनी होती जा रही थीं। प्रतिदिन कोई न कोई ऐसे समाचार समुद्र को पार करके आते थे जिससे सुननेवालो को चिन्ता होती थी।

उस शाम को लूसी और चार्ल्स बैठे थे। वे इधर उधर की चर्चा कर रहे थे कि चार्ल्स ने कहा—आज लॉरी महाशय नहीं आये। अब क्या आयेंगे। अब तो काफी देर हो गई है।

लूसी—आना तो चाहिए। वे एक बार आये बिना कब रहते है। आज शायद बैंक मे कोई काम हो गया होगा, पर आयेंगे अवश्य। बच्ची की सालगिरह के दिन वे न

यें यह कैसे हो सकता है ?

चार्ल्स—हां सुना तो मैंने भी था कि आज फ्रांस से छ विशेष समाचार बैंक में आये हैं।

लूसी—क्या समाचार हो सकते हैं ?

चार्ल्स—लो वे आगये लॉरी महाशय आ गये। ाइये, नमस्ते साहब।

लॉरी—नमस्ते जी। आज तो बड़ी उमस हो रही है।

चार्ल्स—हम लोग समझ रहे थे कि शायद अब आप आयें।

लॉरी—मेरा भी यही अनुमान था कि आज की रात क में ही काटनी पडेगी। इतना काम, इतना काम कि बस त पूछो। सारे दिन एक क्षण का अवकाश नहीं मिला, र आश्चर्य की बात यह कि सारा काम फ्रांस से ही आ रहा। ऐसा लगता है कि लोग अपनी सम्पत्ति और जायदाद जल्दी से जल्दी फ्रांस से बाहर कर लेना चाहते हैं।

चार्ल्स—यह तो बहुत बुरा है।

लॉरी—तुम तो बुरा ही कहते हो। मैं कहता हूँ कि यानक उथल-पुथल होने वाली है। डाक्टर मेनेट कहां हैं ?

मैं यह रहा कहिए, नमस्कार—कहते हुए उसी क्षण

डाक्टर मेनेट घर में घुसे।

लॉरी—नमस्कार डाक्टर साहेब। आइये बैठिये। फ्रांस से समाचार आ रहे हैं कि—

डा० मेनेट—अच्छे हैं कि बुरे ?

लॉरी—बहुत बुरे। बहुत भयानक। सुना है कि फ्रांस के हर गांव और हर कस्बे से लोगो के दल के दल पेरिस की ओर उमड़ रहे हैं। उन सब के पास हथियार हैं। पेरिस की सड़कों पर छुरे, चाकू, कुल्हाड़ी, बंदूकें, तलवारें, कटारें ही दिखाई पड़ती हैं। हथियारों से लैस उस भीड़ ने कुलीनों और बड़े बड़े अमीरो को घेर लिया है। उच्च वर्ग के धनिक स्त्री पुरुष और बच्चे उनकी हिरासत मे हैं। कहनेवाले तो यहां तक कहते हैं कि निर्दयतापूर्वक उनका वध किया जा रहा है। इस समय वहां कुछ भी सुरक्षित नहीं है।

डा० मेनेट—आखिरकार वह समय आ गया। वह तूफान जो बहुत दिनो से हमारे सिरो पर घुमड़ रहा था। कोई परवाह नही कि परिणाम क्या होता है।

लॉरी—परिणाम कहां, अभी तो उस महाप्रलय का आरम्भ है जिसमें सारा फ्रांस बह जायगा। रक्त और मृत्यु, रक्त और मृत्यु, ओह !

चार्ल्स—आज की रात कितनी भयावनी है !

लूसी—पिताजी, महाप्रलय हम लोगों के समीप आता न पड़ता है।

डा० मेनेट—मैं तो हृदय से उसका आवाहन करता हूं ! उस महाप्रलय का पुजारी बनकर मैं उसमे समा जाना हता हूँ। ओहो-हो !

लूसी आतंकित-सी चार्ल्स की ओर खिसक गई। लॉरी ाशय वृद्ध डा० मेनेट के दुर्दान्त पौरुष की ओर आश्चर्य ताकने लगे। चार्ल्स गंभीर विचारो की वैतरणी मे खो ा।

पेरिस की कलवरिया

धूल से सिर से पैर तक नहाये हुए दो आदमी कलवरिया प्रविष्ट हुए। उन्हें देखने के लिए वहां मौजूद सभी लोगों आंखें उठाईं पर कोई बोला नहीं।

भीतर आनेवालो में एक कलवरिया का मालिक डिफार्ज ा। उसने सबको अभिवादन करते हुए कहा—मौसम

बहुत खराब है।

इस पर हरएक आदमी ने अपने पास बैठे हुए साथी पर नजर डाली फिर आंखें नीची करली। जैसे उसकी बा का मौन समर्थन किया हो। एक आदमी वहां से धीरे बाहर चला गया।

"मेरी रानी", डिफार्जे ने अपनी पत्नी को संबोधि करके कहा—"मैं इस सड़क बनानेवाले के साथ कई मी का सफर करके आ रहा हूँ। इससे मेरी राह मे अचान भेंट हो गई थी। बहुत अच्छा आदमी है यह जैक्स। इ कुछ पीने को दे सकोगी?"

इस समय दूसरा आदमी उठा और चुपचाप खिस गया। श्रीमती डिफार्जे ने एक गिलास में शराब डालक सड़क बनानेवाले को दी। वह उसे लेकर पी गया औ अपनी बगल में दबाई हुई पोटली में से एक सूखी भूरी रोटी निकाली और बड़े इतमीनान से उसे कुतरने लगा।

इसी समय तीसरा आदमी उठा और चुपचाप निकल गया। डिफार्जे ने भी शराब का एक घूंट पीकर अपने गले को सींचा और साथी से बोला—दोस्त, पी चुके?

"हां, धन्यवाद।"

"तो चलो तुम्हारे ठहरने की जगह बता दूं। एक बड़ी आराम की कोठरी है। शांत एकांत, खूब नींद आयेगी।"

चलो—कहकर जैक्स उसके साथ साथ चल पड़ा।

कई साल पहले एक बूढ़ा आदमी बेंच पर बैठकर वहीं रात दिन जूते बनाया करता था। आज वहां वह बूढ़ा न था न जूते बनाने का कोई सामान। अभी अभी कलवरिया में से जो तीन आदमी चुपचाप एक एक कर खिसक आये थे वे ही तीनों वहां मौजूद थे। डिफार्ज अपने साथी के साथ उस घर में घुसा और सावधानी से किवाड़ बंद कर दिये। इसके बाद दबी और धीमी आवाज में बोला—"जैक्स प्रथम, जैक्स द्वितीय, जैक्स तृतीय मैं जैक्स पंचम इस गवाह जैक्स चतुर्थ को आपके सामने लाया हूं। बड़ी मुश्किल से मैं इसे खोजकर आप लोगों के सामने ला सका हूं।—जैक्स चतुर्थ, कृपया सारी बात सुनाइये।"

सड़क बनाने वाले, जैक्स चतुर्थ ने अपनी नीली टोपी हाथ में ले रक्खी थी, उससे अपने माथे की धूल झाड़कर बोला—कहां से शुरू करूं महाशय?

प्रारम्भ से—डिफार्ज ने कहा।

इस पर सड़क बनानेवाले ने पूरे विवरण के साथ उस

पुरानी घटना को दोहराया कि किस तरह उस दिन मारक्विस की गाड़ी के नीचे लटकते हुए उसने गासपर्ड को देखा था। सूरज डूब रहा था। मारक्विस की गाडी धीरे धीरे पहाड़ी पर चढ़ रही थी। वह गाड़ी के नीचे जंजीर पकड़े लटक रहा था। पीछे जब मारक्विस ने मुझसे पूछा तो मुझे बताना पड़ा था कि वह एक लंबा तड़ंगा आदमी था।

जैक्स दूसरे ने उसे रोककर कहा—तुम्हे ऐसा न कहना चाहिए था। कह देते नाटे कद का था।

इस पर जैक्स चौथे ने कहा—अरे भाई, तब तक मुझे उसके इरादे का थोड़े ही पता था। मारक्विस की हत्या तो उसने बाद मे की थी।

जैक्स पंचम बोला—यह ठीक कह रहा है। उसे रोको मत, कहने दो।

जैक्स चतुर्थ—उसके कुछ अरसे तक वह खोया रहा। करीब बारह महीने बाद मैं फिर पहाड़ी की सड़क पर काम कर रहा था। अचानक मैंने छः सिपाहियों को पहाड़ी पर देखा। उनके बीच में हथकड़ियो मे जकड़ा हुआ एक लंबा तड़ंगा आदमी था।

जैक्स प्रथम उत्तेजित होकर—फिर, अरे फिर !

जैक्स चतुर्थ—वे चलते चलते मेरे बिल्कुल पास आ गये। उसकी हथकड़ियों की आवाज मेरे कानों को पार कर गई। उस समय मैंने उसे और उसने मुझे देखा परन्तु इस तरह जैसे हम एक दूसरे को जानते ही न हों। एक सिपाही ने कड़क कर कहा—जल्दी चल। कब्र बेचैनी से तेरा इंतजार कर रही है। वे उसे गांव में से होकर कैदखाने में ले गये।

जैक्स द्वितीय—लोगों ने उसे ले जाते हुए देखा होगा?

जैक्स चतुर्थ—हां हां, सारे गांव ने। अगले दिन कैदखाने के जंगले में मैंने उसे खड़े देखा था, खूँखार और भयानक। कई दिन तक वह उसी तरह बंद रहा। गांव के लोग जब पनघट पर इकट्ठे होते तो आपस में कानाफूसी करते और कहते—यद्यपि उसे मौत की सजा हो चुकी है पर फांसी पर न लटकाया जायगा। उसके बच्चे की मौत ने उसे पागल कर दिया था। सम्राट् की सेवा में इस आशय का प्रार्थना-पत्र पेश किया गया बताया जाता है। पर कुछ निश्चय नहीं, शायद हो भी शायद न भी हो।

जैक्स प्रथम—सुनो भाई। इस बात के गवाह तो हम सभी हैं। हमारी आंखों के सामने सम्राट् ने वह प्रर्थना-पत्र

उसकी छाया श्रीमती डिफार्जे पर पड़ी। उसीसे उसने जान लिया कि यह नया पंछी है। उसने बुनाई का सामान एक ओर रख दिया और गुलाब का फूल लेकर जूड़े में खोंसते खोंसते उधर गौर से देखा।

उस समय एक अजीब ही दृश्य देखने में आया। ज्योंही उसने गुलाब जूड़े में खोंसा, ग्राहकों ने बातचीत बन्द कर दी और एक एक कर धीरे धीरे खिसकने लगे।

नवागंतुक ने सामने पहुँचकर कहा—नमस्ते श्रीमतीजी।

नमस्ते जी—कहकर श्रीमती डिफार्जे मन ही मन उस वर्णन से उसकी आकृति को मिलाने लगी जो उसके पति ने सुनाया था।

नवागंतुक ने बड़ी नम्रता से कहा—श्रीमती जी क्या आप मुझे एक गिलास बढ़िया शराब दे सकेंगी ?

तुरन्त एक गिलास उसकी सेवा में पेश किया गया। उसे पीकर उसने शराब की बहुत प्रशंसा की। श्रीमती डिफार्जे भांप गईं कि शराब की तारीफ के बहाने वह उससे घनिष्ठता प्राप्त करना चाहता है। उन्होंनें अपनी बुनाई के सामान को उठा लिया और उसी में संलग्न हो गईं। नवागंतुक ने एक बार चारों ओर दृष्टि दौड़ाई। हरएक

वस्तु को अच्छी तरह देखा फिर बोला—आप बहुत कुशलता से बुनती हैं।

"हां मेरी आदत पड़ गई है।"

"कितनी साफ और सुन्दर बुनाई है!"

"आपको पसन्द है।" कहकर श्रीमती डिफार्जे ने मुस्कराते हुए उसके चेहरे पर दृष्टि डाली।

"सचमुच। और क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आप किस लिए इतना श्रम कर रही है?"

"एक शौक है जी।"

"उपयोग नहीं?"

"हो सकता है किसी दिन काम भी आ जाय।"

इसी समय कलारी में दो आदमी घुसे पर श्रीमती डिफार्जे के जूड़े मे गुलाव देखकर चौकन्ने हो गये और उल्टे पांव किसी दोस्त को देखने के बहाने बाहर चले गये। जो पहले से मौजूद थे वे पहले ही जा चुके थे। जासूस बहुत सतर्क था पर कोई ऐसी चीज उसकी निगाह में नहीं आई जिससे वह किसी नतीजे पर पहुंचता। आखिर वह बोला—आजकल कारवार मंदा दिखता है?

"हां जी। लोग बेहद गरीब है।"

उसे मूल्य चुकाना ही पड़ेगा। उसे इतना तो मालूम ही होगा कि इसका मूल्य क्या होगा, वही उसने चुका दिया।—लो, मेरे पति भी आ पहुँचे।

ज्यों ही कलारी के मालिक डिफार्जे ने भीतर प्रवेश किया, जासूस ने झुककर उसे अभिवादन किया और मुस्कराते हुए बोला—नमस्ते जैक्स !

डिफार्जे रुक गया और उसके चेहरे की ओर ताकने लगा। जासूस ने फिर दोहराया—नमस्ते जैक्स !

डिफार्जे ने उत्तर में कहा—आप धोखा खा रहे हैं जनाब। आप किसी और के ख्याल में हैं। मैं वह नहीं हूं। मेरा नाम अर्नेस्ट डिफार्जे है।

"तब भी कोई हर्ज नहीं है। एक ही बात है। खैर, नमस्कार।"

डिफार्जे ने भी रुखाई से उत्तर दिया—नमस्कार।

जासूस—मैं श्रीमती जी से कह रहा था कि लोग बताते हैं कि बेचारे गास्पर्ड के विषय में यहां सहानुभूति और विरोध का अंत नही है। और यह ठीक है, आखिर लोग ··

डिफार्जे—मुझसे तो किसी ने कुछ नहीं कहा। मुझे तनिक भी कुछ मालूम नही है।

डिफार्जे वहां से हटकर दूकान में घुसा और अपनी स्त्री की कुर्सी के हत्थे पर हाथ रखकर खड़ा हो गया। जासूस जैसे कुछ देख ही नहीं रहा था, इस प्रकार बना रहा।

डिफार्जे ने अपने स्थान पर खड़े खड़े कहा—आप यहां से बहुत अच्छी तरह परिचित जान पड़ते हैं, हम लोगों से भी अधिक।

"ऐसी कोई बात नहीं है। पर यहां के अभागे लोगों के प्रति मेरे मन में कुछ अजीब मोह सा है। इसलिए आशा करता हूं कि यहां से अच्छी तरह परिचित हो सकूंगा।"

"यह बात है!" डिफार्जे गुनगुनाया।

"डिफार्जे महाशय, आपसे बातचीत करने से मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि आपके नाम के साथ कई बड़ी दिलचस्प घटनाओं का सम्बन्ध रहा है।"

"हो सकता है।" डिफार्जे ने रुखाई से कहा।

"हां जी, जब डाक्टर मेनेट मुक्त हुए थे तो वे आपही की सिपुर्दगी मे रहे थे। मुझे उन तमाम बातों की जानकारी है।"

"हां हां, हुआ तो ऐसा ही था।" डिफार्जे ने उत्तर दिया।

"अगर ऐसा ही..."

"तो क्या हो...?" श्रीमती डिफार्जे ने गुर्राते हुए कह

"यही कि अगर ऐसा हो और हम लोग वह दिन देखने लिए जिंदा रहें। तो मैं चाहता हूं कि उसका पति फ्रांस भूमि में पैर न रक्खे। उसका भाग्य उसे बाहर ही रखे।"

"उसके पति का भाग्य ? वह तो उसे वहीं ले जाय जहाँ उसकी आवश्यकता है, और अन्त में उसका वही अ होगा इसमें अन्तर नहीं पड़ सकता। कोई उसे नहीं ब सकता। उस वंश को तो निर्मूल होना ही पड़ेगा।"

इतना कहकर उसने अपना बुनाई का सामान एक ओ रख दिया और जूड़े में खोंसा हुआ गुलाब का फूल उता लिया। इसके बाद उसकी कलारी में सदा की भांति आवा जाई शुरू हो गई।

एक अनुरोध

विवाह के बाद जब लूसी और डार्ने घर लौटे तो उन्हें बधाई देने के लिए जो पहला व्यक्ति मिला, वह थे

म० सिडनी कार्टन उसी तरह लापरवाही से झूमते हुए और बेखबर। बिखरे बाल और अस्तव्यस्त कपड़ों में वे आकर उपस्थित हो गये, परन्तु इस वेशभूषा में भी उनकी आकृति विश्वस्त लग रही थी।

थोड़ी देर में जब मौका लगा तो वे डार्ने को एक ओर ले गये और बोले—भाई डार्ने, मेरी इच्छा है कि हम दोनों मित्र बन जायें

डार्ने—तो क्या हम मित्र नही हैं ?

कार्टन—नही नहीं, इस तर नहीं। केवल कहने के लिए नहीं।

डार्ने हँस पड़े और बोले—तो किस तरह भाई। मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा।

कार्टन—वही तो, मैं जो बात कहना चाहता हूं वह कहने में आती ही नहीं है।—तुम्हें एक दिन की याद है जब मैं रोज से अधिक पिये हुए था।

डार्ने विनोद करते हुए बोले—हां उस दिन को कैसे भूल सकता हूं जब तुमने मुझे यह कहने को बाध्य किया था कि तुम नशे में हो।

कार्टन—मुझे भी याद है। उस दिन मैं नशे में गड़गप्प

चर्चा चलाते हुए कहा—कार्टन भी कैसा अजीब लापरवाह और उच्छृंखल तबियत का आदमी है।

उन्होंने कुछ बहुत कटु आलोचना नहीं की और वैसी उनकी मंशा ही थी। एक साधारण सी चर्चा कर वे यह बताना चाहते थे कि कार्टन का व्यक्तित्व न जा किस तरह का है। अगर उन्हें यह पता होता कि उस चच से उनकी पत्नी के कोमल हृदय को ठेस लगेगी तो कदाचित मुंह भी न खोलते।

रात को जब दोनों मिले तो डार्ने ने प्यार से कहा—क्यों आज उदास-सी हो लूसी ?

"हाँ, मेरा मन भारी सा हो रहा है प्रिय"—लूसी उत्तर दिया।

डार्ने—ऐसा क्यों है प्रिये लूसी ?

लूसी—बात यह है कि आप विशेष जिज्ञासा न कर तो कहूँ ?

"हां हां, तुम कहो। जितना आवश्यक हो उतना ही कहो।"

"प्रिय चार्ल्स, मेरा ख्याल है कि बेचारे कार्टन हम लोगों की इससे भी अधिक आदर-भावना और करुणा के

पात्र है। आपने उनके प्रति संध्या समय जो कुछ दर्शाया था उससे भी कहीं अधिक।"

"यह तो ठीक है मेरी रानी। परन्तु तुम ऐसा क्यों कहती हो ?"

"यही तो मत पूछो। मैं समझती हूं कि मैं जानती हूं, बस इतना ही मान लो।"

"खैर तुम जानती हो तो ठीक है। फिर बताओ हमें क्या करना होगा ?"

"मैं आपसे प्रार्थना करूंगी कि आप उनके प्रति सदैव मृदु एवं उदार साबित हो। कभी वे गलती भी कर बैठें तो उन्हे क्षमा कर दें। आप यह विश्वास कर लें कि वे बड़े ही सहृदय व्यक्ति हैं। वे अपने हृदय की बात कभी कभी ही कहते हैं। इस जीवन में उनके हृदय में बहुत से गहरे गहरे घाव लगे हैं। मुझे उनका कुछ आभास है।"

" इस बात का मुझे स्वप्न में भी ख्याल न था। मैंने अनजान मे उनके प्रति बहुत बड़ा अन्याय किया है।"

"मेरे स्वामी, मेरा ख्याल है कि उनका हृदय तार तार हो चुका है और वे उस हद तक आगे बढ़ गये हैं कि अब उनके सुधार की कोई आशा नहीं रह गई है। फिर भी उनसे

यह आशा तो की जा सकती है कि वे कोई घृणित और जघन्य कर्म न करेंगे। उनके द्वारा जो कुछ भी होगा वह अनुपम, महान और स्पृहणीय ही होगा।"

उस समय यदि कोई पासवाली उस अंधेरी गली से गुजर रहा हो और उसने इस निश्छल अभिव्यक्ति को सुन लिया हो तो उसके होठों पर ये शब्द अवश्य बोल उठते, "परमात्मा उसे उसकी मधुर अनुकंपा के पुण्यफल के लिए सुखी रक्खे।"

वह तूफानी दिन

महीने बीत गये। बरसें बीत गईं। लूसी की कन्या छोटी लूसी छः साल की हो गई। वह घर में दौड़ी दौड़ी फिरती थी।

सिडनी कार्टन को इस घर में बिना बुलाये किसी भी समय आने की छूट थी। किन्तु वह साल भर में केवल छः सात बार ही आता था। जब आता था तो छोटी लूसी उसके गले में अपनी बाहे डाल देती थी। वे दोनों इस कदर

हिलमिल गये थे कि जिसका कोई हिसाब नहीं।

सिडनी कार्टन उसी तरह शराब में धुत् रहता था और वैसा ही अपने शरीर और व्यक्तित्व के प्रति उदासीन परन्तु जब वह इस घर में पैर रखता था उस समय नशे में न होता था। छोटी लूसी की छठी वर्षगांठ के करीब फ्रांस से दिन पर दिन बहुत भयंकर समाचार आने लगे। ऐसा लगने लगा जैसे समुद्र पार भूकंप आने की तैयारियां हो रही हों। इस शांतिमय गृहस्थी के मधुर वातावरण में कभी कभी घनघोर काली घटाएं उमडती प्रतीत होती थी और ऐसा लगता था कि सागर की उत्ताल तरंगें उठकर वहां तक आ जायेंगी।

जुलाई आधी बीत चुकी थी। १७८९ की जुलाई की उस रात को वृद्ध लॉरी महाशय देर से बैंक से लौटकर आये। घर की खिड़की के सामने वे लूसी और उसके पति के साथ बैठकर कहने लगे—आज कैसी डरावनी और गर्म रात है। मैंने तो समझ लिया था कि आज रात को बैंक में ही रहना पड़ेगा। ओह, कितना काम है! सुबह से शाम तक काम। रात को भी काम। एक क्षण की फुर्सत नहीं। न जाने क्या होने वाला है। फ्रांस मे लोगों का विश्वास

उठ गया है। शायद लोग पागल हो गये हैं। अपनी किसी प्रकार की संपत्ति को वे वहां सुरक्षित नहीं समझते। सोना चांदी, माल, असबाब सब कुछ इंगलैंड भेज देना चाहते हैं।

यह तो बड़े बुरे लक्षण हैं।—चार्ल्स डार्ने ने कहा।

हां ऐसा लगता है कि ज्वालामुखी फूटने के सभी आसार जुट गये हैं। अब क्षणों की ही देर है। पेरिस में लोग महामृत्यु का तांडव देखने की प्रतीक्षा में व्याकुल हो रहे हैं। प्रतिपल समुद्र पार से एक ही ध्वनि सुनाई पड़ती है—क्रांति, क्रांति, महाक्रांति।—कहकर लॉरी महाशय अपनी कुर्सी पर लुढ़क रहे। लूसी और डार्ने भी आनेवाली विपत्ति की कल्पना में खो गये।

जब लन्दन में डा० मेनेट के घर में खिड़की के सामने ये लोग इस प्रकार की चर्चा कर रहे थे उस समय पेरिस के सेंट एंटनी मुहल्ले में एक भीषण तूफान उठ रहा था। तेग-तलवार, छुरे-कटारी, भाले और बल्लम चारों ओर चमक रहे थे। सेंट एंटनी के हृदय से आकाश को चीरनेवाली गर्जना उठ रही थी। लोगों की भुजाओं का एक महासागर लहरा रहा था। जिसके हाथ में जो हथियार आ गया था उसी को लिये वह निकल पड़ा था। गोला-बारूद से लगाकर

लाठी और डंडा तक हजारों किस्म के हथियार निकल आये थे। सड़क पर आने जानेवाला कोई भी आदमी या औरत विना हथियार के न था।

कहा से इतने हथियार आ गये थे ? कौन इस प्रकार उन्हे हर आदमी को बांट रहा था इसका उत्तर कोई नहीं दे सकता था। परन्तु गोली, बारूद, कुल्हाड़ी, फरसे, छुरी-कटारी लोहे के छड़ और लाठी खुले आम बँट रहे थे। न मालूम धरती के भीतर का कौनसा शस्त्रागार अचानक खोल दिया गया था। सेंट एंटनी के मुहल्ले की नाड़ी ज्वर के वेग से धड़धड़ कर रही थी। उसका हृदय उछल रहा था। उस स्थान का हर व्यक्ति प्राणों को तिनके के वरावर समझ रहा था और हथेली पर लिए फिरता था। मौत को गले लगाने के लिए दुनियां उमड़ रही थी।

जैसे गर्म पानी के चश्मो का उवाल किसी एक खास जगह से आता है उसी तरह पेरिस के इस ज्वालामुखी का केन्द्र डिफार्ज की कलारी थी। भारी भारी मटकों की दारू का एक एक बूंद आज उस मतवाली सेना के सिपाहियों को दिया जा रहा था जिन्हे डिफार्ज खुद गला फाड़कर बढ़ावा दे रहा था। वह शराब वांटता था, बारूद वांटता था, हथियार

बांटता था, आदेश देता था, आदमियों को खींचता था, आदमियो को आगे ढकेलता था। एक के हथियार लेकर दूसरे को देता था। दूसरे के छीनकर तीसरे को देता था। उन्हें क्या करना है, किसके इशारे पर जीवन होम देना है यह बताता था। इस प्रकार की प्रलयकारी हलचल में वह सबसे आगे था, सबसे प्रमुख था।

वह ऊंचे स्वर से गर्जना कर बोला—जैक्स तृतीय, तुम यहां मेरे पास ही रहो। जैक्स प्रथम और जैक्स द्वितीय तुम बिखर जाओ और जितने साथी मिल सकें उन्हें अपनी अपनी कमान में रक्खो।—और अरे, मेरी स्त्री कहां है?

श्रीमती डिफार्ज युद्ध के बाजे की तरह गंभीर आवाज में बोली—मैं यह रही। इधर क्यों नहीं देखते।

उसके दाहिने हाथ में एक भारी कुल्हाड़ी थी। कमर में एक पिस्तौल लटक रहा था और एक तीखी कटार खोसी हुई थी। रण चंडिका की तरह यह स्त्री उस सैन्य-समूह मे साहस और उत्साह का तूफान उठाती थी।

तुम कहां जा रही हो?—डिफार्ज ने पूछा।

अभी तो मैं तुम लोगों के साथ चल रही हूँ। बाद मे स्त्रियों की सेना के आगे आगे मैं रहूँगी।—श्रीमती डिफार्ज ने कहा

डिफार्जे आकाश के हृदय को कंपानेवाली घरघराती आवाज मे चिल्लाया—तो साथियो बढ़ो। हम तैयार हैं। देशभक्तो के पुनीत तीर्थ बैस्टिल को चलो। बैस्टिल को चलो। स्वतन्त्रता, समता, एकता लाने के लिए बैस्टिल को चलो।

'क्राति चिरजीवी हो। स्वतन्त्रता, समता, एकता की जय हो।' इन नारो से धरती और आकाश को कंपाता हुआ वह नरमुंडों का महासागर पेरिस के प्रसिद्ध कारागार बैस्टिल की ओर चल पड़ा। राजा, सेना और राजसत्ता किसी मे भी शक्ति नही थी कि वह इस तूफान को रोके। सारे फ्रांस की आवाज इस जनसमूह की आवाज थी। पेरिस के प्राण इस नई सेना के जोश में उमड़ पडे थे। खतरे के घंटे बज रहे थे। नगाड़ो पर चोट पड़ रही थी। उसकी परवाह न करके विद्रोही नागरिकों की भीड अपने लक्ष्य की ओर चली जा रही थी। देखते ही देखते उन्होंने बढ़कर बैस्टिल के गढ़ को घेर लिया।

बैस्टिल का किला। गहरी चौड़ी खाइया। दोहरे पुल। पत्थर की भारी भारी प्राचीरें, आठ भीमकाय बुर्जियां, तोपें, अस्त्र-शस्त्र, आग और धुंआं। उनमे से किसी की परवाह न करके वह मुक्ति सेना आग और धुंएं मे होकर, गोलियों

और गोलों को चीरती हुई बढ़ती चली गई। मद-विक्रेता डिफार्जे उस सैन्य-समुद्र का अगुआ था। वह बहादुर योद्धा की भांति दो घंटे तक बड़े परिश्रम और दृढ़ता से उस उद्दंड भीड़ का संचालन करता रहा। उसके अभियान ने गढ़ के भीतर की सेना को हताश कर दिया। उसकी बन्दूक आग उगलते उगलते लाल हो गई, तो भी वह मोरचे पर डटा था। वह अपने वीरों को बढ़ावा देता हुआ चिल्ला चिल्लाकर कह रहा था—वीरो, ऐसा मौका फिर नहीं आयेगा। जैक्स पहले, जैक्स दूसरे, जैक्स हजारवें, जैक्स दस हजारवें, जैक्स पचीस हजारवें, बढ़ो, चढ़ो और शत्रु की तोपों के मुंह मोड़ दो। कोई ऐसी ताकत नही जो तुम्हारे बढ़ते हुए कदमों को रोक दे।

श्रीमती डिफार्जे की बुलन्द आवाज सबके ऊपर सुनाई दे रही थी—बहनो तैयार रहो। गढ़ पर कब्जा होते ही घुस पड़ो और पुरुषों के कंधे से कंधा भिड़ाकर शत्रु को ध्वंस करने में जुट पड़ो।

स्त्रियों की सेना, जो मर्दों की तरह ही शस्त्रसज्जित थी, उसी उत्साह और बदले की भावना से गर्ज उठी। धरती और आकाश धड़धड़ा उठे।

किले के भीतर से सफेद झण्डा दिखाया गया। सन्धि की बातचीत चली। लेकिन उफनते हुए तूफान में कौन किसकी सुनता था। भीड़ बढ़ती और खूंखार होती जा रही थी। आखिर भीड़ इस कदर बेकाबू होगई कि उसने मद-विक्रेता डिफार्जे को टूटे हुए पुल के ऊपर से धक्का देकर ठेल दिया। खाई के उस ओर मोटी दीवार के पार के भीमाकार आठों गुम्बज एक एक करके सर कर लिये गये। वेस्टिल का पतन हो गया।

मुक्ति सेना का वेग तूफान से भी तेज था। उसके सामने जो भी आ जाता उसे तिनके की तरह वह लिये जा रहा था। बर्फीले सागर में प्रलय की गति से चलनेवाले अन्धड़ की भांति कानों के पर्दे फाड़ता हुआ हाहाकार चारों ओर सुनाई पड़ता था। क्रुद्ध और रक्तपिपासु दानव की भयंकर मुद्रा दर्शक का दिल दहलाती थी। एक बार धैर्यवान से धैर्यवान का धीरज छूट जाता था।

वेस्टिल के पतन के साथ ही जेल का फाटक खुल गया। उफनता और उमड़ता हुआ जन-सागर उस विशाल कन्दरा में घरघराता हुआ प्रविष्ट होने लगा।

बन्दियों को मुक्त करो। देशभक्तों को आजाद करो।

कालकोठरियो को खोल दो, हथकड़ियो को काट दो। बेड़ियों को तोड़ दो। राजा का नाश हो। राजसत्ता का नाश हो। अत्याचारी का अन्त हो। क्रांति चिरंजीवी हो। —मुक्ति सेना के हुजूम से इसी तरह की लाखों आवाजें एक साथ उठ रही थी। कभी खत्म न होने वाली उस सेना का प्रवाह बढ़ता ही जा रहा था।

अग्रिम दल ने बढ़कर किले के अधिकारियो को बंदी बना लिया था। उन्हे आगे करके वे चिल्ला रहे थे। बन्दो, बन्दी, बन्दी कहां हैं? उनकी फाइलें कहाँ हैं? उनके कागजात कहां है? कालकोठरियां किधर हैं? बन्दियों को यन्त्रणा देनेवाले औजार कहां है?

इन तमाम आवाजो में बंदियो की मांग की आवाज प्रमुख थी। वह अनन्त कंठो से एक साथ निकलकर वातावरण को गुंजित कर रही थी। ऐसा लगता था कि यह अपरिसीम आवाज कभी अन्त न होने वाली आवाज है और युग युग से जनमानस मे घुमड़ रही थी। आज उसे प्रकट होने का मौका मिला है। वे अधिकारियो को लक्ष्य कर कह रहे थे—देखो, सावधान! हमारी-एक भी बात का ठीक उत्तर न दिया, जरा भी कुछ छिपाया तो मौत तुम्हारे सिर पर तैयार है।

अधिकारी, जो अब वन्दी थे, थर थर कांप रहे थे और जनता के प्रति अपनी भक्ति का विश्वास दिलाने का यत्न कर रहे थे। इसी समय डिफार्जे ने एक दढ़ियल वृद्ध अधिकारी के, जो हाथ में मशाल लिए आगे आगे चल रहा था, सीने में मुक्का मार कर और उसे दीवार से सटाकर कहा—मुझे उत्तरी बुर्ज बताओ। चलो।

वृद्ध ने विनीत भाव से कहा—चलिये श्रीमान्, मैं अभी आपको वहां ले चलता हूँ। परन्तु वहां है तो कोई नहीं।

डिफार्जे—एक सौ पाँच उत्तर बुर्ज से क्या मतलब है?

वृद्ध—श्रीमान्, वह तो उत्तर बुर्ज में एक कालकोठरी है? उधर, उस ओर।

डिफार्जे—मैं उसे देखना चाहता हूँ।

वृद्ध—तो इधर से चलिये।

अंधेरी सुरंग मे से होकर वे चले। इतनी अंधेरी कि सूरज का प्रकाश वहाँ कभी झांकता भी न था। उस घोर अन्धकार-मयी सुरंग मे जहां तहां डरावने दरवाजे लगे थे और पिंजड़े की भांति गुफाओं जैसी कोठरियां मुंह बाये खड़ी थीं। भारी भारी पत्थरों के ढोकों से बनाया हुआ यह ऊबड़-खाबड़ रास्ता ऊपर को उठता चला जा रहा था। डिफार्जे, वृद्ध और पीछे

बेस्टिल जेल की कालकोठरी

पीछे जैक्स तीसरा, ये तीन आदमी उसमें अपना रास्ता खोजते चले जा रहे थे। खूंखार अभियान के उन विकल योद्धाओं तक के रोंगटे इस भीषण मार्ग में खड़े हो उठे थे। वे हवा की तरह दौड़कर इस स्थान को पार कर जाना चाहते थे।

एक द्वार पर वृद्ध रुक गया। द्वार में झूल रहे भारी ताले में कुंजी डाल कर उसने घुमाई और लोहे का दरवाजा झन-झनाहट के साथ खोल कर बोला—एक सौ पांच उत्तरी बुर्ज। आइये।

एक दम संकरे द्वार में वे तीनों प्रविष्ट हुए। उस कोठरी में एक छोटा सा धुंआंकश था जो लोहे की छड़ों से बंद किया हुआ। इधर दीवार में एक छोटी सी खिड़की थी पर उसके सामने पत्थर की भारी दीवार इस तरह खड़ी थी कि उसका होना न होना बराबर था। खिड़की के नीचे कोई घुटनों के बीच में सिर झुका कर जमीन पर रख दे तो शायद उसे आकाश का एक थोड़ा सा हिस्सा दिखाई पड़े। उस कोठरी के एक कोने में राख का ढेर था। एक छोटी सी तिपाई। एक लकड़ी की भद्दी मेज और फूस का बिछावन। कोठरी की चारों दीवारें धुंएं से काली हो रही थीं। एक दीवार में काई खाये लोहे की एक कड़ी लगी हुई थी।

डिफार्जे ने वृद्ध को आदेश दिया—मशाल इधर करो जी, ताकि मैं दीवारों को देख सकूं।

मशाल की रोशनी में उसने गौर से दीवारों को एक-एक करके देखा। एक जगह ए. एम. ये दो अक्षर खुदे हुए मिले। डिफार्जे ने उन अक्षरों की ओर संकेत करके अपने साथी से कहा—अलेक्जेंडर मेनेट। समझे ? और देखो उसीके हाथ से पत्थर पर अंकित पंचांग। बेचारे आजन्म कैदी को तिथिवार का ज्ञान कराने का एकमात्र आधार।

उसने अपने साथी के हाथ से लोहे की छड़ ली और दीमक खाई तिपाई व मेज पर पटकपटक कर इंधन कर दिया। इसके बाद उसने घासफूस के बिस्तर को उठाकर बखेर दिया। उसने लोहे की छड़ से धुंआंकश में खड़खड़ाया। जहां जहां दीवार में दरार या छेद दिखाई पड़ा वहां वहां ध्यान से देखा। इधर उधर, यहां वहां। अंत में हारकर जैक्स तृतीय से कहा—कुछ नही है। यहां कुछ नही है।

सब ने मिलकर उस ईंधन को कोठरी के बीच में इकट्ठा किया और आग लगा दी। क्षण भर में अंधेरी कालकोठरी लाल लाल लपटों से उज्ज्वल हो उठी। इस प्रकार होलिका-दहन करके वे उस कोठरी से बाहर निकल आये। वे जब

चौक में पहुँचे तो देखा कि भीड़ में लोग उन्हीं की खोज कर रहे हैं। उन्होंने किलेदार को पकड़ लिया था और उसे ठिकाने लगाने की सोच रहे थे।

डिफार्जे की स्त्री ने अपने पति को देखकर शोर मचाया— लो, वे आगये। मेरे स्वामी। मेरे साथी।

लोगों ने डिफार्जे के सामने किलेदार को पेश किया और कहा—यही है वह नमकहराम जिसने अपनी तोपों की आग से जन—सेना के आदमियों को भून डाला था।

डिफार्जे—ले चलो इसे। इसका फैसला होगा। वे उसे पकड़कर ले गये और सीढ़ियों पर पटक पटक कर मार डाला।

जनसागर उमडता रहा, उफनता रहा और हहराता रहा, टकराता रहा। अंधेरी गुफाओं में, विनाश की दिशाओं में, अतलस्पर्शी गहराइयो में, ज्वालामुखियों की घबराहट भरी फूत्कार में, उर्मिल लहरें एक के बाद एक प्रचंड वेग से प्रलयकांड रचती रही। और महानाश की दिलहिलानेवाली सृष्टि के बीज बोती रही, वर्षों से, सदियों से, युगो से गरीबों और निरीहों की रीढ़ पर अत्याचार के भारी भरकम वज्र-कठोर पद उच्छृंखल नृत्य कर रहे थे, उससे छुटकारा पाकर आज नीचे का तबका बदला चुकाने मे और प्रतिहिंसा

को अर्घ्यदान देने में मुग्ध मन से लगा था। अत्याचार, प्रपीड़न और भट्ठी में जलने से कठोर हुई उनकी चित्तवृत्ति करुणा की, दया की, छाया से कोई वास्ता न रखती हुई अपना काम पूरा कर रही थी। आज धरती पर खून था, हवा में खून था, आकाश में खून था, खून, खून, खून— अमीरों का खून, कुलीनों का खून, रईसों का खून, सामंतों का खून, सरदारों का खून। डिफार्जे की कलारी के गरीब मजदूर और कुली आज प्रातःकाल से ही नई दुनियां रचने के लिए सूखे कठ निकलकर चल पड़े थे। इस अभियान का नेतृत्व करने के लिए उत्सुक डिफार्जे ने मुग्धमन से अपनी स्त्री से चलते चलते कहा था—आखिर वह दिन आज आ पहुँचा प्रिये!

उत्तर में उसी तरह हर्षातिरेक से विह्वल उसने उत्तर दिया था—हाँ स्वामी, सचमुच।

कुछ घंटों में फ्रांस की राजधानी ने, बेस्टिल की जेल ने, सम्राटों और सामंतों की दुनियाँ ने युग-युग की जमी हुई राजसत्ता और व्यवस्था को उलटपलट होते हुए देखा। सिंहासन कांप उठे, मुकुट फीके पड़ गये, तलवारों का पानी उतर गया। जन-अभियान के योद्धा स्त्री और पुरुष आगे

चल पड़े तो पीछे नहीं मुड़े। शाम से पहले किसी ने अपने बच्चों की खबर नहीं ली कि वे भूखे हैं या प्यासे, रोते हैं या चिल्लाते हैं। आजादी का नशा स्त्रियों और पुरुषों दोनों पर समान रूप से छाया हुआ था।

पेरिस की ओर

तूफान के तीन साल बीत गये। ज्वालामुखी के विस्फोट ने, सागर के उफान ने और वायुमंडल के झकोरों ने भूमंडल को झकझोर डाला था। उसमें अब शांति के लक्षण दीखते थे परन्तु फिर भी कुछ ऐसी घटनाएं घट रही थीं जिनका आतंक दर्शकों को भय से कंपा देता था।

सम्राट के दरबार के बाहरी और भीतरी कुचक्रों, षड़यंत्रों एवं घुसपैठ और भ्रष्टाचार का युग अब बीत गया था। राजसत्ता समाप्त हो गई थी। उसकी कब्र उसके सिंहासन के नीचे ही खुद गई थी और उसी में गाजे-बाजे के साथ वह दफना दी गई थी। कोई उसके लिए दो आंसू बहानेवाला न था।

१७६२ का अगस्त का महीना आ गया था। सरदार

और सामन्त दूर दूर बिखर गये थे। उनका सबसे बड़ा शरणस्थल लंदन का टेल्संस बैंक था। जो भी फ्रांस से आता वह सीधा यहां पहुँचता। फ्रांस का हर तरह का समाचार यहीं मिल सकता था।

तीसरे पहर का समय था। बैंक बंद होने में थोड़ी ही देर थी। मिस्टर लॉरी अपनी कुर्सी पर एक डेस्क के सहारे बैठे थे। चार्ल्स डार्ने उनके पास खड़े कुछ बातचीत कर रहे थे। चार्ल्स ने कहा—यह बात जरूर है कि आप काम से घबराते नहीं। युवकों के से उत्साह से हर खतरे का मुकाबला करने को तैयार रहते हैं। परन्तु यह न भूलिये कि मौसम कितना खराब है, लंबा सफर है, यात्रा के साधन अनिश्चित से हैं, अव्यवस्थित देश है। वहां जाना इस समय सुरक्षित नहीं है।

लॉरी ने प्रसन्नता और विश्वास के साथ उत्तर दिया—आपके कहने में सचाई है चार्ल्स, लेकिन क्या किया जाय। मुझे तो वहां जाकर रहना ही होगा।

इसी समय बैंक की ओर से महाशय लॉरी के पास एक लिफाफा आया और पूछा गया कि क्या वे उस नाम के किसी व्यक्ति से परिचित हैं। लिफाफा चार्ल्स डार्ने के मुंह के सामने

रखा था। उस पर उसकी दृष्टि पड़ गई। एक क्षण में उसने देख लिया कि लिफाफे पर उसी का नाम अंकित है। लिफाफे पर स्पष्ट अक्षरों मे लिखा था—

सेवा में श्रीमान् मार्क्विस सेंट एवरमांडी ऑफ फ्रांस
मारफत मेसर्स टेलसंस बैंक, बैंकर्स,
लंदन (इंगलैंड)

उक्त सूचना के सम्बन्ध में लॉरी महोदय ने कहा—हमें इस नाम के किसी व्यक्ति का पता नहीं है और न कोई दूसरा ही उसे जानता है।

चार्ल्स डार्ने ने इस पर कहा—मैं उस आदमी को जानता हूँ।

लॉरी—तो आप पत्र पहुँचा देंगे ?

"जरूर।"

"तो आप यह भी कह देंगे कि हम लोगों ने इसी विचार से पत्र रोक रक्खा था कि शायद पता चल जाय और वह गंतव्य स्थान पर भेजा जा सके।"

"अवश्य।—और आप क्या आज रात को पेरिस जा ही रहे हैं ?"

"हां, आठ बजे शाम को।"

"तो फिर मैं उसी समय आपसे मिलने आऊंगा।" कहकर चार्ल्स ने लॉरी से विदा ली और एकांत पाते ही पत्र फाड़कर पढ़ने लगा।

पत्र का भेजनेवाला गैबिले था। पेरिस की एक जेल से वह भेजा गया था। उसमें लिखा था।—

श्रीमान्‌जी, गांववालों की बुरी निगाह होने के कारण मेरे प्राण सदा ही संकट में रहे। आखिर मेरे ऊपर हमला बोलकर मुझे पकड़ लिया गया और मेरे साथ मारपीट की गई। मैं गांव से पैदल ही बांधकर पेरिस लाया गया। मेरे मकान को नष्ट कर दिया गया और मुझे यहाँ लाकर जेल में डाल दिया गया।

मेरा अपराध यही था कि मैं आपकी रियासत का कारिंदा बना था। इसी अपराध के लिए मुझे फाँसी पर चढ़ना पड़ेगा। मुझ पर जनसत्ता के प्रति विद्रोही होने का अभियोग लगा है। मैंने सफाई में बार बार कहा है कि मुझे लगान तो किसी ने दिया ही नहीं। मैंने उनसे उगाहा भी नहीं। एक पाई तक मैंने वसूल नहीं की, फिर मुझ पर अभियोग कैसा? इस पर मुझे एक ही बात कही गई कि मैंने आपकी रियासत का कार्यभार संभाला है इसलिए मैं ही आपको लाकर उपस्थित

करूं। न कर सकूं तो फांसी पर चढ़ूं। इसलिए मैं आपके पास समुद्र पार अपनी अनुनय भेजता हूँ कि आप आकर मुझे मरने से बचायें।

परमात्मा आपका भला करे। आपकी न्यायप्रियता, दीनवत्सलता और उदारता पर मुझे भरोसा है कि इस समाचार को पाकर आप एक क्षण भी कहीं न ठहरेंगे और सीधे आकर अपने वफादार सेवक का उद्धार करेंगे।

आपकी दया का भिखारी,
गैबिले

पत्र पढ़कर डार्ने कुछ क्षण तक स्तब्ध रहा। उसकी आंखों के सामने बूढ़े सेवक की करुणाभरी मूर्ति उभर आई। उसकी ईमानदारी से की गई सेवाओं का आज उसे यह उपहार मिल रहा है यह सोचकर उसने कुछ कठोर निश्चय कर डाला। उसकी आंखों में बिना कुछ कहे भी एक तीव्र प्रकाश झलक उठा।

इसके बाद वह लॉरी महाशय से मिलने चला। टेल्संस बैंक के फाटक पर गाड़ी तैयार खड़ी थी। चार्ल्स डार्ने ने पहुंचकर लॉरी को नमस्कार किया और कहा—आपका पत्र यथास्थान पहुंचा दिया गया है। उत्तर लिखित तो नहीं है पर

मौखिक संदेश है जो आशा है आप पहुँचा देंगे।

लॉरी—अवश्य पहुंचा दूंगा अगर संदेश खतरनाक न हुआ तो।

चार्ल्स—सदेश तो खतरनाक नहीं है परन्तु है एक कैदी के लिए। आपको जेल में जाकर उसे भुगताना होगा।

इतना कहकर उसने कैदी का नाम और जेल का पता बता दिया। लॉरी ने पूछा—तो उसे क्या कहना होगा?

चार्ल्स—यही कि उसका पत्र मिल गया है और वह पहुंच जायगा।

"कब तक।"

"वह कल रात को रवाना हो जायगा।"

इसके बाद वृद्ध लॉरी महाशय अपनी गाड़ी पर चढ़े और चल पड़े। चार्ल्स ने उन्हें कोई विशेष बात न कही। उसका विचार था कि पेरिस पहुँचकर ही उनसे मिलूंगा और तभी सारा हाल बताऊंगा।

१४ अगस्त की रात थी। चार्ल्स डार्ने ने रात को देर तक जागकर दो पत्र लिखे। एक अपने ससुर के नाम। दूसरा अपनी पत्नी के नाम। उन पत्रों को उसने घर के एक विश्वासी नौकर को देकर समझा दिया कि पत्र आधीरात से पहले न

दिये जायं। स्वयं डोवर की गाड़ी पकड़ी और यात्रा पर चल पड़ा।

फ्रांस की भूमि पर

एक यात्री फ्रांस की भूमि पर उतरा और पेरिस की ओर चल पड़ा। १७९२ के उस पतझड़ में फ्रांस के गांव-गांव, कस्बे कस्बे और नगर-नगर के नाके, चुंगीघर, चौकी और दरवाजो पर देशभक्त जन-सेना के चौकीदार हथियारों से लैस मुस्तैदी से पहरा दे रहे थे। उनकी आंखों से बचकर कोई आ-जा नहीं सकता था। वे प्रत्येक आने जानेवाले के कागज पत्रों की जांच करते उसका अता पता पूछते और उसे तब तक रोक रखते थे जब तक उन्हें संतोष नही हो जाता था। वे अपनी सूची के नामों से उसके नाम का मिलान करते और जरा भी संदेह होने पर उसे लौटा देते या आगे बढ़ने न देते या अपने आदेश से जेल भेज देते थे।

चार्ल्स कुछ ही मील फ्रांस की भूमि पर चला होगा कि उसे लगने लगा कि अब वहां से वापस लौट सकना तब तक

संभव नहीं जब तक वह फ्रांस का वफादार नागरिक न मान लिया जाय। जो होगा सो होगा उसे तो अब आगे बढ़ना ही है। उसके मार्ग में जितने गांव और जितने चौराहे पड़े वे मानो जेल का एक एक सीकचा थे जो उसके पीछे बंद होते जाते थे। कुछ दिन फ्रांस की भूमि पर इस प्रकार चलकर वह मार्ग के एक गांव में रात को थककर सो गया। उसे लग रहा था कि उसकी यात्रा में विघ्न पड़ गया है। बात यह थी कि इस चौकी पर उससे बहुत कुछ पूछताछ की गई थी। वह उससे घबड़ा गया था। आधी रात के समय एक अधिकारी ने तीन हथियारबन्द जन-सेवकों के साथ सराय में आकर उसे जगाया और कहा—मुसाफिर, तैयार हो जाओ। मैंने तुम्हें सुरक्षा के साथ पेरिस भेजने का प्रबन्ध कर दिया है। चूंकि तुम कुलीन घराने के हो इसलिए तुम्हे जन-सैनिकों की देखरेख में जाना होगा और इस प्रबन्ध का खर्च भी देना होगा।

चार्ल्स डार्ने विवश उनके साथ हो लिया और चौकी पर आ पहुँचा। वहां लाल टोपीवाले देशभक्त जन-सैनिक पहरे पर तैनात थे। कुछ सो रहे थे। कुछ आराम कर रहे थे। कुछ सिगार सुलगा रहे थे और कुछ वारुणी भवानी की

आराधना कर रहे थे। यहां चार्ल्स को सुरक्षा-सैनिकों का भारी खर्चा देना पड़ा और वे रातोंरात पेरिस को रवाना हो गये। दो सशस्त्र लाल टोपधारी सैनिक घोड़ों पर सवार दोनों ओर से उसे घेरे हुए चल रहे थे।

एक दिन प्रातःकाल वे पेरिस की शहरपनाह के समीप जा पहुंचे। शहर के नाकों पर कड़ा पहरा था। उनके पहुँचते ही एक कठोर-आकृति अधिकारी ने आगे बढ़कर पूछा—इस कैदी के कागजात कहां हैं ?

एक सैनिक ने अपने टोप में से कागजात निकाल कर दिये। गैबिले के पत्र पर एक दृष्टि डालकर क्षण भर वह अधिकारी किंकर्तव्यविमूढ़ सा हो रहा। उसने कुछ अचरज और अविश्वास के साथ डार्ने की ओर बारीकी से घूरकर कैदी के पहुँचने की रसीद सैनिकों को दी और डार्ने से कहा—आप घोड़े से नीचे उतर जाइये।

चार्ल्स घोड़े से उतर कर उसके साथ एक कमरे में गया जहां कई रजिस्टर खुले पड़े थे और एक अधिकारी बैठा उनकी जांच कर रहा था। उनके पहुँचते ही अधिकारी ने कैदी को लानेवाले अपने सहयोगी से कहा—नागरिक डिफार्जे, क्या यही मुसाफिर एवरमांडी है ?

"यही आदमी है।"

"तुम्हारी उमर एवरमांडी ?"

"सैंतीस साल।"

"विवाहित ?"

"हां जी।"

"कहां ?"

"इंगलैंड में।"

"तुम्हारी पत्नी कहां है ?"

"इंगलैंड मे।"

"तो एवरमांडी, तुम ला फोर्स के जेलखाने में भेजे जाते हो।"

"लेकिन किस अपराध और कौन से कानून के मातहत ?" डार्ने ने घबड़ाहट के साथ पूछा।

अधिकारी ने कागज पर से सिर ऊपर उठाया, उसकी ओर घूरकर कहा—एवरमांडी, हमारे कानून नये हैं और अपराध भी नये हैं। तुम नहीं जानते, नही जान सकते।

तदुपरांत उसने जो कुछ लिखना था लिखकर अपने मन में ही पढ़ा और कागज डिफार्जे को देते हुए कहा—गुप्त।

डिफार्जे ने इशारा किया और एवरमांडी उसके साथ

चल पड़ा। दो सशस्त्र सैनिक उसके आगे पीछे हो लिए।

जब डिफार्जे चौकी से मुड़कर पेरिस में घुसने लगा तो उसने कैदी से पूछा—क्या तुम्हारे साथ ही डाक्टर मेनेट की पुत्री का ब्याह हुआ है ? डाक्टर मेनेट जो बेस्टिल जेल में बन्दी थे ?

डार्ने—हां।

मेरा नाम है डिफार्जे। सेंट एंटनी की बस्ती में मेरी शराब की दूकान है। संभवतः तुमने मेरा नाम सुना होगा। क्रांति की राजकुमारी गिलोटिन तुम्हे समझे, भला तुम फ्रांस में क्यों आये ?

"हां, यहां आकर मैं कहीं का न रहा। यहां तो सब कुछ ही बदल गया है। कोई कानून नहीं। कोई न्याय नहीं। कोई व्यवस्था नहीं। तो क्या तुम मेरी थोड़ी मदद कर सकोगे ?"

"नहीं।" डिफार्जे ने दृढ़ता से कहा।

"क्या तुम टेल्संस बैंक में श्री लॉरी महोदय से इतना कह सकोगे कि मैं ला फोर्स की जेल में हू ? बस और कुछ नही।"

"मैं कहूँगा" डिफार्जे ने उत्तर दिया "तुम्हारे लिए किन्तु कुछ भी नही। मेरा कर्तव्य देश और जनता के प्रति

हैं। मैं उन दोनों की सेवा के लिए वचनबद्ध हूं। मैं तुम्हारे लिए कुछ भी न करूँगा।"

डार्ने ने उससे आगे कुछ कहना बेकार समझा। भयभीत और निराश वह जेल के द्वार पर जा पहुंचा। अपनी स्त्री और बच्ची से मिलने की समस्त आशाओं का परित्याग कर जेल की यंत्रणाओं से भेंट के कुविचार उसके मस्तिष्क में चक्कर काट रहे थे।

जनता की अदालत

संत जर्मन की बस्ती के नुक्कड़ पर एक बड़ी इमारत में टेल्संस बैंक का दफ्तर था। लॉरी महाशय अपने दफ्तर में आग जलाकर बैठे थे। सदर फाटक बन्द था। गली में से रह रहकर रात्रिकालीन कोलाहल सुनाई पड़ जाता था। कभी कभी भयंकर आवाजें भी होती थीं और लगता था धरती और आकाश जैसे कांप कांप उठते हों।

लॉरी महाशय ने आकाश की ओर हाथ जोड़कर कहा—ईश्वर को धन्यवाद है कि इस भयावनी रात में इस नगर में अपना कोई प्रियजन नहीं हैं। ईश्वर विपत्ति मे पड़े हुए

सब लोगों की रक्षा करे।

इसी समय बाहर घंटी बजी। फाटक खुलने की आवाज आई और दो आकृतियां भीतर प्रविष्ट हुईं। उन्हें देखते ही लॉरी महाशय चौंक पड़े। अरे लूसी और डा० मेनेट! उनके मुंह से अचानक निकल पड़ा—अरे भई, क्या बात है। लूसी और डा. मेनेट, यहां और इस समय! खैर तो है?

लूसी—हाय प्रिय लॉरी महोदय! मैं क्या करूं? मेरे पति।

"क्यों क्या हुआ तुम्हारे पति को?"

"चार्ल्स।"

"चार्ल्स कहां है?"

"यहीं पेरिस में।"

"पेरिस में?"

"हां यहां आये हैं वे। तीन चार दिन पहले। किसी के प्रति दया से प्रेरित हमें बिना बताये वे पेरिस आये हैं। सीमा की चौकी पर उन्हें रोक लिया गया था और वे अब कारागार में हैं।"

डा. मेनेट—मेरे वंदी जीवन और उसमें सहे कष्टों के कारण मेरे साथ रियायत की गई और हम लोग कहीं रोके

नहीं गये । मेरा ख्याल है मैं अपने प्रभाव को काम में लाकर चार्ल्स को छुड़ा सकता हूं । यही मैंने लूसी से कहा है ।

लॉरी—यदि ऐसा है और मैं भी समझता हूं कि आपका प्रभाव पड़ेगा तो आप ला फोर्स की जेल के लिए फौरन रवाना हो जायं । एक क्षण की भी देर न करें ।

लॉरी महाशय का हाथ अपने हाथ में लेकर और अभिवादन करके डा. मेनेट उसी समय बाहर चले गये ।

डा. मेनेट का सचमुच ही इतना प्रभाव पड़ा कि जिसकी आशा नहीं थी । उन्हें इस बात की मंजूरी मिल गई कि वे डार्ने का एक पत्र लूसी के पास भिजवा दें । यही क्यों उन्हें कालकोठरी से भी हटाकर दूसरे बंदियों के साथ रख दिया गया, पर अभी तक उनके छुटकारे का आदेश दे प्राप्त न कर सके ।

इस आकस्मिक विपत्ति ने डा. मेनेट के स्वभाव में आश्चर्यजनक परिवर्तन ला दिया । वे चुपचाप, गुमसुम और अधिकतर लूसी पर निर्भर रहा करते थे । वे सब बातें एकदम लोप हो गईं । वे सब लोगों से मिलने और परिचय प्राप्त करने लगे । अपना हर काम फुर्ती से और सुन्दरता से करने लगे । उन्होंने अस्पताल और जेल दोनों जगह लोगों को मुफ्त

डाक्टरी सहायता देना आरम्भ कर दिया। प्रति क्षण वे मुस्तैदी से सेवारत रहने लगे। यह सब करते हुए भी वे चार्ल्स को एक क्षण के लिए न भूले। उसकी मुक्ति का प्रयास बराबर करते रहे।

पन्द्रह महीने बाद जनता की अदालत में चार्ल्स डार्ने के मुकदमे की सुनवाई हुई। यह अदालत फ्रांस के कुलीनों को जनता पर अत्याचार करने के लिए दण्ड देने के हेतु बनाई गई थी। इसके सामने एक के बाद दूसरा रईस उपस्थित किया जाता था। जनता में से कोई आगे बढ़कर उस पर अभियोग लगाता था और न्यायाधीश नाम मात्र की पूछताछ करके उसे दोषी ठहरा देता और गिलोटिन से वध किये जाने का फैसला सुना देता था। इस प्रकार बहुत सरसरी विधि से कार्रवाई होती और कठोर से कठोर दण्ड दिया जाता। कोई बिरला ही भाग्यशाली होता जो मृत्युदण्ड से बच पाता।

जब चार्ल्स डार्ने न्यायालय के सामने लाया गया तो न्यायाधीश ने पूछा—चार्ल्स एवरमांडी, क्या तुम्हीं डार्ने कहलाते हो ?

नागरिकों की भीड़ में से आवाज आई—इसका सिर

उतार लिया जाय। यह जनता की सरकार का दुश्मन है।

न्यायाधीश—यह अदालत है नागरिको, यहां शोर नहीं मचाना चाहिए।

सरकारी वकील ने अभियुक्त से जिरह शुरू की। उसने पूछा—बन्दी, क्या यह सच है कि तुम अरसे से इंगलैंड में रह रहे थे?

बंदी—जी हां।

वकील—तुम फ्रांस से क्यों चले गये?

बंदी—मैं अपनी रोजी अपने हाथ की मेहनत से कमाना पसन्द करता था इसलिए मैं फ्रांस से चला गया। गरीबों के श्रम का शोषण मैं नहीं करना चाहता था।

वकील—इस बात की सचाई कैसे साबित हो? क्या इस विषय में तुम कोई गवाह पेश कर सकते हो?

बंदी—कर सकता हूँ। डाक्टर मेनेट और गैबिले ये दो व्यक्ति इस तथ्य के गवाह हैं।

वकील—लेकिन तुमने तो इंगलैंड में शादी करली है

बंदी—हां, परन्तु अंग्रेज स्त्री से नहीं।

वकील—फ्रेंच स्त्री से?

बंदी—जी, वह जन्मतः फ्रेंच है।

वकील—उसका नाम और उसका परिवार ?

बंदी—उसका नाम लूसी मेनेट है। वह डाक्टर अलेक्जेण्डर मेनेट की कन्या है।

वकील—तुम फ्रांस में पहले क्यों नहीं आये, इसी समय क्यों आये ?

बंदी—फ्रांस मे मेरे जीवनयापन के कोई साधन न थे। अपने पूर्वजों की रियासत को मैंने पहले ही छोड़ दिया था। इंगलैंड में मैं फ्रेंच भाषा पढ़ाकर गुजर करता हूं। मैं इस समय इसलिए आया कि मुझे एक नागरिक के जीवन की रक्षा करनी थी। क्या एक जन-नागरिक के प्राण बचाना जनता की सरकार की दृष्टि में अपराध है ?

न्यायाधीश—ठीक है बंदी, तो तुम अपने पहले गवाह का नाम बताओ।

बंदी—गैबिले।

न्यायाधीश—(गैबिले की ओर दृष्टि फेंककर) नागरिक गैबिले, क्या बंदी सच कह रहा है ?

गैबिले—जी जनाब। बिल्कुल ठीक कह रहा है। नागरिक एवरमांडी ने अपने आपको प्रस्तुत करके मुझे
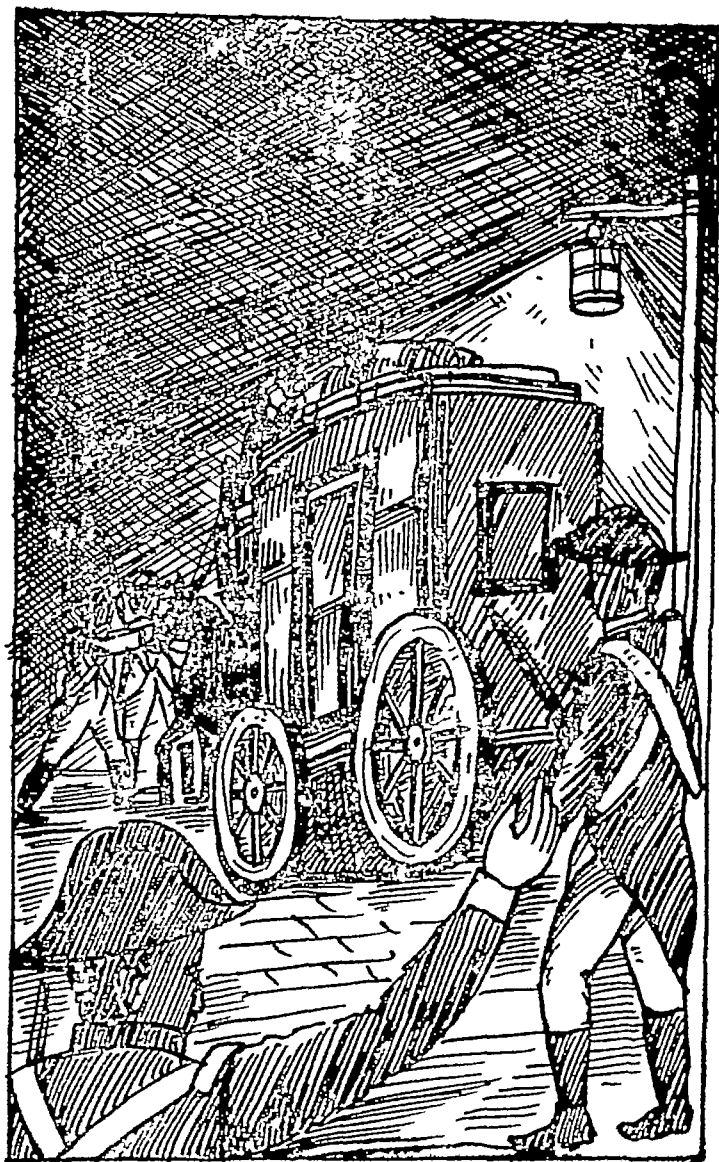
पेरिस के द्वार पर

प्राणदण्ड से बचाया है।

न्यायाधीश--अच्छा जाओ ।—डाक्टर अलेक्जेंडर मेनेट !

मेनेट—मैं इधर हूं, साहेब।

न्यायाधीश—यह बंदी कौन है ?

मेनेट—यह बैस्टेल जेल से छूटने के बाद से बराबर मेरा सुहृद् रहा है। यह फ्रांस के प्रति सदा वफादार रहा है। यह फ्रांस की जनता का मित्र है। यह जनता की सरकार का भी मित्र है। इसी अपराध पर इंगलैड में इस पर मुकदमा चलाया गया था। इस युवक को फ्रांस की जनता या जनता की सरकार का दुश्मन कहना गलत है। मैं यह बात निश्चयपूर्वक कह सकता हूं।

न्यायाधीश—डा. मेनेट, मैं तुम्हारी बात स्वीकार करता हूं। बेस्टिल जेल के बंदी का दोस्त जनता का दुश्मन नहीं हो सकता। केवल इसका नाम ही जन-सरकार का दुश्मन है। मै बंदी को मुक्त करता हूँ। नागरिक एवरमांडी, तुम जहां चाहो जा सकते हो।

प्राणदण्ड

पेरिस के अपने निवास स्थान पर डाक्टर मेनेट और लूसी बैठे बातचीत कर रहे थे। लूसी ने कहा—पिता जी, अब एक क्षण की देर न करिये। इस पेरिस से जैसे हो आज शाम से पहले निकल भागिये।

मेनेट—बेटी, अब क्यों डरती हो? अपने कष्ट की घड़ियां तो बीत चुकी हैं।

लूसी—आप नहीं जानते पिता जी। मेरा जी तो धकधक कर रहा है। यहां के लोगों की आंखो में प्रतिहिंसा की आग धधक रही है। न जाने किस कारण क्या आफत उठ खड़ी हो।

मेनेट—तुम्हारा दिल कमजोर है लूसी।

लूसी कुछ भयभीत सी होकर बोली—देखो, सुनो।

कौन हो सकता है इस समय?

लूसी—नहीं पिता जी, जरूर कोई है। आप चार्ल्स को कहीं भेज दीजिए, कहीं छिपा दीजिये जब तक हम लोग चलने की तैयारी न करलें।

मेनेट—क्या पागल हुई हो लूसी ?

इसी समय बाहर से घंटी बजती है। डाक्टर मेनेट उठकर चलना चाहते हैं जबकि जैक्स प्रथम चार लाल टोपधारी जन-सैनिकों के साथ उपस्थित होता है।

जैक्स प्रथम—नागरिक एवरमांडी।

डार्ने अपने कमरे से बाहर निकल आया और पूछा—कौन, क्या बात है ?

जैक्स प्रथम—हम हैं एवरमांडी। मैं तुम्हें पहचानता हूं ? तुम फिर फ्रांस की जनसरकार के बंदी हो।

डार्ने—बताओ तो सही। क्यों और किसलिये मैं फिर फ्रांस का बन्दी बन गया ?

जैक्स प्रथम—यह मैं नही बता सकता। तुम्हें सीधे जेल चलना है। वही पता लगेगा।

डाक्टर मेनेट—तुमने अभी कहा तुम एवरमांडी को जानते हो ? पर इधर तो देखो, क्या तुम मुझे भी जानते हो ?

जैक्स प्रथम—हां, नागरिक डाक्टर आपको क्यों नहीं जानता हूं।

मेनेट—तो मुझे ही बता दो। फिर किसलिए गिरफ्तारी का हुक्म हुआ है ?

जैक्स प्रथम—सेंट एन्टोनी के मुहल्ले के एक नागरिक ने उस पर आरोप प्रस्तुत किया है। जल्दी करो, एवरमांडी !

मेनेट—उस नागरिक का नाम भी तो बताओ भाई।

जैक्स प्रथम—नागरिक डिफार्जे, उसकी बीबी तथा एक और कोई।

मेनेट—और कोई कौन ?

जैक्स प्रथम—वह कल मालूम होगा। वहीं अदालत के सामने। मैं और अधिक कुछ नहीं कह सकता। चलो, एवरमांडी। जल्दी करो, हम यहां अधिक नहीं ठहर सकते

डार्ने ने अपने को प्रस्तुत कर दिया। वे उसे बांधकर ले चले। लूसी बेहोश होकर कमरे के फर्श पर गिर पड़ी। डाक्टर मेनेट माथा ठोककर रह गये।

दूसरे दिन डार्ने फिर अदालत मे बदी रूप मे लाया गया। सरकारी वकील ने उच्च स्वर से कहा—चार्ल्स एवरमांडी कल अदालत से मुक्त हुआ था और शाम को फिर गिरफ्तार कर लिया गया। वह जनता का दुश्मन बताया जाता है। वह उस वंश से है जो वर्षों तक गरीबों पर अत्याचार करता रहा और उनकी कमाई पर गुलछर्रे उड़ाता रहा।

न्यायाधीश—बंदी पर गुप्त अभियोग है या प्रगट ?

वकील---प्रगट।

न्यायाधीश---अभियोग लगानेवाला कौन है ?

वकील---तीन व्यक्ति। पहला अर्नेस्ट डिफार्जे जो सेंट एन्टोनी के मुहल्ले में शराब की दूकान चलाता है।

न्यायाधीश---अच्छा, और ?

वकील---और उसकी स्त्री, थेरसा डिफार्जे।

न्यायाधीश---तीसरा ?

वकील---तीसरा डाक्टर अलेक्ज़ेण्डर मेनेट।

वकील का इतना कहना था कि डाक्टर मेनेट अपने स्थान पर खड़े हो गये और बोले---मैं इसका विरोध करता हूं। यह बिल्कुल झूठ है। अभियुक्त मेरा जमाई है। मेरी लडकी के प्रियजन मेरे भी प्रिय हैं क्योंकि वह मेरी अकेली संतान है। कौन है जो यह कहता है कि मैंने अपने जमाई के विरुद्ध अभियोग प्रस्तुत किया है ?

न्यायाधीश---नागरिक मेनेट, चुप रहो। एक नागरिक को जनता, जनता की सरकार और देश के मुकाबले दूसरा कोई भी प्रिय नहीं हो सकता। यदि जन-सरकार तुम्हें यह आदेश देती है कि तुम अपनी लड़की को छोड़ दो तो तुम्हारा कर्तव्य है कि तुम उसे छोड़ दो। इसलिए तुम चुप रहो और

सुनो क्या हो रहा है।—डिफार्जे, तुम पहले कहो। क्या कहना चाहते हो ?

वकील—नागरिक डिफार्जे, तुमने बेस्टिल अभियान के समय बहुत काम किया था ?

डिफार्जे—कुछ तो किया ही था।

वकील—तुम सबसे आगे थे ? कहते क्यों नही हो ? बैस्टिल पतन के समय उसमें घुसनेवालो मे भी तुम्हीं अगुआ थे ?

डिफार्जे—हां जी।

वकील—तो अदालत को बताओ, तुमने बेस्टिल में क्या क्या किया ?

डिफार्जे—मुझे मालूम था कि एक नागरिक को उत्तरी बुर्ज की १०५ नंबर की कालकोठरी मे बंद किया गया था। वहां रहते रहते उसकी स्मृति क्षीण हो गयी थी और वह कोठरी के नाम से ही अपने को जानता था। अपना असली नाम उसे भूल गया था। वहां से मुक्त होने पर वह मेरे संरक्षण में रहा था। जब बैस्टिल का पतन हुआ तो मैंने सोचा कि चलकर उस कोठरी को देखूं। मैं एक साथी के साथ वहां गया। वह साथी अदालत में मौजूद है। हमने उस अंधेरी

गुफानुमा कोठरी की छानबीन की तो दीवार में से एक पत्थर खिसका हुआ दिखाई दिया। मैंने उस दरार में देखा तो एक कागज हमें मिला। वह कागज यहां मौजूद है। मैं अदालत के सामने उसे पेश करता हूँ। वह डा. मेनेट के हाथ का लिखा हुआ है।

न्यायाधीश—वह पत्र पढ़कर सुनाया जाय।

वकील ने पत्र निकाला और उसे सुनाने लगा—मैं डाक्टर अलेक्जेन्डर मेनेट बिवाय का रहनेवाला हूँ। मैं आज १७६७ के दिसम्बर महीने की रात को यह पत्र लिख रहा हूँ कि १७५७ के दिसम्बर महीने की एक ऐसी ही रात को मैं सीन नदी के तट पर हवाखोरी कर रहा था कि एक गाड़ी पीछे से आकर मेरे समीप ठहरी। किसी ने मुझे गाड़ी में से नाम लेकर पुकारा और दो आदमी गाड़ी से उतरकर मेरे आस-पास खड़े हो गये। वे कोई बड़े आदमी थे। एक ने मुझे पूछा कि क्या मै ही डा० मेनेट हूं और फिर मुझे गाड़ी में बैठने को कहा। मैंने पूछा—मुझे किसे देखने चलना होगा? उन्होंने कहा कि नाम से क्या काम है। आपको तगड़ी फीस मिल जायगी। उन्होंने तुरन्त ही मझसे गाड़ी में सवार होने का अनुरोध किया। मैं करता भी क्या। उनके साथ ही जा बैठा।

समय यह वहां आ गया और मुझे शांत रहने के लिये कुछ सोने के सिक्के मेरे आगे डाल दिये। मैंने झपटकर उस पर वार किया बदले में उसने भी तलवार मारी। देखो डाक्टर, मुझे जरा सहारा देकर उठा दो ताकि मैं दुश्मन को सामने देख सकूं। मेरा मुंह उसकी ओर कर दो।

फिर उसने बड़े भाई की ओर देख कर कहा—मारक्विस, वह दिन आयेगा जब तुम्हें और तुम्हारे पापी घराने को इस अत्याचार का उत्तर देना होगा।

इसके बाद वह क्षरण भर तड़फड़ाया और प्राण छोड़ दिये।

मैं लौटकर उसकी बहन के पास आ गया। वह बुरी तरह चीख रही थी। मैं छब्बीस घंटे तक उस युवती के पास बैठा उपचार करता रहा लेकिन उसे बचा न सका। आखिर वह भी इस दुनियाँ से चल बसी।

मैंने अपनी फीस का कुछ भी नही लिया। वे लोग बहुत कुछ देना चाहते थे पर मै इनकार करके चला आया।

एक दिन एक सुन्दर महिला अपने बच्चे के साथ गाड़ी पर चढ़कर मेरे घर आई। उसने कहा कि वह 'मारक्विस एवरमांडी' की स्त्री है। अंतिम शब्द के उच्चारण के साथ मुझे एक 'ए' नामांकित रूमाल की याद हो आई जिससे

उस अभागी युवती के हाथ बंधे थे। यह महिला एक दयालु हृदय स्त्री थी और अपने पति के कारनामों को पसन्द न करती थी। वह चाहती थी कि युवती, उसके भाई और परिवार के ऊपर उसके पति ने जो अत्याचार किया है उसके लिए वह पश्चाताप करे, और उसकी जो छोटी बहन बच गई है उसकी सहायता करे। वह ईश्वरीय कोप से अपने परिवार की रक्षा के लिए कुछ भी त्याग करने की कामना रखती थी। इसी विषय में मेरी सहायता लेने और उस लड़की का नाम पता मालूम करने वह मेरे घर आई थी। मैं उसे कुछ न बता सका। आज तक मुझे उन अभागों का पता नहीं जिन्हें मृत्यु के समय मैंने देखा था।

उसी रात को करीब नौ बजे मैं अपनी स्त्री के साथ बैठा बातें कर रहा था कि किसी ने दरवाजा खटखटाया। मेरे घरेलू नौकर अर्नेस्ट डिफार्जे ने दरवाजा खोला और मुझसे कहा—आपके लिए गाड़ी खड़ी है।

मैं स्त्री को छोड़कर उठ बैठा और बाहर आकर गाड़ी में सवार हो गया। वह गाडी बजाय मरीज को दिखाने के मुझे वेस्टिल में ले आई और मैं कालकोठरी में डाल दिया गया। उस रात से मैं जीवित कब्र में पड़ा हूँ। मैं अभागा

बन्दी अलेक्जेण्डर मेनेट १७६७ की इस ठंडी रात में इस अंधेरी सीली कोठरी में पड़ा मौत की घड़ियां गिन रहा हूं। मुझ बेकसूर को इस नारकीय यंत्रणामय जीवन में डालने वाले उस पापी घराने के लिए मैं धरती और आकाश से हाथ जोड़कर याचना करता हूं कि उससे पूरा बदला लिया जाय। उसका एक भी वारिस बचने न पाये।

उक्त कागज पढ़ा जाने के बाद श्रीमती डिफार्जे डा. मेनेट की ओर मुड़कर बोली—अब बचा लेना उसे, डाक्टर। बचा सकोगे ? तुम्हारा तो काफी प्रभाव है न ?

दर्शकों की भीड में से आवाजें आने लगी—गिलोटिन पर चढ़ाओ। गिलोटिन पर चढ़ाओ। एवरमांडी जनतंत्र का शत्रु है।

न्यायाधीश—चुप रहो। डा. मेनेट ने जो कुछ लिखा उसे हम लोगों ने सुन लिया है। एवरमांडी, फ्रांस के नागरिक और उसकी जन-सरकार तुम्हें अपना दुश्मन करार देती है। तुम्हें चौबीस घंटे के भीतर मौत की सजा दी जाती है। संतरी, इसे ले जाओ।

वह चला गया

सिडनी कार्टन ने देखा कि लॉरी, डार्ने मेनेट, लूसी सब पेरिस गये हैं। उनके लौटने का कोई समाचार नहीं है। कहीं कुछ गडबड़ तो नही है। वह खुद भी फ्रांस-प्रवेश का पारपत्र लेकर रवाना हो गया और पेरिस आ पहुँचा। उसने अपना आगमन महाशय लॉरी को छोड़कर और किसी पर प्रकट नहीं किया। वह चाहता था कि वह परदे के पीछे रहकर ही अपने मित्रो की कुछ सहायता करे और समय पर ही उनके सामने प्रगट हो।

इसी बीच एक कलारी में उसकी भेंट बारसद से हो गई जो इस समय फ्रांस की जनता की सरकार का खुफिया था। उसे अपने पद के कारण जनता के जेलखानों में जाने की छूट थी।

सिडनी कार्टन ने उसे अपने काम का आदमी समझा। उसने उससे कहा कि वह उसकी मदद करे। बारसद ने इनकार किया तो कार्टन ने उसे यह कहकर डराया कि उसकी जिन्दगी कार्टन के हाथ में है।

बारसद ने पूछा—कैसे ?

कार्टन—फ्रांस की किसी अदालत के सामने इतना कहने की देर है कि बारसद इंगलिश गुप्तचर है, वह जनता की सरकार को धोखा दे रहा है, बस तुम्हारे लिए गिलोटिन तैयार है।

बारसद—यह क्या कहते हो भाई ? कोई सुन लेगा तो मेरी जान के लाले पड़ जायंगे। मैं तो यहां रहकर अपनी रोजी कमाता हूं।

कार्टन—मैं अच्छी तरह जानता हूँ। मुझसे अधिक मत कहलाओ।

बारसद—तो तुम क्या चाहते हो ?

कार्टन—अधिक कुछ नहीं। तुम जेल में चौकसी पर नियत हो।

बारसद—पागल हुए हो। वहां से कोई बचकर नही निकल सकता। यह असंभव है।

कार्टन—इसके लिए कौन कहता है ? मुझे तो मेरी बात का जवाब दो। तुम चौकसी पर हो ?

बारसद—हां कभी कभी होता हूँ।

कार्टन—जब चाहो जब हो सकते हो ?

बारसद—हां मैं अपनी इच्छा से भीतर जा सकता हूं और बाहर आ सकता हूं।

इसके बाद कार्टन ने बारसद को सारी बात समझा दी और उसे अपनी बात मानने को विवश कर लिया। दोनों में एक गुप्त समझौता हो गया।

इसके बाद कार्टन लॉरी महाशय से मिला और उनसे कहा—मेरा यह पारपत्र आप अपने पास रख लीजिये। आपके पास डा. मेनेट, लूसी और लूसी की बच्ची के भी पारपत्र हैं। उन्हीं के साथ इसे भी रख लीजिये। कल इनकी आवश्यकता पड़ेगी। बिना इनके पेरिस और फ्रांस से निकलना असंभव समझिये। कृपया इन्हें बहुत संभालकर और सावधानी से रखिये। साथ ही गाड़ी का भी प्रबंध रखिये। मेरे यहाँ पहुंचते ही सबको चल पड़ना है। डा. मेनेट की दशा फिर पहले जैसी हो गई है। लूसी का बुरा हाल है। वह वेहोश पड़ी है। आप ही इस समय इन सबकी नैया पार लगानेवाले हैं। मैंने प्रबंध कर लिया है। अंत समय उससे मुलाकात शायद हो जायगी।

लॉरी—कार्टन, आज तुम बहुत व्याकुल दिखाई पड़ रहे हो। खैर तो है, भाई ?

कार्टन—खैर नहीं है, महोदय। डार्ने की बात तो छोड़िये डा. मेनेट, लूसी और उसकी बच्ची सभी के लिए खतरा तैयार है। मैंने मालूम किया है श्रीमती डिफार्जे सबको गिलोटिन पर पहुँचाने का षड़यंत्र रच रही है। लेकिन मुझे निश्चय है कि आप इन्हें बचाकर ले जा सकेंगे।

लॉरी—परमात्मा दया करे। तुम्हारी वाणी सत्य हो कार्टन। लेकिन यह सब किस तरह होगा ? मेरे तो हाथ-पांव फूल रहे हैं।

कार्टन—मैंने बताया न कि आप कल सवेरे ही सारा प्रबन्ध रखिये। आप जितनी जल्दी समुद्र के किनारे पहुंच सकें उतना ही बेहतर होगा। बस यह समझ लीजिए कि मेरे पहुंचने पर सब लोग गाड़ी में बैठे तैयार मिलें। फिर यहां एक क्षण की भी देर न हो।

लॉरी—ऐसा ही होगा।

कार्टन—तो मैं चला। अपना काम मैं पूरी वफादारी से करूंगा। बस, विदा।

लॉरी—विदा।

तुमने कहा था

डार्ने आज रात भर जाग कर पत्र लिखता रहा, लूसी को, डा. मेनेट को, महाशय लॉरी को। उन पत्रों में उसने अपने जीवन की सारी करुणा ढाल दी। सबसे अपने अपराधों के लिए क्षमा मांगी। विशेषकर डा. मेनेट से, जिन्हें उसके बाप और चाचा ने अपार कष्ट पहुँचाया था और इस दयनीय दशा को प्राप्त करा दिया था।

उससे कह दिया गया था कि तीन बजे उसका अंतिम समय है। उसने अपना ध्यान दो के घंटे पर लगा रखा था ताकि एक घंटे में वह मौत से मिलने के लिये साहस बटोर सके।

जब वह अपने कमरे में टहल रहा था तो एक बजा। दो घंटे और हैं—उसने कहा और परमात्मा की याद कर शक्ति प्राप्त करने का यत्न करने लगा।

इसी समय बाहर बरामदे में पैरों की चाप सुनाई दी। वह ठहर गया और सुनने लगा। ताले में चाबी पड़ी और ताला खुलने की आवाज हुई। द्वार धीरे से खुला और बंद हो

गया। डार्ने अपने सामने एक आकृति को देखकर चौंक पड़ा। सिडनी कार्टन उसके सामने खड़ा था। वह कुछ कहना ही चाहता था कि ओठों के आगे उंगली खड़ी करके कार्टन ने उसे रोक दिया और धीरे से बोला—तुम्हें आश्चर्य हो रहा है, भाई डार्ने !

डार्ने—हां, सचमुच तुम कार्टन हो क्या ? तुम यहां कैसे ? क्या तुम भी बंदी बनाकर लाये गये हो ?

कार्टन—नहीं। परन्तु मैं आगया हूँ जिसके आने की तुम्हें कभी आशा न हो सकती थी।

डार्ने—मुझे तो अब भी विश्वास नहीं होता। मुझे लगता है कि मैं सपना देख रहा हूं।

कार्टन—नहीं ऐसा कुछ नहीं है। भाग्यवश मेरे हाथ में ऐसी शक्ति आ गई है कि बेरोकटोक मैं यहां तक पहुँच सका हूं। मैं तुम्हारी स्त्री की तरफ से आया हूं। उसने तुम्हारे लिए एक संदेश भेजा है।

डार्ने—क्या ?

कार्टन—इतना समय नहीं है कि तुम सारी बातें पूछो। बस, अपने बूट जो पहने हो तुरन्त उतार दो और ये मेरे पहन लो। चलो, जल्दी करो।

डार्ने—कैसी पागलों जैसी बातें करते हो कार्टन। क्या तुम नही जानते कि यहां से निकल भागना संभव नहीं। मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम अपने प्राणों को संकट में न डालो। जिस तरह आये हो चुपचाप खिसक जाओ।

कार्टन—मैने तुम्हें भागने को कब कहा है ? तुम अपना कोट मेरे कोट से बदल लो। अपने बाल मेरे जैसे बिखेर लो। फीता जो तुम लपेटे हो मुझे दे दो।

डार्ने—भाई कार्टन, यह गलत है। यह नहीं हो सकता। असंभव, एक दम असंभव जो बात है उसके लिए हठ मत करो। लोगों ने इस तरह की नादानी की पर यहां वह कभी सफल नही हुई। तुम मेरे साथ अपनी भी मौत मत बुलाओ।

कार्टन—मै कब कहता हूँ कि तुम इस दरवाजे से बाहर पैर रखो। जब मै ऐसा कहूँ तो इन्कार कर देना। यहां कलम, दवात और कागज है। क्या तुम्हारा हाथ इस काबिल है कि कुछ लिख सको। अच्छा लो पहले यह थोड़ी सी शराब पी लो। मै बड़े यत्न से छिपाकर तुम्हारे लिये आया हूँ।

डार्ने—धन्यवाद। लाओ भाई तुम्हारे हाथ का आखिरी प्याला पी लूं। इस जीवन में फिर मौका न मिलेगा। अच्छा, क्या लिखना है ? बोलो मैं लिख सकूंगा !

कार्टन ने बोतल डार्ने को पकड़ा दी। वह शराब पीकर बोला—बताओ क्या लिखूं? किसे संबोधन करूं?

कार्टन—किसी को नहीं। बस लिखना शुरू कर दो।

डार्ने—तारीख लगाऊं?

कार्टन—नहीं सिर्फ लिखो—'बहुत दिन पहले की बात है तुमने कहा था, शायद तुम्हें भूला न होगा, शायद भूल गया हो आज वह अवसर आ गया है।...'

डार्ने—ओह यह क्या, मेरा सिर चकराने लगा है।

कार्टन—क्या?

डार्ने—मेरा सिर, मैं लिख नहीं सकता। मैं तो बेहोश सा हो रहा हूं।

कार्टन ने देखा डार्ने कुर्सी पर बैठा बैठा अचेत हो गया। उसने तत्काल उसके बूट खोलकर खुद पहन लिए, अपने उसके पैरों में डाल दिए। कोट बदल लिये। उसके बालों से फीता लेकर अपने बाल बांध लिए। उसके बिखरा दिये। एक दो मिनट में ही उसने यह सब कर डाला, और फिर आवाज दी—बारसद, आजाओ। होगया।

बारसद भीतर आया। कार्टन बोला—कुछ खतरा तो नहीं है?

बारसद—बिल्कुल नहीं यदि तुम अपनी बात पर स्थिर रहे तो।

कार्टन—मेरी तरफ से बेफिक्र रहो। मैं मृत्यु तक मुंह न खोलूंगा।

बारसद—आज गिलोटिन की बावनवीं संख्या पूरी होने तक तुम चुप रह गये तो फिर कोई डर न रहेगा।

कार्टन—तुम निश्चित रहो। मै बहुत जल्दी ही तुम्हें हानि पहुँचाने की स्थिति से दूर चला जाऊगा।

बारसद—उस समय मैं परमात्मा का धन्यवाद करूंगा।

कार्टन—अपने आदमियों को बुला लो। वे मुझे गाड़ी तक पहुँचा दें।

बारसद—तुम्हे ?

कार्टन—उसे जिसके साथ मैंने कपड़े बदल लिये हैं। अब मै एवरमांडी हूं। मेरा मित्र कार्टन मुझसे मिलने आया था। वह पहले से ही अस्वस्थ था। मृत्यु के लिए जानेवाले अपने अभागे मित्र से मिलकर वह और भी अस्वस्थ हो गया। उसे तुम अपने आदमियों की मदद से ले जाकर गाड़ी पर चढ़ा दो। यही नहीं उसे लॉरी महाशय के निवासस्थान तक पहुँचा दो। वहां गाड़ी तैयार खड़ी होगी। उसके भीतर

उसे लिटा देना और कह देना कि वे तुरंत रवाना हो जायं। एक क्षण की देर न करें और न उसे सीमांत पार होने तक होश में लाने की चेष्टा करें।

बारसद—किन्तु तुम मुझे धोखा मत देना। मैं तुम्हारी बात पर विश्वास करता हूँ कार्टन !

कार्टन—नहीं नहीं, भाई ! कह दिया न मैंने। इससे अधिक और क्या चाहते हो ?

बारसद ने गारद को बुलाया। उनमें से एक ने देखकर पूछा—क्या होगया ? शायद दोस्त की मृत्यु के आघात ने ऐसा कर दिया है। कमजोर दिल के आदमी को यहां से दूर ही रहना चाहिए।

बारसद—और क्या, यहां तो पत्थर का कलेजा रखने-वालों को ही यहां आना चाहिए। खैर, उठाकर ले चलो और गाड़ी पर चढ़ा दो। गाड़ी बाहर खड़ी है। देखो नागरिक, एवरमांडी ! तुम्हारा समय निकट आ रहा है। अभी अभी यहां तुम्हारे कमरे में सारे कैदी इकट्ठे होंगे। सब एक साथ ही चलेंगे। तुम तो तैयार हो न ?

कार्टन—मैं तैयार हूं आप मेरी ओर से निश्चित रहें।

बारसद इतना कहकर निकल गया। उसे डार्ने को

महाशय लॉरी के निवास-स्थान पर पहुंचाना था।

इधर डार्ने की कोठरी के आगे कैदी एक एक कर इकट्ठे होने लगे। एक भोली कम उम्र की कोमल सी लड़की आई और एवरमांडी को आवाज दी—क्या मुझे भूल गये, साथी एवरमांडी ? मैं तुम्हारे साथ थी जब तुम पहले यहां थे।

कार्टन—हां हां, लेकिन तुम्हारे ऊपर कौन-सा आरोप है ? मैं तो भूल ही गया था।

लड़की—षड्यंत्र। वे कहते हैं मैं षड्यंत्र करती थी। क्यों करती थी, क्या करती थी, किसके साथ मिलकर करती थी, मैं नहीं जानती। न मैं जान सकूंगी। आप ही बताइये मैं कमजोर और डरपोक लड़की क्या षड्यंत्र कर सकती हूँ ? मैं मृत्यु के डर से ऐसा नहीं कह रही हूँ नागरिक एवरमांडी !

कार्टन—तुम्हारे जैसे पवित्र बलिदान के बाद ही यह हत्याकांड रुक सकेगा। ऐसा मेरा मन कहता है।

लड़की—मैंने सुना था तुम छूट गये हो, एवरमांडी। मैं चाहती थी वह बात सच होती।

कार्टन—सच ही थी। मुझे तो दुबारा गिरफ्तार किया गया।

लड़की—अगर मैं तुम्हारे साथ ही गिलोटिन पर चढ़ूं

तो तुम मुझे अपना हाथ पकड़ने दोगे, साथी एवरमांडी? मैं डरती नहीं हूँ पर वैसा होने से मुझे थोड़ा बल मिल जायगा।

कार्टन—हां हां, अभागी बहिन, बड़ी खुशी से तुम मेरे हाथ का सहारा लेना।

लड़की—तो जरा सीकचे के पास आजाओ। मैं तुम्हारा मुंह लेप के प्रकाश में देख सकूं, साथी एवरमांडी! तुम्हारी इस कृपा को मैं अपने साथ ले जा सकूंगी।

कार्टन कोठरी के अंधेरे में से खिसक कर ऐसी जगह आ खड़ा हुआ जहां उसके चेहरे पर दीपक का प्रकाश पड़ रहा था। लड़की ने उसके चेहरे पर दृष्टि डाली और धीरे धीरे फुसफुसाई—तुम तो एवरमांडी नही हो। तुम कौन हो? क्या तुम उसके बदले में अपने प्राण देने आये हो?

कार्टन—नही, उसकी स्त्री और बच्ची की खातिर मैं आया हूँ लेकिन चुप रहो।

लड़की—मेरे अपरिचित बहादुर साथी! तो तुम मुझे अपना हाथ पकड़ने दोगे?

कार्टन—चुप चुप, हां बहिन पकड़ने दूंगा। अंत तक हम हाथ में हाथ डाले रहेंगे।

गारद की चौकी पर

जेल में जिस तरह दुख की काली घटा उमड़ रही थी उसी तरह पेरिस के द्वार पर लोगो का भाग्याकाश मेघाच्छन्न था। दिन के तीसरे पहर के लगभग एक गाड़ी बड़ी तेज़ी से दौड़ती, गलियों और सड़कों को पार करती हुई पेरिस के द्वार पर पहुँची। इन द्वारो पर आज-कल भीड़ लगी रहती थी। आने जानेवाली गाड़ियों की तलाशी होती। व्यक्तियों का हुलिया देखा जाता। बड़ी सख्ती से पड़ताल की जाती तब कहीं जान बचती। जरा से संदेह पर पकड़कर हिरासत में ले लिया जाता और मौत की सजा तैयार रहती।

ऊपर बताई हुई गाड़ी ज्यों ही फाटक पर पहुंची कि गारद के संतरी ने आवाज दी—कौन जा रहा है? ठहरो। भीतर कौन कौन है? अपने पारपत्र दिखाओ।

गाड़ी में से पारपत्र और आवश्यक कागजात दे दिये गये। अधिकारियो ने बारीकी से उनकी जांच की। इसके बाद गारद के अफसर ने एक कागज लेकर उच्च स्वर से पढ़ा—अलेक्जेण्डर मेनेट, डाक्टर। फ्रांसीसी, कौन है वह?

आज गिलोटिन के नीचे कितने आदमी जायेंगे ?"

लॉरी—बावन ।

गारद—बावन । वाह, क्या खूब । मेरे साथी गारद तो बयालीस ही समझ रहे थे । दस और होना तो अच्छा ही है। मुझे तुम्हारे संवाद पर गर्व है नागरिक । अच्छा अब जाओ। गाड़ी हांको, कोचवान ।"

गाड़ी गड़गड़ाकर चल पड़ी । गाड़ी में बैठे लोगों ने संतोष की सांस ली। आकाश में उमड़ती हुई घटाएँ छंटने लगीं।

पेरिस की गलियों में

मौत की गाड़ियां पेरिस की गलियों में खड़खड़ाती फिर रही थीं । वे भिन्न भिन्न जेलों से मृत्युदंड पाये हुए अभागे कैदियों को भर भरकर लाती और गिलोटिन पर पहुँचाती थीं । लोगों की भीड़ गाड़ियों को घेर कर शोर मचाती और कैदियों को गालियां देती थी । एक गिरजे की सीढ़ियों पर जेल का गुप्तचर बारसद बड़ी देर से खड़ा गाड़ियों को देख रहा था । उसके आगे से पहली गाड़ी निकली । उसने देखा
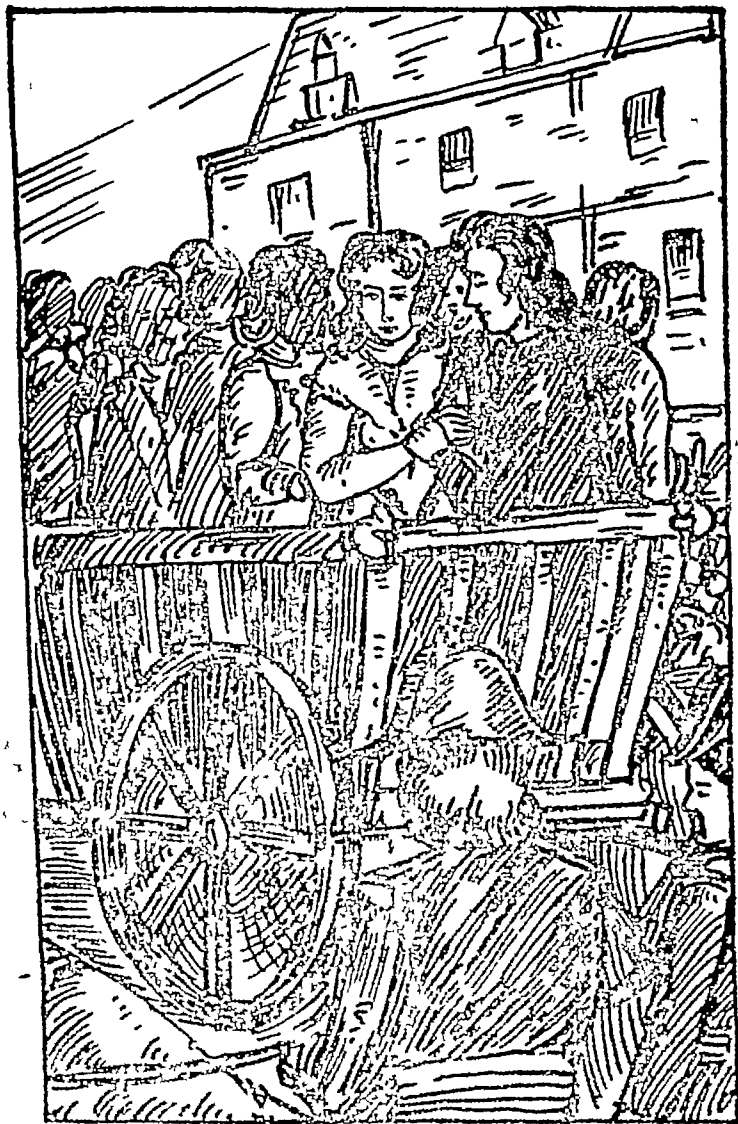
मृत्युदंड प्राप्त अभागे बंदी

कार्टन उसमें नहीं है। कुछ देर बाद दूसरी गाड़ी निकली। उसने देखा उसमें भी नहीं है। वह घबडा गया। तो क्या उसने धोखा दिया? तो क्या उसने मुझे बरबाद कर डाला? क्या उसने सब कुछ प्रगट कर दिया? ओह ईश्वर! मैंने क्यों उस पर भरोसा किया? वह व्याकुल होकर पागल की भांति खड़ा था कि तीसरी गाड़ी आई। कार्टन गाड़ी पर सामने ही खड़ा था, शांत और स्थिर। उसे देखते ही बारसद का चेहरा चमक उठा। गाड़ी उसके सामने से धचकती हुई निकल गई।

जिस चौक में गिलोटिन लगा था, वहां गाड़ियो ने लाकर अभागे बंदियों को उतार दिया। मृत्युदंड देखने के लिए उस विशाल चौक में लोगो की भीड़ लगी थी। ऐसा लगता था जैसे पेरिस के नागरिक स्वतंत्रता का कोई उत्सव मना रहे हों और सारा फ्रांस उसमें भाग लेने के लिए उमड़ पड़ा हो। तीसरी गाड़ी के खाली होते ही भीड़ में से शोर होने लगा, एवरमांडी कहां है? एवरमांडी कहां है? उसे अभी तक नहीं लाया गया? डिफार्जे ने, जो ऊपर सीढ़ियों पर खड़ा था, हाथ उठाकर इशारे से बताया—वह रहा एवरमांडी, जनता का शत्रु। वह पीछे खड़ा है। वह जो उस लडकी का हाथ पकड़े हुए है। भीड़ में से आवाज आई—एवरमांडी मुर्दाबाद।

एवरमांडी मुर्दाबाद। चढ़ाओ उसे गिलोटिन पर। सरदारों का नाश हो। सामंतों का नाश हो। जनता के दुश्मन कुलीनों का नाश हो।

कार्टन उस लड़की के साथ गाड़ी से उतरकर खड़ा था। उस पर इन आवाजों का कोई असर नही हो रहा था। सामने फ्रांस की जन-सेना के सैनिकों, नागरिकों और कारीगरों के सम्मिलित प्रयत्न से जिस भीमकाय गिलोटिन का निर्माण हुआ था, वह बराबर अपना काम कर रही थी। एक ओर से अभागे वंदी सीढ़ियों पर चढकर अपना सिर झुकाते और पहिया घूमने के साथ ही एक भारी छुरा घरघराता हुआ ऊपर से आकर उनकी गर्दन पर पड़ता। वंदी का सिर कटकर एक ओर जा पड़ता और धड़ नीचे लुढ़क जाता। रक्त का परनाला वहकर नीचे नालो मे चला जाता। पास खड़ी हुई स्त्री आवाज देकर सिरों की गिनती करती जाती। नीचे वैठा कर्मचारी उस संख्या को लिखता जाता।

कार्टन ने बारी आने पर उस लड़की को उठाकर मंच पर विठा दिया और कहा—वहिन, घबडाती तो नही हो ?

लड़की—नही। तुम्हें सामने देखने से मुझे बिल्कुल

इंगलैंड पहुँच गये होंगे। जहां अब वह कभी नहीं पहुँच सकेगा। उसने देखा, सामने लूसी बच्ची को गोद में लिए प्यार कर रही है। उसने देखा, लूसी के वृद्ध विक्षिप्त पिता फिर स्वस्थ हो गये हैं। उसने देखा, महाशय लॉरी उन लोगों का उद्धार कर अपना जीवन सफल समझ रहे हैं। उसने देखा, डार्ने अपनी स्त्री और बच्ची के साथ बैठा उसकी ही याद कर रहा है और उसके त्याग के लिए आंसू बहा रहा है। उसने देखा, लूसी की बच्ची सयानी हो गई है। उसका विवाह हो गया है और वह अपने पति एवं नवजात शिशु को लेकर पेरिस आई है और जहां गिलोटिन के नीचे उसका सिर काटा गया है, उस जगह पर आकर माथा पृथ्वी पर टेक रही और अपने शिशु को मेरे त्याग की कहानी सुना रही तथा आंखों से आंसू गिरा रही है।

उसने सोचा, मेरे जीवन का यह सबसे सुन्दर, पवित्र कार्य है। उसने सोचा, मेरी आत्मा के लिए यह सबसे सुन्दर और पवित्र शांति है।

गिलोटिन का चक्का घूमा और एवरमांडी के स्थान पर स्वप्नाविष्ट कार्टन का सिर खट-से दूर जा पड़ा। भीड़ ने हर्षध्वनि की—एवरमांडी मुर्दाबाद। कुलीनता का नाश हो। स्वतंत्रता, समता, एकता चिरजीवी हों।